समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक प्रयास

अनुप्रास

www.anupras.com

वर्ष : 1, अंक : 1, दिसम्बर 2019

आलेख

छहर टूटतै, छहर महर हेतै

मिथिलाक उपासनामे लौकिक विधान

मिथिला संस्कृतिमे परिवर्तनक रूप

एलिट मिथिला : डिलिट मैथिली

साक्षात्कार

कहलनि समाजसेवी इन्द्र नारायण झा

कथा

प्रेमक ओर ने छोर

सपनामे अनुजा

कविता

एहि बेरुक बरखामे

हमरा गामक लोक

दलान

राम कथामे

प्रवेशांक

₹20

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक प्रयास

अनुप्रास, वर्ष : 1 अंक-1, दिसम्बर-2019, मूल्य-20 रु.

संरक्षक
इन्द्र नारायण झा

सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. तारानन्द वियोगी
धीरेन्द्र प्रेमर्षि
डॉ. कमल मोहन चुन्नू
ऋषि बशिष्ठ

प्रबन्ध सम्पादक
अजीत कुमार झा
9708705079
श्रीमती किरण झा

सम्पादक
दीप नारायण विद्यार्थी
9430583847

सहायक सम्पादक
फूलकान्त ठाकुर
नीतेश कुमार पासवान
अमित भारद्वाज
आलोक कुमार नवीन
रोशन कुमार झा
अवधेश कुमार ठाकुर

तकनीकी सहयोग
शेष नारायण
ले-आउट
अमलेश कुमार

सम्पादकीय कार्यालय
इन्द्र परिसर, लहेरियागंज
मधुबनी (बिहार) 847211
8862977228
ईमेल : anuprasmadhubani@gmail.com

Δ पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्बन्धित लेखक उत्तरदायी छथि। कानूनी मामिला लेल न्याय-क्षेत्र मधुबनी रहत।

Δ अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक दीप नारायण विद्यार्थी द्वारा आर.के ऑफसेट प्रोसेस, शाहदरा, नव दिल्लीसँ मुद्रित।

*सभ पद अवैतनिक

सम्पादकीय
02 : शिक्षाक क्षेत्रमे मातृभाषाक विशिष्ट भूमिका
आलेख
03 : संस्कृति-विमर्श : उषा किरण खान
05 : नारायणजीक पृष्ठभूमि आ काव्य-विकास : डॉ. तारानंद वियोगी
07 : एलिट मिथिला : डिलिट मैथिली : डॉ. कमल मोहन चुन्नू
10 : दलित वर्गक पावनि : सियाराम झा 'सरस'
14 : मिथिलाक संस्कृतिमे परिवर्तनक रूप : मिथिलेश कुमार झा
19 : मिथिलाक उपासनामे लौकिक विधान : डॉ. महेन्द्र नारायण राम
21 : आधुनिक सन्दर्भ मे 'रामेश्वर'क महत्त्व : डॉ.सुरेश पासवान
23 : छहर टूटतै, छहर-महर हेतै : सच्चिदानन्द 'सच्चू'
कथा
25 : फेसबुक फ्रेंड/भगवती : प्रदीप बिहारी
26 : प्रेमक ओर ने छोर : श्याम दरिहरे
32 : बलिप्रदान : अंजली कुमारी
33 : बाबूजी : सुजीत कुमार झा
38 : चैम्पियन : सोनू कुमार झा
40 : समय/साफ : डॉ अनमोल झा
बाल कथा
47 : सपनामे अनुजा : डॉ. नारायण जी
कविता
04 : दमन कुमार झा
09 : बुद्धिनाथ मिश्र
13 : अमित भारद्वाज
37 : बिभा कुमारी
41 : गोपाल झा 'अभिषेक'/मुन्नी कामत
42 : डॉ. शेफालिका वर्मा/सागर
43 : मैथिल प्रशान्त/मनोज कामत
44 : रोशन जनकपुरी/रेमिशा
45 : मेनका मल्लिक
46 : दिलीप कुमार झा/बालमुकुंद
बाल कविता
49 : नारायण झा/अक्षय आनन्द सन्नी/अमित मिश्र
गजल
06 : अरविन्द ठाकुर
20 : विद्यानन्द बेदर्दीक/मैथिल सुमन 'हृदय'
37 : धीरेन्द्र प्रेमर्षि
45 : सदरे आलम 'गौहर'/गुंजनश्री
साक्षात्कार
50 : कहलनि समाजसेवी इन्द्र नारायण झा : दीप नारायण विद्यार्थी

शिक्षाक क्षेत्रमे मातृभाषाक विशिष्ट भूमिका

जाहि समाज आ देशक साहित्य जतेक समृद्ध रहैत छैक ओ समाज अथवा ओ देश ततेक सुखी-सम्पन्न आ विकसित रहैत अछि। मैथिली साहित्यक अपन एकटा समृद्ध इतिहास रहल अछि। भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे हमरा लोकनिक भाषाकेँ जग्गह भेटल त' अछि मुदा, प्राथमिक शिक्षामे एखन धरि स्थान नहि भेटलैक। मैथिलीक प्रति सरकारक ई उदासीन रबैया मिथिलाक समग्र विकासकेँ प्रभावित कयने अछि। विश्वक अधिकांश देशमे अपन मातृभाषाकेँ प्राथमिक शिक्षामे लागू कयल गेल अछि। शिक्षाक क्षेत्रमे मातृभाषा एकटा विशिष्ट भूमिकाक निर्वहन करैत अछि। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद हमरा लोकनि ने त' अपन शिक्षा पद्धति पर गम्भीर भेलहुँ अछि आ ने शिक्षाक माध्यमे पर। आइ हमरा लोकनि अपन बच्चा सभकेँ विदेशी शिक्षा दिस धकेलि रहल छी। जखन की हमरा सभकेँ ई बूझल अछि जे मैथिलीमे शिक्षा ग्रहण क' सुयोग्य शिक्षार्थी लोकनि अपन सपनाकेँ सकार क' सकैत छथि अथवा हमरा लोकनिक कर्तव्य अछि जे ई हुनका बुझबियनि जे ओ आब अपन भाषाकेँ पढ़िक' रोजगार प्राप्त क' सकैत छथि। देशक सर्वोच्च प्रतियोगिता परीक्षा संघ लोकसेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग आदिक तैयारी क' सफलता हासिल कयल जा सकैत अछि। गाम-समाज आ देशक नाँ रोशन कयल जा सकैत अछि।

अपने लोकनिक हाथमे अनुप्रासक ई पहिल अंक अछि। मैथिलीमे कए गोट पत्रिका नियमित रूपसँ बहार भ' रहल अछि। किछु ठमकि सन सेहो गेल अछि, ओना एहि ठमकैक कारण सेहो हमरा सभक अपन भाषाक प्रति उदासीनता अछि। एखन मधुबनीक साहित्यिक परिवेशमे बहुत रास हलचल अछि, मुदा कि हमरा लोकनिक संगोष्ठी सभमे कनिको परिवर्तन लाबि सकैत अछि? लोकनि स्वयं सोचू...!

" स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद हमरा लोकनि ने त' अपन शिक्षा पद्धति पर गम्भीर भेलहुँ अछि आ ने शिक्षाक माध्यमे पर। आइ हमरा लोकनि अपन बच्चा सभकेँ विदेशी शिक्षा दिस धकेलि रहल छी। जखन की हमरा सभकेँ ई बूझल अछि जे मैथिलीमे शिक्षा ग्रहण क' सुयोग्य शिक्षार्थी लोकनि अपन सपनाकेँ सकार क' सकैत छथि। "

खैर, जे-से, हम किछु सालसँ मैथिली बुझायल जे साहित्यक संग-संग छात्रोपयोगी हम पहिनहि कहने छी जे एखन देशक सर्वोच्च अछि त' किछु एहन तरहक सामग्री मैथिलीक भेटनि। एहु अंकमे किछु एहन सनक सामग्री सभ पहिल अंक अछि आ समयाभावक कारणे त्रुटि अंक सभ साहित्यक संग-संग छात्रोपयोगी बनि समाजक खगतामे ई 'गोधियाँ-मिलान' साहित्यिक हमरा किछु नहि कहबाक अछि... जवाब अहाँ साहित्यमे अपन उपस्थितिक संग छी। हमरा एकगोट पत्रिका मधुबनीसँ बहार करी, जेना कि प्रतियोगिता परीक्षामे मैथिलीक सम्भावना बढ़ल शिक्षार्थी लोकनिक सोझाँ प्रस्तुत करी जाहिसँ मदति शामिल कयल गेल अछि। ओना, ई अनुप्रासक सम्भव अछि। हमर पूरा प्रयास रहत जे आगुक अपने सभक हाथमे आबय।

एहि अंकमे वरिष्ठ रचनाकारक संग-संग किछु नव रचनाकार लोकनिकेँ स्थान सेहो देल गेल अछि। ज्ञानवर्द्धक आलेख, कथा-कविता, गीत-गजलक संग-संग नेना-भुटका सभक लेक अलगसँ जग्गह बेरा देल गेल अछि। आगुक अंकसँ हम किछु भारतीय भाषासँ मैथिली अनुवाद सेहो शामिल करबाक प्रयास करब।

मैथिलीमे पत्रिका बहार करब कबीर साहेबक एहि दोहाकेँ चरितार्थ करैत अछि...

'मैं मेरा घर जालिया, लिया पलीता हाथ।
जो घर जारो अपना, चलो हमारे साथ।।'

मुदा, एतय एक सुहृद मैथिली भाषानुरागी श्री अजीत कुमार झा, अपन पिता श्री इन्द्र नारायण झा (जिनका नाम पर 31 दिसम्बर 2018केँ सार्वजनिक रूपेँ हमर प्रस्तावकेँ सहकारि कॉलोनीक नाम 'इन्द्र परिसर' राखल गेल।) हुनकहि संरक्षणमे स्वयं सपत्नीक प्रबन्ध-सम्पादकक भार उघि एहि पत्रिकाकेँ बहार करबाक सहमति प्रदान केलनि अछि।

नव वर्षक हार्दिक मंगलमय शुभकामनाक संग...

संस्कृति-विमर्श

उषा किरण खान

मैथिली आ हिन्दीक प्रख्यात लेखिका छथि पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान। हिनक दू दर्जनसँ बेसी पोथी प्रकाशित आ चर्चित छनि। प्रसिद्ध उपन्यास 'भामती' पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ 'सिरजनहार' पर कुसुमांजली पुरस्कार प्राप्त छनि। वर्ष 2015मे भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मानसँ सम्मानित उषा किरण खान जीकेँ हालहिमे भारत-भारती पुरस्कारसँ सेहो पुरस्कृत भेलीह अछि।

सम्पर्क : 8987041722

संस्कृति सतत् प्रवहमान वस्तु थिक। स्थूल कार्य ...जीबाक आवश्यक शर्त्त छैक तकरा अतिरिक्त सभ किछु संस्कृतिक विषय थिक। ...व्यवहार, जीवन पद्धति, गीत-संगीत निर्माणक आवश्यकता आ तरीका। समाजक तानी-भरनी संस्कृतिसँ संचालित छैक। लोक आवश्यकतानुसार जे घर छप्पर बनबैत अछि ताहूमे संस्कृति झलकैत छैक। जोरगर धान उपजला पर धनकटनी करए लए जे जन अबैत छलाह ओ एतय रहय वास्ते गृह-निर्माण करथि। रौद-ओस, शीत-बसातसँ तँ अपनाकेँ, नवजात नेना लोकनिकेँ बचबै लए छाजन चाहबे करियै। ताहि लए एकटा लम्बा चार बनबै, ओकरा मोड़िकेँ गुफानुमा ठाढ़ क' लैत रहै— ओहीमे चूल्हि, लोहिया इत्यादि रहै। मोटरी-चोटरी टाँगबाक प्रबन्ध रहै। सीक सेहो रहै। नीचामे नारक ओछाओन रहै। की ई गुफाक विस्तार नहि रहै। तखन एकचारी, दूचारी, चारि चारी, भीत ईंटा ओ खपड़ाक घर। क्रमशः विस्तार, जोथिक डिजायन, डच आ ईरानी आ पारसी... क्रमशः अबैत-अबैत अमेरिकन घर बनय लागल। संस्कृति अहिना नदी जकाँ बहैत छै। तहिना विभिन्न संस्कृति यदि अहाँमे किछु जोड़ैत अछि त' अशुद्ध सेहो करिते अछि।

भाषा संस्कृतिक अहम भाषा छै। वाक्क विस्तारसँ सम्पूर्ण विश्वमे भाषा आविष्कृत भेलै। अपना-अपना क्षेत्रमे अपन अलग-अलग भाषा। खेती करय लागल छल, घर बनबय लागल छल। भाषा तहिना आइ नहि बाजल जाइत छैक। जेना अपन मैथिली जे मात्र सात सय वर्ष पहिने कविश्रेष्ठ विद्यापतिक समयमे छल से आइ छैक? किएक? विद्यापति स्वयं अवहट्ठ अपभ्रंशसँ होइत मैथिलीमे लिखय लागलाह। ई संस्कृतिक समुच्चय थिक। संस्कृत संगे कतेको स्थानीय भाषाक संग मैथिली बनल आइयो इएह होइए। ई सभ भाषामे सर्वाधिक चलैत रहै छै।

वस्त्रजात जहिया बनय लागलै आ लोक धारण कयलक तहियासँ कतेक बाहरी प्रभाव पड़लै। ओना वस्त्रक आवश्यकता भौगोलिक कारणसँ होइत छै। गरम स्थानक लोककेँ देह झाँपक जरूरति नहि छलै। गरम स्थानक लोककेँ देह झाँपक जरूरति नहि छलैक। तेँ एकवस्त्र होइत रहथि। अनेक प्रभावसँ स्त्रीकेँ अवगुंठन प्रचलित तेहन भेलै जे प्रायः लोकधारामे रूढ़ भ' गेल अछि।

संस्कार संस्कृतिक शीर्षक अछि। जे पूर्ण विकसित प्राणी एक बेर सोलह संस्कारक स्थापना कएलक जन्मसँ ल' मृत्यु धरिक संस्कार। जे सोलह संस्कारक ध्वंसावशेष आइयो पूर्णित अछि। मिथिलामे अधिकतर वेदक अनुसार लोक चलैत छैक। द्वि जेना जातिकेँ कोनो प्रकारक बंधन नहि छलैक।

संग रहयबला द्विजेतर देखादेखी सभक पालन करैत गेल। राजा आ प्रजाकेँ फराक-फराक धर्म भेलाक कारणे त्वंचाहंच होइत रहल, मुदा मिथिलाक लोक ग्रंथ भाषा संस्कृति बचाक' रखबामे सक्षम रहल। आयातीत संस्कृतिसँ आ कहाँ बाँचल? आब एखन दुनिया अहाँ दुआरि पर बैसल अछि। कतेक निर्लिप्त रहल जा सकैत छैक? ततबे

ने जतबा अपन काम करा सकैत छी? शेष आयात करिते छी। स्त्रीगण संस्कृतिकेँ पैघ सम्वाहक छी। नैहरसँ सासुर ओ अपन मान्यता, आ भाषा संस्कार, अपन गुण-दोष आ अपन बुद्धि लैत जाइत छथि। अहिना तँ प्रसार होइत अछि, इएह तँ जीवनक स्वाभाविक सतत प्रवाह छै! जेना कि अन्न, फल इत्यादिक बीया सैचन...पर खसाकेँ नवजीवनकेँ जन्म दैत प्रचार-प्रसार करय, संग रहयबला द्विजेतर जातिकेँ कोनो प्रकारक बंधन नहि छलै।

संस्कृतिकेँ सदति अपसंस्कृति कहि नकारब अभीष्ट नहि! हमरा बुझने संतुलन आवश्यक। संवेदनक हनन नहि होअए, नव वातावरणक स्वागत करी तखन ओ सभ्यतामे मिश्रित भ' जाएत।

स्त्री पर दायित्व पैघ रहैत छैक तेँ ओकरा सक्षम बनायब आवश्यक। प्रकृति त' ओकरा सक्षम बनेने छैक तेँ ओकरा सक्षम बनेने छैक तेँ जखन सत्ता सुभिस्ता हाथसँ निकलि गेलै तखन स्त्रीगण अपना लूड़ि-भाससँ, अपना धैर्यसँ जोगाक' राखलनि। जौँ दर्जा बराबरीक देल जाए तँ ओ नाम झिझिरकोना नहि खेलेती, सबल सुच्चा संस्कृतिक स्थापना होयत। जकर आवश्यकता अहाँक पएर नहि पाछाँ घीचब अग्रगामी होइक! ताहि परिवर्त्तनसँ विचलित बिनु भेने डेग आगाँ बढ़ायब उचित।

•

नहि जानि कहिया

दमन कुमार झा

हमरा मन अछि
जहिया अहाँकेँ देखने रही
कतेक छोट रही

पैघ भेला पर
जहिया
अहाँमे पहिल बेर
फूलक कोंढ़ी देखने रही
खूब प्रफुल्लित भेल रही
नवयौवनक
दर्शन पाबि
अतिशय रोमांचित भेल रही
अहाँक सौरभ पसर' लागल छल
भ्रमराक झुण्ड
चारू भ'र लुधक' लागल छल
छुबाक बात तँ दूर
लोकक तकबो पर
लगा देने रही हम रोक।

पुष्ट देह आ लाल टरेस छवि
जहिया अझक्क देखने रही
सत्ते कहै छी
हमर मुँह
खुजले रहि गेल छल
नजरि तकिते रहि गेल छल।

मन भेल छल
जे सम्पूर्ण शरीरक शक्ति
पाँचो आँगुरमे आनि ली
आ अहाँकेँ
अपन चाँगुरमे दबा ली
मुदा नहि
हम
अपना पर संयम क' लेने रही
किछु दिन आर मनकेँ मारि लेने रही
ई बुझबाक छल
जे ठीके
प्रतीक्षाक फल मीठ होइत छै?

ठीके कहलहुँ
आब लोककेँ एतेक धैर्य कहाँ छै
जँ अहाँ
हमरा समयसँ पूर्व छूबि लेने रहितहुँ
मचोड़ि-मचाड़ि क'
दकरि लेने रहितहुँ
तँ हमर ई रूप
एहन नहि देखि पबितहुँ
हमर ई रूप नहि पाबि सकितहुँ

आइ जखन कि अहाँ
हमरा पर संयम रखलहुँ अछि
तँ विश्वास करू
हम अनवरत
अहाँक
क्षुधा मेटबैत रहब
अमृत पान करबैत रहब
आम्रपाली, नीलम आ मल्लिका बनि क'।

•

नारायणजीक पृष्ठभूमि आ काव्य-विकास

डॉ. तारानंद वियोगी

बहुमुखी प्रतिभाक धनी व्यक्तित्व तारानंद वियोगी मैथिली पाठकक लेल बहुत सम्मानीय आ परिचित नाम थिक। मैथिली साहित्य संग-संग साहित्यमे सेहो ओतबे हस्तक्षेप रखैत छथि। वरिष्ठ हो वा युवा रचनाकार सभक लेल तारानंद वियोगी एकटा आत्मीय मित्र छथि। चाहे कविता हो अथवा निबंध, वियोगी अपन स्पष्ट आ तीक्ष्ण विचार आ संवेदनशील रचना-दृष्टिक माध्यमे पाठकक मोनमे हिलकोर उत्पन्न क' दैत अछि। साहित्य अकादेमीक बाल साहित्य पुरस्कार सहित अनेको सम्मानसँ सम्मानित वियोगीजीक मैथिली आ हिन्दीमे दर्जनो पोथी प्रकाशित आ चर्चित छनि। सम्प्रति पटनामे रहैत छथि।

सम्पर्क : मो. 9431413125

वर्तमान समयमे मैथिलीक अत्यन्त महत्वपूर्ण कवि लोकनिमेसँ एक प्रमुख कवि नारायणजी छथि। हुनकर लेखनसँ ने केवल मैथिली कविता समृद्ध भेल अछि, बल्कि अनेक एहन अभिव्यक्ति अछि, जकरा ओ पहिल-पहिल बेर मैथिली भाषामे कहल जा सकब सम्भव बनौलनि अछि। एहिसँ हम सभ हुनकर कविक विराटताक अनुमान पाबि सकैत छी।

नारायणजी प्रायः 1980क आसपास कविता लिखब शुरू कयलनि। ओ समय मैथिली कविताक लेल अगिया-बैताल बला समय रहैक। सभतरि विरोध, विद्रोह, उखाड़-पछाड़कें धका-पेल छल। नारायण जीक कविता एहि सभसँ सर्वथा विपरीत छलनि। ओहिमे मौनकें महिमा छल, लघु मानवकें अभ्यर्थना छल, विस्मय-भाव चरम पर छल, स्वयं जीवनक जे ऐकान्तक सौन्दर्य होइत छैक तकर बारम्बार गायन छल। आ, कविताक जे भाषा छल से तँ बुझू जे 'जत देखल से कहिय न पारिय' बला सुधबौकपनसँ भरल छल। कहबाक चाही जे नारायण जी अपना पीढ़ीक समस्त कवि लोकनिमे सभसँ अलग छलाह। एतय धरि जे ई चीज आगू हुनका मूल्यांकनोमे बाधक बनल। जँ अहाँ सभसँ अलग रहैत छी तँ सम्भव अछि, अहाँ अबडेरल रहि जाइ। मुदा एहि कवि लेल धनि सन। ओ जेहन छला, तेहने बनल रहला पर आत्मविश्वस्त आ गौरवान्वित रहला। हुनक आगुक यात्रा क्षैतिज नहि, ऊध्वार्धर भेल। जाहि पथकें धेलनि तकरे अंतिम बिन्दु धरि पहुँचबाक जतनमे लागल रहला।

नारायणजीक कविताक पृष्ठभूमि अख्यास करबाक लेल हमरा लोकनिकें यात्री जीक लग पहुँचय पड़त। अपन सुप्रसिद्ध कविता 'द्वन्द्व'मे ओ माँ मिथिलाक असली शक्तिक खोज कयलनि अछि। ओ व्यक्ति जे 'रूप-गुण अनुसार जे रखै अछि नाम/धानक रखै अछि नाम' आ जैठाँ उदय लैत अछि ठीक तहीठाम अस्त होइछ, मने जीवन भरि अपन गाममे बनल रहैत अछि जे समय पड़ला पर मातृभूमिक काज आबि सकथि। यात्री जी लिखलनि— 'जननि, तोहर इष्ट तोहर शक्ति/धन्य थिक ओ व्यक्ति। ओहि कवितामे ओ अपनाकें अभागल मानलनि जे परिस्थितिवश एहन व्यक्ति ओ अपने नहि भ' सकला। आगू हमरा लोकनि देखैत छी जे बादक युगक महाप्राण कवि राजकमल चौधरी सेहो एहने अभागल अपनाकें मानलनि जे 'अपने गाछीक फूलपात नहि चिन्हैत छी, बूझल नहि अछि, गाछ सभक चिड़ै सभक नाम, बूझल नहि अछि।' मैथिली कविताक आगूक युगमे हमरा लोकनि पबैत छी जे एहन भागमन्त कवि साबित भेला जीवकान्त आ नारायण जी। इएह दुनू किएक? गाममे तँ बहुतो कवि रहलाह। कहब जरूरी नहि जे गाममे रहब आ एहि संदर्भ सभक प्रति संवेदनशील आ सजग रहब अलग-अलग बात थिक।

नारायणजीक पहिल कविता-संग्रह 1993मे आएल, 'हम घर घुरि रहल छी।' जे बाहर रहैत अछि से एक दिन घर घुरैत अछि। नारायण जी सब दिन गामेमे रहला। तखन? ओ एहि पुस्तकक भूमिकामे लिखलनि, 'हम आइ जतय छी आ जेना छी, अपनासँ दूर छी। हम अपनासँ प्रेम करय चाहैत छी। अपनामे घुरि अयबाक सर्वाधिक सहज विश्वसनीय डेग थिक हमर कविता।' अपन कविताक चेहरा चिन्हाबैत ओ लिखलनि, 'हमर कविता,

हमर अन्तरक सभसँ तीव्र नदी, वाग्विलासक हमर जिह्वा पर मिथिला अदौसँ गर्व करैत रहल अछि, तकरा खालि देबाक बात नारायण जी अपना काव्यारंभेमे लाधि देलनि।

दोसर कविता-संग्रह 'अंगना एकटा आग्रह थिक' सन् 2000मे आएल। ओहिठाम ओ मानव-विकासक युग-युग-व्यापी अभियानकेँ एकटा आग्रह संग जोड़लनि। भोरे अन्हरोखे स्त्रिगण आँगन बहारैत छथि। आँगन बहारब एकटा आग्रह थिक। बिन बहारने ओ नहि रहतीह। अँगनाक बहारब ओहि आदिम युगक स्मृति थिक, जंगलक विरुद्ध मानव-सभ्यताक विजय-अभियानक। अंगना जंगल नहि भ' जाय पुनः तकर पुरोधा थिकी स्त्रिगण। स्त्री आ प्रकृति, अपन समस्त पर्यावरण आ लघुसर्जनाक संग, इएह नारायण जीक प्रिय विषय रहलनि अछि। लघुसर्जना की? एकटा उदाहरण। बाढ़िमे गामक समस्त प्राणी घेरायल अछि। सभक प्राण अवग्रहमे छैक। बकरीक सेहो। बकरी लगातार मेमिया रहल अछि, कारण संकटापन्नताक अभिव्यक्तिकेँ आन कोनो प्रकारक ओकरा ज्ञान नहि छैक। कविकेँ चिन्ता होइत छनि जे 'बाढ़िमे बकरी, चिकरि-चिकरि एना, दोसरक बिसरल मनक अतल सागरमे, भक्ष्य होयबाक, अपन उपस्थिति जनबैत अछि।' तहिना, बाघक संख्या दुनियाँ भरिमे लगातार कम भेल जा रहल अछि। दुनियाँ भरिमे तकर चिन्ता कयल जा रहल अछि। मुदा, कविकेँ खुशी होइत छनि जे अपना सभक गाम-घरमे डोकाक कमी नहि भ' रहल अछि, जखन कि आरि पर टहलान दैत डोका सभ साल जानि नहि कतेक लोकक मासु खयबाक सेहन्ताकेँ पूर करैत रहलैक अछि।

तेसर संग्रह 'धरती पर देखू' वर्ष 2015मे बहरायल तँ एहि बेर हुनक काव्यकर्ममे किछु नब तत्व सभक नफा होइत देखल गेल। एखन धरि हुनकर मुख्य काव्य-विषय छलनि। मिथिलाक रुचिर भूभाग, एकर डीह-डाबर, नदी-पोखरि, चिड़ै-चुनमुन, एकर खेत, खेतमे होइबला जजाति, तकर बीज, बीजक अंकुर, अंकुरोक प्रांकुर, तकरो मूलांकुर। गाम, गामक छोट-छोट अबल-दुबल लोक, गामक सड़क, सड़क कातक अखण्ड पर्यावरण, गामक मौसम ऋतु, वर्षा जलक विविध रूप, जल जे पृथ्वीक अनुरागमे बसैत अछि। कतेक कहल जाय? आदि आदि कहैत अतल तलातल धरि चलि जाइ, ततेक। राजनीतिक आ बाजारवादी गछाड़ सभक अनेक प्रपंच एहिठाम आएल। गामक मन्दिरक बारेमे हुनकर एकटा कविता अछि, जतय देखाओल गेल अछि जे कुकर्म, अपराध, व्यभिचार आदि मन्दिर पर एहि दुआरे चलब जारी छै जे मन्दिर ककरो बापक नहि थिक। चिंताकुल कवि ई सब देखैत दुखी छथि जे अयोध्यामे फेर बड़का मन्दिर बनि रहल छैक। तहिना, बाजार मिथिलाक गाम-गाममे घरक ड्योढ़ी पर आबि गेल अछि। बाजार आनल गेल छल एहि करारक संग जे बेचत तँ बिकयबो करत। मुदा, परिणाम देखि कवि दुखी छथि जे मिथिला केवल खरीदार बनल रहबा लेल बाध्य अछि। बड़ दर्दीला क्रोध छनि कविक, 'पाद त' बिकाइत अछि, अहाँक वस्तु सब नहि बिकाइत अछि बाजारमे? मनक स्वस्ति बेचू, ओछाओनक ठाँव बेचू, ठोरक पानि बेचू, देहक उष्मा बेचू... अहाँ बेचि दिय' अपनाकेँ।'

एहि साल वर्ष 2019मे हुनकर कविता सभक चारिम संग्रह 'जल धरतीक अनुरागमे बसैत अछि' छपल अछि। एहिमे हुनकर सिरीज कविता सभ छनि। जल, सुजाता, वसंत, सपना आ चान। पोथिक भूमिकामे कहलनि अछि— 'अपन कवितामे हम ओहि स्थानीय मूल्यकेँ अनबाक चेष्टा क' रहल छी जाहिसँ मैथिली कविता कतहु क्षेत्रीयताक नामक कृपा पर नहि, मूल्यवत्ताक आधार पर सगर्व ने मात्र ठाढ़ भ' सकय, अपितु डेगमे डेग मिलाए चलय।' जे आकांक्षा नारायणजी आइ व्यक्ति कयलनि अछि, गौरतलब थिक जे ताहि मिजाजक काज ओ पछिला चालीस सालसँ ने मात्र करैत आबि रहलाह अछि, अपितु ओकरा उचित साकांक्षताक संग अकानलो गेल अछि। वर्ष 2000मे जीवकान्त लिखने छलाह, 'कुण्ठारहित ई इजोत मैथिली कविताकेँ भारतीय भाषामे उच्चासन देने अछि। आजुक मैथिली कविता भारतीय कविताक मात्र सहगामी नहि, ओहिमे अग्रगामी अछि। नारायण जी एहि भाषाक प्रतिनिधि कवि छथि।'

हम रोमांचित छी अपन एहि प्रिय कविकेँ अहाँ लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत।

•

अरविन्द ठाकुर

गजल

दुख संसारक निज सन लागत बूझि सकी जँ
हल्लुक हएत अपन दुख सभटा बाँटि सकी जँ

समझौता कहियो नहि होइछै समाधान सन
युद्ध करैए पड़त अंततः सकि सकी जँ

गोयबल्सक व्याकरणमे छटपट करै छै अक्षर
शाइर सुच्चा हएब नियमकेँ तोड़ि सकी जँ

उँचका पर्वत बनत तखनिए मीलक पाथर
काटि-छाँटि कए खूब जतनसँ गाड़ि सकी जँ

एहन लोकसभ जेकर जीह पर अगनित गिरगिट
जाएत निखत्तर, हमसभ 'गीता' जीबि सकी जँ

भिखमंगनी आ दाँत निपोड़ब बिसरब 'अरबिन'
अप्पन कर्मक गोवर्धनकेँ तानि सकी जँ।

•

सम्पर्क : सुपौल,
मो. : 9431091548

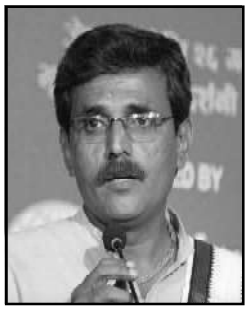

एलिट मिथिला : डिलिट मैथिली

डॉ. कमल मोहन चुन्नू

डॉ. कमल मोहन चुन्नू मैथिली साहित्यक नाट्याकाशमे एक चर्चित/प्रतिष्ठित नक्षत्रक नाम थिक। ई कविता, कथा, निबंध, समीक्षा आ आलोचनादि सेहो लिखैत छथि। दर्जनो संगोष्ठीक आयोजनमे अपन सहभागिता देने छथि। अभिनय, नाट्यलेखन ओ निर्देशनक दीर्घकालिक अनुभव छनि। हिनक 'नव घर उठे', 'चाँगुर' आ 'ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड' नाटक प्रकाशित, देश भरिमे मंचित आ चर्चित छनि। हिनक आलोचनाक पोथी 'निनाद' बेस ख्याति अर्जित कयलनि अछि। संकीर्तनम्, युगल विनोद, नवारम्भ, भंगिमा, नवल लीलामृतम्, *सरस माधुरी आदिक* सम्पादन कयने छथि। नवतुरिया लेखकक प्रति बेस संवेदनशील रहैत छथि। साहित्य जगतमे अपन अध्ययन आ मधुर स्वभावक चलते एकटा फराक परिचिति बनेने छथि। हिनका वर्ष 2008मे चेतना समिति पटनासँ माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, हैदराबादसँ 2018 मे तिरहुत साहित्य सम्मान, हालहिमे मैलोरंग, दिल्लीसँ ज्योतिरीश्वर सम्मान भेटलनि अछि।

ई सम्प्रति रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा (मिथिला)मे सहायक प्राध्यापकक पद पर कार्यरत छथि।

सम्पर्क : 9334924753

एतय अयला दू-चारि मास भ' गेल छल। अपन डेरा-डंडा सेहो सुभ्यस्त क' लेने छलहुँ। ताहिमे जे हमर साहित्यिक मित्र लोकनिक सहयोग छल से अवर्णनीय। ओ लोकनि हमरा ई अखरय नहि देने रहथि जे सहरसा हमरा लेल अनचिन्हार अछि, अनभोआर अछि। से तन-मन-धनसँ ठाढ़ छलाह हमरा लेल। डेरा-तेरा सुव्यवस्थित कयलाक बाद मैथिलीक किछु-किछु कार्यक्रम सभ सेहो करब शुरू क' देने छलहुँ। से अखबारोमे आबय लागल छल आ तेँ कॉलेजोक प्राध्यापक लोकनि ई बात सभ जानय-बूझय लागल छलाह। एतय मैथिलीओक कार्यक्रम सभ भ' रहल अछि से जानि क' आश्चर्यित होइत छलाह, मुदा आह्लादित सेहो होइत छलाह। एवंक्रमे एतहुक किछु स्थानीय लोकसभ सेहो हमरा चिन्हय-जानय लागल छलाह।

प्रोफेसरी भेल, से मोन प्रसन्न छल, मुदा महिला कॉलेज भेटल, से मोन छोट भ' गेल। मुदा जखन 2-4 मास बीतल तखन हमर ई कचोट बला भाव एकदम बदलि गेल। एतहुक वातावरण, अपेक्षाकृत नीक लागल। प्राचार्या स्वयं सेहो भाषा-साहित्यक प्राध्यापिका सेहो छलीह, कवयित्री छलीह। तेँ हुनका दिस सँ हमरा साहित्यिक-सांस्कृतिक सहयोग प्रारम्भ भ' गेल छल। एतहुक किछु वरीय लेखक लोकनिसँ हमर पहिलक सम्पर्क-सामीप्य हमरा एक स्तरसँ बलगर करैत छल, मजगुत करैत छल।

शनैः-शनैः आन कॉलेजक प्राध्यापक लोकनि सेहो जानय लागल रहथि। एकर केन्द्रमे मैथिली छल। मुदा हम एहि परिचय-पातसँ कतियाएल रहल करी। कारण, ई हमर दृढ़ धारणा छल जे अवांछित जान-पहिचान अंततः हमरो हानि करत। लोकक अनावश्यक आन-जानसँ हमर लिखाइ-पढ़ाइ हर्ज होयत। तेँ एहिसँ एकटा बुधियार परहेज राखब होयत बुधियारी बला काज।

छोट शहरक सेहो अपना तरहक रूप-सौन्दर्य छैक, गति-प्रगति छैक, लाभ-हानि छैक, वाद-संवाद छैक। एकर मुहल्ला सभक दोकानदारीमे एकटा अद्भुत समीकरण देखैत छी। आनक बात छोड़ू, लटगेना दोकानक समान कीनयमे सेहो अपन जातीय समीकरण छैक। बेसी लोक जँ नहियो त' किछु गोटे एहन अवश्ये भेटलाह अछि जे लटगेनाक समान, कपड़ा-लतासँ ल' क' चाह-पान पर्यन्त करय काल अपन जातिक दोकानकेँ प्राथमिकता देने रहैत छथि।

एहि गोरे त' अति कयने रहैत छथि। खड़िको कीनताह अपने जातिक दोकानक। जतय से नहि ततहि आन ठाम सम्भव। गंगजला आ पंचवटी चौक पर हमरा एहन लोक खूबे अभरैत छलाह। परिचयो भेल। खूब सम्मान-भाव अनुभव करी। ई लोकनि लेखकीय प्राणी नहि छलाह जे एहि सम्मान-भावमे ईर्ष्या-भाव मिज्झर होइत।

जहिया हम एतय योगदान देलहुँ तहिया एहि महाविद्यालयक प्राध्यापक लोकनिक मध्य सम्पर्क-भाषा राष्ट्रभाषा छल। मुदा से ने त' शुद्ध राष्ट्रभाषा छल आ ने मातृभाषाए। ई लोकनि मातृभाषा माध्यमक राष्ट्रभाषा बाजल करथि। 'उठबो करेंगे कि नै?' 'पानो-तानो कोई खिलायेगा से नै?' आदि किछु-किछु तेहने सन। राष्ट्रभाषा आ मातृभाषाक पारस्परिक, भाषिक आ कि भाषा वैज्ञानिक अद्भुत सामंजस्य भेटल करय।

एक तँ ओ लोकनि बड़ मोसकिलसँ मैथिली बाजथि। मुदा ताइमे कखन ओ राष्ट्रभाषा पकड़ि लेथि से पकड़यबे नहि करय। अधिकांश प्राध्यापक एतहिक आस-पड़ोसक छलाह। तइयो हिनक गपशपक पहिल भाषा राष्ट्रभाषाए बनि गेल छल। मुदा ताहूसँ हमरा हर्ज नहि छल। किएक रहत? मुदा अजगुत ई अवश्य लागि रहल छल जे खाँटी मिथिलाक ई क्षेत्र, तकर भाषा, सम्पर्क भाषा मैथिली छोड़ि आन दोसर कोना भ' गेल!

स्थिति अवश्य विपरीत छल मुदा असम्भव नहि छल। हम साहित्यिक आयोजन करब प्रारम्भ क' देने रही। स्वभाषा-केन्द्रित आयोजन दिस बेसी टगल रही। से स्वाभाविको छल आ से सुनियोजित सेहो छल। तकर सुपरिणाम सेहो भेल। दुइए चारि मासमे हुनका लोकनि लेल हमर मुह-ठाँ मैथिलीबला भ' गेल छल। आब हमरा देखिते लोक सभ मैथिली शुरू क' दैत छलाह। आब ई लोकनि मोन मारिये क' बरू, मुदा हमर आयोजन रीतियाए लागल छलाह।

किछुए दिन बाद एकटा अद्‌भुत अवसर आयल। गणितक प्राध्यापक श्री सुरेश प्रताप बाबूक बेटीक बियाह अयलनि। अपनो गामक बगलेमे आ बेटीक बियाहो ठीक कयल पड़ोसिये गाममे। धनी-मानी परिवारमे। सुरेश बाबू अपनहु नीक लोक, विचारवान लोक, आनहुक मान-सम्मानक चाँकि-फिकिर करयबला लोक, घर-घरेनाबला लोक। कहाँदन पँचगछिया राजसँ हिनका लोकनि घनिष्ठता-आत्मीयता छलनि। से सुरेश बाबू अनासुरतीमे एक दिन एकटा काज कहलनि। तेहेन काज कहलनि आ से तेना कहलनि जे हम असमंजसमे पड़ि गेल रही। कहलनि जे हुनक बेटीक बियाह ठीक भेलनि अछि, ताहि निमित्त एकटा अभिनन्दन-पत्र तैयार क' दी।

हमरा लेल ई 'अभिनन्दन-पत्र' विधान एकटा सर्वथा नव प्रचालन छल, नव व्यवहार छल, नव प्रथा छल। हम ने तँ एहि पूर्व ई अभिनन्दन-पत्र ने तँ देखने रही आ ने कहियो तैयारे कयने रही। जखन देखनहि ने छलहुँ त' तैयारक कोन बात! एही ठाम आबि ई बुझलहुँ। अभिनन्दन-पत्र तैयार करबाक दायित्व बेटीबलाक होइत छैक। एकरा बरियातीक आगमनक उपरांत हुनका लोकनिक सोझाँ चढ़ल जाइत अछि? एकटा स्वागत-भाषण जकाँ। एकरा एकटा प्रांजल भाषामे स्वागत-वक्तव्य कहल जाय। एहिमे वर-पक्ष आ कन्या पक्षक नाम-ठाम, गाम-घर आदिक उल्लेख रहैत अछि। एकर संगहि मारिते रस उचिती-मिनतीक संग स्वागत-कथन कहल जाइत अछि। एकरा पढ़य लेल अलगसँ एकटा कुशल आ बजन्ता लोक बजाओल जाइत अछि? जे कि बेस चतकार-चमत्कारक संग बेस ओरिया-सरिया क', बेस आवेशपूर्वक एकर पाठ-परायण करैत छथि। कन्यापक्षक ई व्यवहार कुशलताक द्योतक आयोजन होइछ। तकर बाद बरियातीओ दिससँ अपन परिचय उद्‌गारादि देल, जाइछ। आ अंतमे एकरा समधिक हाथ मे समर्पित क' देल जाइछ।

यद्यपि हमरा एहि काजक ने तँ अनुभव छल आ ने रुचिए छल। तथापि श्री सुरेश बाबूक बात-बिचारकेँ देखि हमरासँ टारल नहि भेल कोनो लाथ सेहो नहि लगा सकलहुँ। कनेक इतस्ततः अवश्य कयल मुदा बेटीक बाप आवेश-आग्रहक सोझाँ अवश भ' गेलहुँ एतद्विषयक समस्त सक्षमता-अक्षमताक गप प्रभावहीन भ' गेल। अंतमे लगभग तैयार होइत कहलियनि, 'हमरा एकटा नमूना द' देब।'

ओहो लगैए तैयारे भ' क' आयल रहथि। चट अपन बैगसँ एकटा नमूना निकालिक' थम्हा देलाह।

साँझु पहर डेरा आबिक' हिनक काज क' देलहुँ। अपना भरि खूब नीक अक्षरमे लिखियो देलहुँ जे प्रेसमे कोनहु दिक्कत नहि होइक। एहि क्रममे हम एहि अभिनन्दन-पत्रक प्रेस कॉपीमे दूटा काज अरबधि क' कयल। पहिल तँ ई जे सम्पूर्ण अभिनन्दन-पत्र मैथिली भाषामे तैयार कयल आ दोसर, ई जे वर-कनियाँ दुनू पक्षक नाओ-ठेकानमे 'मिथिला' अवश्य लिखि देलहुँ जे कि हम स्वभाववश करैत रहैत छी। जेना अमुक नाम, तकर माता-पिता-पितामहक नाम, गाम, पत्रालय, भाया आदिक बाद जिला-सहरसा, मिथिला, बिहार। तकर बाद पिन कोड।

सप्ताहांतमे हम पटना चल अबैत छलहुँ। शनि-रवि लगाक' एकाधटा छुट्टीओ छलैक। वापस सहरसा घुरैत 5-7 दिन लागि गेलैक। एही बीचमे सुरेश बाबूक कन्यादानो सम्पन्न भ' गेलनि। कॉलेजक सभ कर्मचारी लोकनि खूब खाइत जाइ गेलाह। खूब नीक खान-पानक व्यस्था। जे खाइ जतेक खाइ। कॉलेजमे हिनक एहि व्यवस्थाक चर्चा अगिला भरि सप्ताह चलैत रहल। हम वंचित भ' गेल छलहुँ। सुरेश बाबू अयलाह आ अबिते हमरा अपन स्नेहसिक्त उपराग देबय लगलाह। किछुओ बाजब हम आवश्यक नहि बुझलहुँ। चुपचाप शिरोधार्य कयल। कनेक काल बाद हमरा लागल जे आब हमर बाध्यता शक्ति क' सुरेश बाबू मानि गेल छथि आ आब हिनका मोनमे एहि लेल कोनो खोंच नहि छनि। ओ उठिक' विदा होमय लगलाह तँ हम कहलियनि, 'सुरेश बाबू, हमर तैयार केलहा अभिनन्दन पत्र काज देलक कि नहि?' ओ आह्लादित होइत कहने छलाह, 'आह, पूछू जूनि। बरियाती सभ तँ विभोर भ' गेल। चकबिदोर लागि गेलै सभकेँ।'

हम पुनः कहलियनि, 'ओ अभिनन्दन-पत्र एक प्रति हमरो द' देब। बेर-कुबेर ककरो काज अभरि जेतैक तँ एहिसँ काज चला लेत।'

हुनका जेबीमे रहनि एक प्रति। बेटीक बाप रहथि ने। ओ हमरा चट निकालि क' द' देलाह। हम ओकरा खोलिक' उनटा-पुनटाक' देखलहुँ। खूब नीकसँ छपल छल। खूब नीक-नीक अक्षर, साफ-सुन्दर छपाइ। मोन हुलसि गेल। विचारलहुँ जे आब एक बेर पढ़लो जाय एकरा।

जखने पढ़ब प्रारम्भ कयल आ कि मोन अचम्भित भ' गेल। वर-कनियाँक नाओ-ठेकान तँ ठीक छल, मुदा तरक बादक बात सभक भाषा मैथिली नहि छल। बात सभटा वएह छल मुदा से छल हिन्दीमे।

अचम्भित भेलहुँ। पुनः प्रारंभसँ पढ़ब प्रारम्भ कयल। पूरा पढ़ि गेलहुँ। आब हमरा कोनहुँ भ्रम नहि छल। एक तँ पूरा अभिनन्दन-पत्रकेँ मैथिलीक बदला हिन्दी क' देल गेल छलैक, संगहि वर-कनियाँक नाओ-ठेकानसँ 'मिथिला' हटा देल गेल छलैक।

हम चुप छलहुँ। अचम्भित तँ पहिलेसँ रही, एखन क्रोधित सेहो रही आ क्षुब्ध सेहो रही। सुरेश बाबू हमरासँ अपन ऐश्वर्य-वर्णन सूनय चाहैत रहथि। मुदा हम ताहि स्थितिमे एखन नहि छलहुँ। ओ हमर मुखाकृति देखि हमर द्वन्द्व बूझय चाहलनि, 'की, किछु गलती छपि गेलैक की?'

हम तैयो चुप्पे रही। चुप्पे रहब आवश्यक लगैत छल। ओ पुनः इएह प्रश्न दोहराओल। हमरा नहि रहल गेल। हम कहलियनि, 'हम मैथिलीमे लिखि देने छलहुँ, से किएक बदलि देलियैक? नाओ-ठेकानसँ 'मिथिला' सेहो निपत्ता क' देलियैक? एहिमे तँ ने मैथिली रहय देलियैक आ ने मिथिला।'

सुरेश बाबूक भाषा बदलि गेल छलनि। ओ राष्ट्रभाषा शरणागत होइत कहय चाहलनि जे मैथिली हुनक समधियानमे केओ नहि बुझितैक। लोक हुनका बुड़बक कहितनि। तेँ ओ मैथिली हटा देलनि आ ताही कारणसँ ओ मिथिला सेहो हटा देलनि। कहलनि जे ई मिथिला नहि, ई कोशी क्षेत्र छैक। अहाँ सभ लेल ई मिथिला हेतैक, हमरा सभक लेल कोशी क्षेत्र।

से कहि सुरेश बाबू बिना हमर कोनहुँ फिकिर कयने चलि गेल रहथि। हमरा अजगुत लागि रहल छल। ई कोन व्यवस्था छैक जे झटकामे मिथिला आ मैथिली दुनूकेँ अलोपित कयने जा रहल अछि।

हम सुरेश बाबूकेँ एकटक देखैत रहि गेलहुँ। ओ चलि गेलाह, मुदा हम ओम्हरे ताकि रहल छलहुँ। मैदानमे लड़की सभ कोनो खेल-धूपक सूरसार क' रहल छल। सभ अपनामे घोदो-मोदो भेल। सभ केओ सभकेँ किछु कहैत सन।

कि तखने देखलहुँ जे सुरेश बाबू ओतय पहुँचि गेलाह। हाथमे एकटा खुहरी लेलनि आ ओहि बड़का मैदानक बिच-बिचबामे एकटा रेघा पाड़ि देलनि। घोदो-मोदो भेल लड़की सभ दू फाँक भ' गेल।

मुदा नहि जानि किएक, हम डेरायल जा रहल छलहुँ। भीतरे-भीतर हमरा सुरेश बाबूक बात सभ बेधने जा रहल छल आ ओमहर मैदानमे, दू-हिसमे बँटल लड़की सभक खेल-धूप देखि सुरेश बाबू थपड़ी तड़तड़ा रहल छलाह।

•

***अनुप्रास* पत्रिकाक लेल**
रचना
पेजमेकरमे शिवा मीडियम
फाउंटमे पठओलासँ
सुविधा होयत
तथापि अपन सुविधा
देखी आ रचना पठाबी।
- सम्पादक

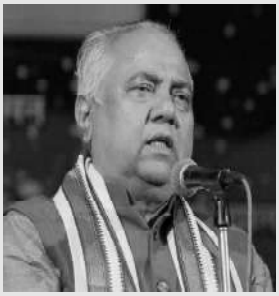

बुद्धिनाथ मिश्र

राम कथामे

सीता दाइक सासुरसँ
आयल समाद अछि
दिन पुरलनि दोसर
बनवासक रामकथामे

ओ बनवास रहनि
ससुरक वरदान देलासँ
ई बनवास भेलनि
कुट्टे खरमास भेलासँ
हरलनि सभ संताप
जनक केर, धनुष तोड़िकेँ
जीबथि पुरुषोत्तम
इतिहासक रामकथामे

अवधपुरीसँ जनपुरी धरि
कास फुलायल
उजरल उपटल डीह
कठहँसी हँसय नोरायल

कलिक अछाँहीसँ निकसल
रघुकुल मर्यादा
अँकुरी नया खसल, घरवासक रामकथामे
समय पाबि तरुवर फरलै अछि
सरजू पट पर
छाड़ि टटघरा दुःखक
राम बनौता नवघर
देवउठाओनि पावनि संग
करतारक पावनि
धातृ गाछ फरल
उपवासक रामकथामे

महासिंधु पर सेतु बनल
जिनका प्रतापसँ
वएह रमापति राखथि
कर्मक त्रिविध तापसँ
ग्रहकेँ गृहमे परिवर्तन
जे आइ भेलै अछि
शान्ति पर्व से, अभिनव
व्यासक रामकथामे।

•

सम्पर्क : देहरादून, उत्तरांचल
मो. : 6397677279

दलित वर्गक पावनि

सियाराम झा 'सरस'

गीत, गजल, कथा, समालोचना, निबंध, सम्पादन आदिक क्षेत्रमे एकहि संग अपन सकारात्मक हस्तक्षेप रखैत सिया राम झा 'सरस' मैथिली साहित्यक विलक्षण व्यक्तित्व छथि। अद्यावधि हिनक 17 गोट पोथी प्रकाशित एवं प्रशंसित छनि। अपन माटि-पानिक दर्दकेँ मलहम-उपचार दैत नीक-बेजायक हिसाब रखैत, हँसी-खुशी बँटैत साहित्यकेँ जिबि रहल छथि।

सम्पर्क : राँची, झारखंड मो.- 9931349334

दलित वर्गक पावनि आ होरी जोगीड़ाः

आँगनमे मनाओल जाइत पावनि-तिहार एवं उत्सवक चर्चा हो तँ पूजाक रूपेँ विषाहारा, सुखराति (गोपाष्टमी), सलहेस पूजा, शीतला माइक पूजा, लुकेसरी देवीक पूजा, कमला (नदी), कोइलाक पूजा, करमा, आदिवासी लोकनिक लेल खास आदिक आयोजन निर्धारित समयानुसार होइत अछि तहिना खेला ओ मेलाक चर्च करी तँ जूड़िशीतल, फगुआ, तिला-सँकराति! कतेको पूजा, माघी पूर्णिमा, तीर्थ— विदेश्वर, कुशेश्वर, कपिलेश्वर, सिंहेश्वर, गौसाघाट, तिलयुगा, कोसिका असलान ओ मक्कर-मेला आदिक महत्वपूर्ण स्थान अछि।

एहि पर्वादिक अधिकांश अवसर पर गहबर सभमे वा कएक नदी तटहु पर भाओ-भगैतक गायन-वादन-नर्तन आदि विध-विधानसँ पूजा-अर्चनाक संग कएल जाइछ।

ताहीमेसँ एकटा खास उत्सवी पावनि थिक फगुआ। ई पावनि फागुन पूर्णिमाक अवसरक अछि, मुदा उत्सवक सूत्रपात तँ माघ मासक शुक्ल पंचमीएँसँ भ' जाइत अछि।

ततबे नहि, मिथिला क्षेत्रमे माघ-शुक्ल पंचमीसँ वसन्तक आगनक तैयारी शुरू भ' जाइछ। शिशिर वा शीत ऋतुक विदाइक 'नोटिस' थिक ई वसंत पंचमी।

तँ ओहि दिनसँ विद्याक देवी-सरस्वती भगवती पर अबीर-गुलाल चढ़िते शुरू भ' जाइछ।

विद्याक देवी भगवती पर अबीर-गुलाल चढ़िते ओ सर्व-साधारणीक लेल प्रसाद बनि जाइछ। तकर बादक आधा माघसँ पूरा फागुन मास धरि प्रत्येक शुभ कार्य (मूड़न, जनेऊ, बियाह, दुरागमन) ओ पूजा-पाठक अवसर पर उपस्थित सकल कर-कुटुम्ब-सरोकारी तथा समाजहुँकेँ अबीर-गुलालक टीका लगाएब सुखद, शुभद मानल जाइछ। मुदा दलितवर्गमे ई बभनौतीवला ठोप-टीका नहि चलैत अछि। हिनका लोकनिक आँगन-दलानमे सम्पूर्ण पोचाड़ा एवं रगड़ा-रगड़ी, उठा-पटक पर्यन्त चलैत अछि।

रंग-अबीरक संग से रगड़ा-रगड़ी, आँगनसँ दलान-दरवज्जा धरिक खेहारा-खेहारी एवं उठा-पटक, सार-सारि-बहिनोइक बीच, दीयर-भाउजक बीच, समधि-समधिनिक बीच ननदि-भौजाइक बीच, सरहोजि-नन्दोसिक बीच एवं दोस-यार-भजार-मीता आदिक संग...

होरी-जोगीड़ा नाच : मिथिलाक दलित समुदायमे फागुनक रंगोत्सव सालक सभसँ पैघ उत्सवी पर्व थिक। एहि अवसर पर नोकरियाहा सभ 15 दिनक या मासहु दिनक छुट्टी ल' अपन-अपन गाम अबैछ। जे जन गामहि रहि खेती-गृहस्थी वा आनो कोनो रोजी-रोजगारमे लागल रहैछ, सेहो सब एकसंग पावनिमे विशेष खएबा-पहिरबाक आनन्द-उछाह मनेबाक, सर-समाज ओ कर-कुटुम्बसँ मिलबा-जुलबाक आ भाङ शरबत आदि पीबि-पिआए उन्मत्त-मद्मत्त होइत अछि।

एहि उत्सव ओ नाचक स्वरूपक मादे वर्ण रत्नाकरमे वर्णन अछि जे उक्त दुनू पक्ष केँ अपन बुढ़ारी बएस धरि ओहिना आँखिमे झलकैत रहैत अछि।

एहि रंगोत्सवक मादे लोक-वेद नामक

पोथीमे डॉ. किशोर नाथ झा महोदय द्वारा देल गेल कतिपय जनतब एहि प्रकारक अछि :

(क) जे शिवक अराधना कए होलिका (हिरण्य-कश्यपक बहिन) वर प्राप्त कएल जे हुनका लग 'अग्नि-नियंत्रण शक्ति' रहतनि। ओ एखन कतए जेना चाहती, अग्नि-प्रवाह वा अग्नि-खेड़ि क' सकैत छथि। भाइक दबाव प्रह्लादक विरुद्ध ताही अगिन-खेड़िक आयोजन भेल छल जाहिमे (धोखासँ) प्रह्लाद कें यमपुरी पहुँचेबाक षड्यंत्र छलैक। मुदा ईश्वरकें मंजूर नहि छलनि। तें दाओ उनटा पड़ि गेलैक होलिकाकें आ वरदान-स्वरूप जे अग्नि-कवच चद्दरि ओकरा देह रहैक से अकस्मात उधिया क' प्रह्लादक शरीर पर चल गेलैक, तँ धधकैत लहासमे होलिका स्वयं जरि मरलि आ भक्त प्रह्लाद अनामति वएह चद्दरि ओढ़ने, मुसकिआइत धधरासँ बाहर आबि गेलाह।

(ख) तें प्रतिवर्ष समस्त आसुरी शक्तिकें जराक' स्वाहा करबाक निमित्तें पुरना संवत् केर विदाइ तथा नव संवत्सरक स्वागत हेतु फागुन पूर्णिमाक राति गामक कात करौटक फैलगर चौबट्टी पर वएह होलिका दहन आयोजित होइछ।

(ग) जें कि आगाँक (फाल्गुन पूर्णमासीक) किछुए हप्ताक अभ्यन्तर रब्बीक (गहूम, बदाम, मसुरी, जौ, मटर, केराओ, खेसारी आदि) नव फसिल तैयार होमएबला रहैछ तें सम्वत् दाहक ओहि अग्नि पर उपरोक्त फसिलक झाड़ (मुट्ठी बनाए, डंटामे बान्हि-बान्हि) कें अर्पित कएल जाइछ। बहुतो लोक तँ ओहि आगिमे पाकल, भुजाएल गहूमक सीस वा बदामक 'ओड़हा' प्रसादस्वरूप पबैत आ बँटैत अछि।

प्रसंगवश कही जे एहि पाँतीक लेखक स्वयं बाँसक छिपाठीक अग्रभागकें दू फाँकक' चीरि, ताहिमे गहूमक सीस वा चनाक झाड़कें खोंसिक' ओहि ज्वालामे सदैत-पकबैत छलाह तथा प्रातःकाल भरि टोलाक लोक हिनकहि आँगनसँ से प्रसाद (दू-चारि दाना) माङि-माङि ल' जाथि। ततबा कालक हेतु हिनक ढोलकक ताल एवं फागु होरीक सुर क्यो आन-आन संगबे टेकि लैत छलनि। एहि अर्थे फगुआ नवान्नक एक पावनि सेहो थिक।

(घ) सम्मत-दहनक अवशिष्ट छाउर नहि, पूजाक भस्म बूझल जाइछ आ समस्त ग्रामवासी तकर पुड़िया बनाए शुभफलदायक बुझि घरमे रखैत छथि तथा देहमे आ माथहु पर लगबैत छथि।

(ङ) भविष्य पुराणक निर्देशानुसार होलिका दहनक शुभ मुहूर्त प्रदोष कालिक पूर्णिमामे अतएव क' होइत अछि। से जखने पढ़ए, साँझ राति आ कि भोरहरियामे, तखने मंत्रोच्चार-सहित संवत् दाहक आगि फूकल जेबाक चाही।

(च) भगवान-भगवतीकें दोल (झूला) पर बैसाए यात्रा उत्सव मनाओल जाइछ, तें बंगाल, उड़ीसामे ई पर्व 'दोल-यात्रा' कहबैत अछि।

(छ) एहि अवसर पर घरक गोसाउनिकें खीर-पूड़ी आ मधुर-मिठाइक पातरि देल जाइछ। अनेक लोक ब्राह्मण-कुमारिकें सेहो आदर-भावपूर्वक भोजन करबैत छथि।

(ज) पूर्णिमाक प्रात भेने नहा-सोना सर्वप्रथम रंग-अबीर-सिन्दूर आदिसँ कुलदेवी-देवताकें पूजि तखन बाहरक खेल शुरू कएल जाइछ। ओना एही प्रातः कालसँ सूर्योपासना करैत महिलालोकनि सप्ता-विप्ताक डोरा बन्हैत आ कथा-श्रवण शुरू करैत छथि। लाल-पीयर मिश्रित रंगक एवं सात सूतक ई डोरा बाँहि पर बान्हब शुभ-फलक प्राप्ति होइछ, एहेन धारणा अछि। अस्तु।

'योगीजी सारा...रा...रा' से ई तँ (यक्षोपरि) भेल। पूजा-पाठ आ सर्व-साधारणक लेल विधि-विधान। जँ बिकछाक' बात करी त' हमर जे स्वतः अनुभूत ज्ञान अछि तकरे किछु चर्चा 'आँखिक-देखल' हिसाबे करए चाहब एतय।

गामक धानुक (मंडल), किओट (केवट-कामति), गुआर (यादव), हजाम, कमार (बढ़इ), सोनार, धोबी, कुम्हार, प्रभृति जे हमरा गाम एवं पंचायतमे बास करैछ तिनका लोकनिकें अपन-अपन खानदानी पुरहित-पंडितसँ पूछैत देखने छी जे 'पुरहित' भगवतीक भोग-पातरि कहिया हेतनि। आओर, जे सम्मतमे आगि रातिमे कखन, कए बजे फूकल जेतैक? आओर, जे पूर्णिमा उपरान्त अगिला दिन पुनकाल कखन शुरू होएत। जे रंगखेली आरम्भ करब?'

एतबा समझदारी हमरा गामक उपरोक्त वर्णक कतिपय लोकमे 60-70 वर्ष पूर्व छलैक। अर्थात् शास्त्र-पुराण वा पतरा-पंचाग केर मोट-मोट बातक पालन इहो सभ करैत छल। बाँकी खाएब-पीयब आ रड़घुम्मस करब त' होरी-फागुक मुख्य विशेषता परम्परया रहिते आएल अछि।

से, ओ होरी-गीत जकरा आगू-पाछू जोगीड़ाक गायन चलैत अछि, से कोन-कोन वा की-की रहैछ? दलित वर्गक आँगन-दलान परहक से होरीक गीत कोनो महामहोपाध्याय पंडितजीक व्याख्यान वा विनिबंध से भेटब करीब-करीब असम्भवे होएत। ई भेटत मैथिलीक खाँटी लोकधर्मी रचनाकार, यथा— श्री महेन्द्र नारायण राम, श्री महेन्द्र मलंगिया, प्रो. सोमदेवकें जाइछ तँ प्रत्येक पाँतीकें दोहराओल जाइत अछि।

तें एहि तरहक 'डफकी-होरी'-गीतक आकार छोटे रहैत अछि, प्रायः एकटा स्थायी पर एकसँ दूटा अन्तरा सएह। संगहि जें कि प्रत्येक पाँतीक अन्त 'चलती' वा द्रुतसँ होइछ तें गायक-वादक-नर्त्तककें थाकनियो अधिक होइछ, ताहू कारणे गीत छोट-छोट आकारक होइत अछि।

होरी आ फागक गीत पर पश्चिम (भोजपुरी आ हिन्दी पट्टी) क प्रभाव प्रचुरतासँ देखल जाइछ, सेहो लक्ष्य कएल अछि। अनेकहुँ

लोकप्रिय गीतमे हिन्दीक खाँचा देल देखबामे अबैछ, यथा—

'हो हो सइयाँ अभागा ना जागा...
नकबेसर कागा ले भागा।
उड़ि-उड़ि कागा कदम पर बइसल...
जोबना के सब रस ले भागा...। नकबेसर...'

आब एहि रचनाक तेसर पाँति 'उड़ि-उड़ि कागा...बइसल' सम्पूर्णतः मैथिली थिक, तत्पश्चात 'जोबना' यौवन शब्दक भ्रंश वा ठेँठ रूपांतर थिक। मुदा 'ले भागा' 'ना जागा' अथवा 'ना जागा' स्पष्टतः 'मिश्र धातु'क प्रयोग थिक। ओना, शिष्ट-साहित्य तथा लोक साहित्यक ई अंतर प्रभाव आनहु भाषा-साहित्यमे देखल जाइछ। हँ, एकटा आओरो बात ध्यान देबाक थिक जे एहि प्रकारक 'मिक्चर गीत' मैथिलीक अधिकांश लोकगीत-संग्रहमे देखल जा सकैछ।

इएह बात जोगीड़ामे सेहो देखैत छी। शिष्ट लोकनिक टोलसँ अबैत जोगी। जोगीड़ाक विषय-वस्तु प्रायः पौराणिक होइछ, यथा-

प्रश्न— 'किनकर ऊठल चइ खरमुआँ, किनका के एकतारा?
किनकर पायल रातिमे बाजल, किनकाके भंडारा? बाजू सा रा रा रा...'

उत्तर— राग ऊठ चइ खरमुआँ, नारद के एकतारा...।
राधेक पायल रातिमे बाजे, सीताके भंडारा! भैया सा...रा...रा...रा...'

एहि दोसर पाँतीक 'किनकर पायल' के बदलामे कतहु-कतहु 'किनकर मैना' सेहो पाठ-भेद देखबामे आयल अछि।

अपौराणिक अथवा अधार्मिक विषय-वस्तुसँ इतर वा हँटिक' जे अनकहुँ जोगीड़ा देखबामे अबैत अछि, से सब बेस बौद्धिकताक चादरिमे लपेटल अछि। अर्थात् बुधियारीसँ पाँतीक लेखकक (किंवा एहनेक आरोक) संगति एवं कृतिमे रमला। रुकिक' तकला पर।

सारि-बहिनोइ वा सरहोजि नन्दोसिक बीचक रंग-रभस देखक अछि तँ स्वाद लिअ एहि गीतक :

'आ गे केसिया सम्हारि जुड़बा बान्ह गे ननदिया
कि होरी खेल' अबइ छौ हमर ननदोसिया!
गे सड़िया कि घिचतौ, अँचरबा के घिचतौ
कि मसिक जेतउ अँगिया आ लाल चोलिया।। कि होरी खेल'...

रूपक तालक आधार लैत ढोलकक गुमकी—

धी धीना धीना धीना तीतीना तीना तीना... चलैए।

अरे! सा...रा...रा... रा... मोर भइया! सारा... रा... रा...।

प्रश्न— अरे! कहाँ के बड़दा खमखम नाचइ
कहाँ के दुधगरि बाछी? अरे, कहाँ के बड़दा...
अरे! कहाँ कें छौंड़ी चतुर-गोरी
गमगम लौंग-अड़ाँची? जोगीजी सा... रा...रा...रा...

उत्तर— अरे सा...रा...रा...रा...हो जोगीजी! सा...रा..रा..रा...
उतरक बड़दा खमखम नाचइ
पछिमक दूधगरि बाछी।
भइया उतरक बड़दा...
अरे, टीसनक कातक छौंड़ी चतुरी
गमगम लौंग-अड़ाँची!! जोगीड़ा सा... रा... रा... रा...

आ एहि जोगीड़ाक सवाल-जबाव पर रामसुन्नर भाइ झालि झमकाबैत नचिते छथि कि ताबत डम्फा पर तड़ाक चाटी दैत गोबरधन भाइ जोति दैत छथि :

'कहमा गोदेलह गोदना गोरी कहमा...
बहिया गोदेलिऐ हे पहुँची गोदेलिऐ
बाँकी रहल दुनू जोबना।। हे गोरी कहमा...
गोदना गोदेलह त' बड़ा मजा अएलह... बड़ा मजा अएलह हे...
(आब) पियाके पलंगिया पर रोदना।। हे गोरी कहमा...

होरी ओ फागुन गीत जँ ढोलक-नाल एवं डम्फाक संगतिमे, मंडली द्वारा गाओल रचना गेल अछि, से खाहे जहिया आ जकरा द्वारा निभाओल गेल। निम्नोक्तिकेँ देखल जाए :

प्रश्न— 'कै हाथकेँ धोती-नूआ, कै हाथकेँ फेटा? भैया कै...
कैक घाटकेँ पानि पिबै छह कै बाप के बेटा?

उत्तर— दस हाथकेँ पानि धोती-नूआ, पाँच हाथ के फेटा!
घाट-घाट के पानि पिबइ छी, एक बाप के बेटा।।'

भइया, सा... रा... रा... रा... रे मोर भइया...

उपरोक्त जोगीड़ामे 'धोती-नूआ' केर बदलामे भोजपुर दिस 'जामा जोड़ा' सुनने छी।

हमरा गाममे छठम-सातम दसक (गत-सदी) मे एकटा नौटंकी पार्टी चलैत छल, से शुभकार्य सभमे पहुँचि कए तीन-तीन, चारि-चारि रातिक खेला साटा-साइ पर करैत छल। तकर एकटा खूब छटछट तेज कलाकार छलाह— विश्वेश्वर उर्फ बिसाइ भाइ। जेहने तेजस्वी बिपटे करथि, तेहने विलक्षण ढोलक बजाबथि।

से, हुनकहि संकेत पर हम किछु सिनेमाक गीत गाएब आ चारि हाथ ढोलक बजायब सीखने रही (पाँचम-छठम-सातम किलासमे पढ़बाकालमे)। ओही बिसाइ भाइक मुँह सूनल एकटा मेंही आ मोनलग्गू जोगीड़ा मोन पड़ैछ, तकर बोल एना छलैक :

'कै ताल पर ढोलक बाजै, कैक

ताल पर तासा?

कोन ताल पर जानी नाचै, सउँसे नगर तमासा? सा... रा... रा... रा...

'तीन ताल पर ढोलक पर बाजै, छव ताल पर तासा।। भइया तीन ताल पर...

टकाताल पर जानी नाचै, पइसे के तमासा।।' भइया सारा... रा... रा...

वास्तव मे ई 'टका-ताल' आ 'जानी' की होइछ से ओही अवधिमे पहिले पहिल अपने पड़ोसिया गाम-कोठियामे देखने आ किछु बुझने रही।

मोन पड़ैए– ताहि दिनमे गाँधी, जमाहिर लाल, अंगरेजी सरकार तथा रेलगाड़ी आदि पर केन्द्रित जोगीड़ा खूबे लोकप्रिय छल, तकरा सभक चर्चो आब कतहु नहि सुनैत छी। बिला गेल सबटा! ने ओ लोके आ ने गौनिहार-बजौनिहार रहल आ ने तकर महिरम बुझनिहार लोके रहल। कहि सकैत छी– ने ओ देवी, ने ओ कड़ाह!

व्यथाक बात ई थिक जे 'चत्कार' 'कहौती' आ 'फकड़ा' केर संरक्षण (किंवा पाठ्यक्रममे शामिल भ' गेने किताब-बिक्रीक आमदनीकेँ ध्यान करैत) हेतु गोटेक दर्जन पोथी उपलब्ध अछि, मुदा कविशेखर ज्योतिरीश्वर कृत वर्ण रत्नाकरमे चर्चित 'प्रतिगीत श्रेष्ठ उदाहरण ई जोगीड़ा मरि-हरिक' बिला गेल, ताहि पर एकटा अठपनियो बुलेटिन सन पुस्तिका नहि अछि बाजारमे। परिणामतः एकसँ बढ़िक' एक मूल्यवान लोकविधा सभक बीचसँ विलीन भेल जा रहल अछि। दहाएल-भसिआएल जा रहल अछि। सम्भव जे निकटे भविष्यमे एहू वस्तु सभक नाम पर हमरा सभक सामाजिक संस्था सभ एक मिनटक मौन राखि हार्दिक संवेदना प्रकट करए।

•

अमित भारद्वाज

दलान

पोखरि मोहारक
घरक छत परसँ
ताकि रहलहुँ
दलानक टूटल ठाठ आ
ओहि पर पसरल वनलत्ती दिस

जाहि ठाम होइत छल कहियो
गप्प न्यायक
अन्याय पर विजयक
ताश-तमाशा
कविता, साहित्य आओर साधना
समाजक लेल
शीश ल' ठाढ़ रहैत छलाह लोक

बनैत छल योजना
सामाजिक सरोकारक
गरीब-गुरबाकक लेल
तय होइत छल
दिशा-निर्देश

आलमीरा फोलिक'
बाबा दैत छलाह चौबनिया लेमनचूस
आ ललका टुकड़ासँ
बान्हल दस्तावेज लगैत छलाह पढ़य
पढ़ैत काल भ' जाइत छलाह विभोर
जखन उलटि अबैत छल
केबाला कयल दस्तावेजक
कैथीसँ लिखल पन्ना

अबैत छलाह पाहुन
चारूकात लोकक
मध्य होइत छल
शास्त्रार्थ
आ संगहि
बजैत पुक्कीक बरसातसँ
होइत रहैत छल चहल-पहल
खरिहानमे राखल
बासमती धानसँ
गमगम होइत छल
गामक सीमान

मुदा
आब दलान पर
बाँचल छैक
मात्र पुरना हड़ौती बाँसक कोरो
सुन्न छैक दलान ओहिना
जहिना कुनू सोहागिनक
उजड़ल सीउथ
आ गहनसँ झाँपल
पूर्णिमा रातिक चान
सिहकि रहल बसात
एहि निशाभाग रातिमे
कहि रहल जेना
ई दलानक वर्तमान स्वरूपे मात्र नहि
समाजक संस्कृतिक भविष्य थिक!

•

सम्प्रति : विधि विषयमे अध्ययनरत, दिल्ली,
मो.- 9771759753

मिथिलाक संस्कृतिमे परिवर्तनक रूप

मिथिलेश कुमार झा

मैथिलीक निर्भीक सेवक, कवि, कथाकार, निबंधकार मिथिलेश कुमार झा जगत (बेनीपट्टी, मधुबनी)क मूलवासी, सम्प्रति कोलकातामे रहैत छथि। 'टीस' (लघुकथा संग्रह) आ 'सोना आखर' (बाल कविता-संग्रह) प्रकाशित तथा एकटा कविता-संग्रह प्रेसमे छनि। 'अन्हरजाली' (नाटक) मंचित अप्रकाशित छनि। विभिन्न विधाक हिनक विपुल रचना पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित। पत्रकारितामे रुचि रखनिहार मैथिलीक हितचिंतक ई रचनाकार पेशासँ शिक्षक छथि।

सम्पर्क : कोलकाता

मोबाइल - 968150557

परिवर्तन सृष्टिक आधार अछि आ से पल-पल घटित होइत रहैत अछि। सृष्टिक कोनो अवयव एहिसँ फराक नहि रहि सकैछ। परिवर्तनक बिना जीवन ओ प्रकृतिक कल्पनो नहि भए सकैछ। ई परिवर्तन ज्ञान, अनुभव, अनुभूति, प्रयोजन, प्रयोग, समय आदिक सापेक्ष होइछ। बहुत रास परिवर्तन सार्थक होइछ आ बहुत रास निरर्थक किंवा अनावश्यक। सार्थक परिवर्तन जीवनक प्राण होइछ।

नजरि खिरा कए देखि त' सभ्यताक आरम्भहिसँ मानवजीवनक परिवर्तन स्पष्ट रूपेँ सोझाँ अबैछ। आ से पहिरन-ओढ़न, खान-पीन, रहबाक तरीका, सामान्य व्यवहार, मनोरंजन, दैनिक व्यवहारक वस्तुजातक प्रयोग, सामूहिकतासँ निजता दिस क्रमशः बढ़ैत प्रवृत्ति आदिमे साफ-साफ देखार होइत अछि। हँ, तहन ई बात फराक जे एकर गति आरम्भिक कालमे मंथर छल जे क्रमशः तीव्र होइत गेल आ औद्योगिक क्रान्तिक बाद त' बहुत बेसी तीव्र भए गेल। लेकिन तकर बादो, खास कए मिथिलाक संदर्भमे ध्यान दी त' परिवर्तनक गति जतेक तीव्र पछिला 50-60 बर्खमे भेल अछि से पहिने कहियो नहि भेल छल। आ ई तीव्रता जेना निरंतर आओर अधिकाधिक बेसिये भेल जा रहल अछि।

एहिठाम हमरा मिथिला संस्कृतिमे परिवर्तनक रूप पर विचार करबाक अछि। उल्लेखनीय ई अछि जे सभ्यता आ संस्कृति अन्योन्याश्रित अछि। एकक परिवर्तन दोसरकेँ मृत्यु पर्यन्त मनुक्खक समस्त व्यावहारिक क्रियाकलाप, सोच आ जीबाक ढंग संस्कृतिक अधीन अछि।

एहिठाम हम सभसँ पहिने लोक आस्था ओ विश्वास पर गप्प करब। मिथिलाक मूल आस्था आ विश्वास वेद अथवा सनातन धर्म, तान्त्रिक मत आ लोकधर्मसँ प्रभावित अछि। ताहूमे लोकधर्मक महत्व सबसँ अधिक। एहिठाम 'लोकवेद' केर मान्यता प्रबल अछि। अर्थात पहिने लोक तखन वेद। एहि तीनू क्षेत्रमे समय-समय पर भेल परिवर्तन एहि ठामक आस्थामे परिवर्तन अनलक अछि। जेना सनातन धर्ममे वैदिक कालमे जे देवता लोकनि रहथि, बादमे चलि क' ताहिमे बढ़ोत्तरी भेल। कइएका टा नव देवी-देवता अबैत गेलाह। अवतारवादक मान्यता दृढ़ भेल। तंत्रमे नव प्रयोग, चलनसार आ भेद सब भेल। खास कए सिद्ध सन्त लोकनिक प्रभाव बढ़ल। एकर सभक परिणामे मिथिलाक संस्कृतिमे आस्थाक क्षेत्रमे बेस परिवर्तन भेल। हँ, तंत्रक क्षेत्रमे वाममार्गी तंत्रक चलनिसारि मिथिलामे बहुत सीमिते रहल आ समाज ओकरा स्वीकार नहि केलक। तहिना लौकिक धर्मक क्षेत्रमे नित नव-नव लोकदेवता आ देवी सब पूजित होइत रहलाह/रहलीह। एखनो ग्रामदेवता, डीहवार लोकदेवते होइत छथि। कुलदेवता या कुलदेवी सेहो लोकदेवते आ तान्त्रिक देवी होइ छथि। हँ, समय-समय पर कोनो खास देवी-देवताक चला-चलती सेहो देखबामे अबैत रहल अछि आ एहि श्रेणीमे गाछ पर्यन्त सम्मिलित अछि। जेना संतोषी माता, वृहस्पति देव, महुआ गाछ आदि। तहिना पंचदेवोपासक मिथिला शैव, वैष्णव आ शक्त सम्प्रदायमे

सेहो विभक्त भेल। वैष्णवमे पहिने सीतारामक उपासक छलाह आ पछाति राधाकृष्ण केर उपासक सेहो होमय लगलाह। कृष्णभक्तिक अनेक सम्प्रदायमे एहि ठाम गौड़ीक सम्प्रदायकेँ अपनाओल गेल।

मिथिलामे जैन धर्मक प्रभाव सेहो कोनो समयमे पर्याप्त रूपेँ छल। तकर प्रमाण अछि एहि ठाम विभिन्न जैन मुनि, साध्वी आ कइएक टा जैन तीर्थंकरक प्रादुर्भाव। मुदा वर्तमान कालमे एहिठाम जैनी लोकनि दुर्लभ छथि। जखन बौद्धक चलाचली रहै त' मिथिला सेहो ताहिसँ अप्रभावित नहि रहि सकल। मुदा मिथिलेक विद्वान आ दार्शनिक लोकनि बौद्धक प्रभावकेँ नगण्य करबामे महान भूमिका निमाहने छलाह। एखन मिथिलाक विभिन्न ठाम बुद्धक मूर्ति सभ विभिन्न सनातनी देवी-देवताक रूपेँ पूजित छथि। मुदा बौद्ध मतावलम्बी मिथिलामे एखन दुर्लभ। एहिठाम कबीर पंथकेँ माननिहार पर्याप्त मात्रामे एखनो छथि। मुदा सामान्यतः हुनका लोकनिक आस्था कबीरक संगहि आन देवी-देवता सभ सेहो छनि।

भारतमे जखन इस्लामक आगमन भेल त' मिथिला सेहो ताहि प्रभावसँ बाँचि नहि सकल। मिथिलाक समस्त कोन्हमे मारिते रास लोक विभिन्न कारणे इस्लाम अपनौलनि। हिनका लोकनिक धर्म ओ संस्कृतिमे मौलिक परिवर्तन भेल। मुदा ई लोकनि अपन पूर्वक संस्कृतिसँ साफ भ' क' कटि गेलाह से बात नहि भेलै। अपना जीवनमे कइएक टा पुरना वस्तु रखनहि रहलाह। जेना स्त्रीगण द्वारा नूआ, सेनूर ओ चूड़ीक बेबहार। हँ, आँगी ई लोकनि भरि देहक पहिरै जाइ छथि। मुदा बुरकाक प्रयोग बिरलाएके होइत अछि। तहिना पुरुख लोकनि लूंगी आ पेजामा अपनौलनि, लेकिन किछु-किछु लोक धोतियो पहिरैत रहलाह। शासक वर्गमे मुसलमान रहने फारसीक प्रयोग राजकाजमे होमय लागल, फारसी रोजी-रोटीक भाषा भए गेल आ आन भारतीय भाषा सब जकाँ मैथिलीकेँ सेहो प्रभावित कएलक। मैथिलीमे मारिते रास फारसीक शब्द, उपसर्ग आदिक बेबहार होमय लागल आ मुसलमान ओ फारसी संदर्भित अनेक मोहाबरा ओलोकोक्ति प्रचलित भेल। मुसलमान लोकनिक दाहा हिन्नूक लेल सेहो ओहने पूज्य भए गेल। दाहा हिन्नूक दलाने-दलान घूमय लागल आ हिन्नू लोकनि दाहा पर चढ़ओना चढ़बए लगलाह तथा दाहाकेँ कबुला करए लगलाह। मुसलमानक मजार हिन्नू लोकनिक सेहो तीर्थ भए गेल। मीरा सुलतान किंवा सुलतानी माता दुनूक समान रूपेँ पूज्या भेलीह। मुसलमानक आगमनसँ पर्दाप्रथाक आरम्भ भेल जे कमोबेश एखनो धरि अछिये। गोदना गोदेबाक परम्परा सेहो इस्लाम अएलाक बादे भेल जे आब जा कए अपन अन्तिम साँस गनि रहल अछि। ओना गोदनाक आधुनिक रूपक चलनसारि सेहो पसरि रहल अछि। मिथिलामे पुत्रक जन्म पर पमरिया नाचक परम्परा छै। पमरिया लोकनि मुसलमाने होइ छथि। मिथिलाक खानपीन पर सेहो मुसलमानक प्रभाव पड़ल। सेबइ केर खीर त' संतोषी माताक प्रसाद आ हुनक व्रतक उद्यापनमे प्रधान वस्तु बनि गेल। पराठा भोजनक एकटा प्रमुख वस्तु बनल। मुर्गा खेबाक चलनसारि आस्ते-आस्ते आम भ' गेल अछि। तहिना आब चिकबाक काटल खस्सीक हलाली सेहो अधिकांश हिन्नू लोकनि खाए लागल छथि। ई बात फराक जे मुसलमानमे एखनो झटका प्रचलित नहि छै। खानपीनमे अल्लू, टमाटर आदिक प्रचलन सेहो मध्यकालक बादे भेल अछि। तमाकू सेहो अल्लूएक समयमे प्रचलित भेल। मुसलमानक आगमनक एकटा पैघ प्रभाव पहिरना पर सेहो पड़ल। सियाओल वस्त्रक उपयोग वर्जित छलै। मुदा मुसलमानक देखाँउसे कुर्ता सिया कए पहिरबाक प्रथा चलल। मिथिलामे एखनो कपड़ा सीबाक उद्यममे मुसलमाने लागल छथि। वर्जित त' जोड़ल काठक उपयोग सेहो छलै। धरि ताहि रेबाजकेँ लोक तेजि देलक।

औद्योगिक क्रान्ति, खोजी प्रवृत्ति ओ यूरोपीय राष्ट्रवादक धधराक कारणे यूरोप आ विशेषतः अँग्रेजक प्रभाव पूरे विश्व सहित मिथिला पर सेहो पड़ल। भारतमे अँग्रेजी राजक फलस्वरूप रेलवेक विकास भेल। आबाजाही सहज भेल। पक्की सड़क बनल। अँग्रेजी स्कूल फुजल। लोक अँग्रेजी पढ़य लागल। विश्व नव ज्ञान सब अँग्रेजीक माध्यमे मिथिलामे आबय लागल। लोकक पहिरन-ओढ़न पर अँग्रेजक प्रभाव पड़लै। मैथिली भाषा सेहो अँग्रेजीसँ प्रभावित भेलीह। बहुत रास अँग्रीजी शब्द मैथिलीक खास भए गेल। अँग्रेजी नववर्ष एकटा पावनि जकाँ भए गेल अछि। जन्मदिन मनेबाक परम्परा मिथिलामे नहि छल से चलि पड़ल आ ताहिमे केक काटब एकटा मुख्य विधान भए गेल। मुदा इसाई धर्मक प्रभाव एहिठाम नहिए जकाँ पड़ल।

मिथिलाक परम्परामे बहुत रास एहन लोकविश्वास छल जकरा अन्धविश्वास कहि सकैत छिऐ आ जे समाजक विकासमे बाधक छल। समयक संग एहन बहुत रास मान्यता खतम भए गेल किंवा आब नामे लेल रहि गेल अछि। एहन किछु केर चर्चा हम करय चाहब। जेना यात्राकाल टाककेँ अधलाह मानब, छिक्के नहि बहरायब, भदबा लागब, भूत-प्रेत आ डाइन-भगताक मान्यता, मंत्र-तंत्र आ झाड़-फूक पर विश्वास आदि। कइएक बेर त' एहि सभक कारण जान पर खतरा आबि जाइ छलै। हैजा, कोदबा या चेचक आदिकेँ आब दैविक प्रकोप नहि मानल जाइछ। धियापूताकेँ पाच दिअयबाक आकि पचबयबाक प्रथा सेहो नहि रहल। ई सब बहुत हद धरि बदलि गेल। तहिना किछु जातिमे विधवा विवाह अधलाह मानल जाइ छलै, मुदा आब नहि। बालविवाह, अनमेल

विवाह ओ बहुपत्नीक रेबाज सेहो उठल। विधवाक जे दयनीय स्थिति छल से बदलल अछि। विवाहमे काटर-दहेज सेहो कम भेल अछि। सबसँ पैघ बात जे समाजमे किछु जातिसँ छुआ जेबाक जे प्रथा छल से सार्वजनिक रूपेँ त' खतम भए गेल, व्यक्तिगत रूपेँ सेहो कमजोर भए गेल अछि।

समाजक लोकव्यवहार सेहो बदलल अछि। समाज आ श्रेष्ठक जे लेहाज पहिने छल से आब नहि रहल। श्रेष्ठजनकेँ पएर छूबि गोड़ लगबासँ एखुनका नवतुरिया बाँचय चाहैत अछि। सामाजिकता आ सामूहिकता केर भावना बहुत कमजोर भेल अछि। बूढ़-बूढ़ानुसक मोजर बहुत घटल अछि। अतिथिक सत्कार समस्त समाजक काज कम आ पारिवारिक काज अधिक भए गेल अछि। लोक-लोकमे आब ओ सलुकता नै रहल। बाट चलैत बटोहीसँ आब नै करैत अछि। नगरीकरण, गामसँ पलायन आ आधुनिकताक उजाहिमे समाजक विभिन्न जातिक माझ जे एकटा पारम्परिक सरोकार छल ताहिमे सेहो बेस ह्रास भेल अछि।

जखन हम किछु प्राप्त करैत छी त' किछु छूटि सेहो जाइत अछि। एहन होइत लइए आ होइत रहतै। औद्योगीकरण ओ मशीनीकरणक कारणे बहुत रास सुविधा आ आराम भेटल। जीवन अधिकाधिक सहज भए गेल। अपेक्षाकृत कम समयमे आ कम लोक द्वारा अधिक काज होमय लागल। मुदा ताहि कारणे बहुत रास चलनसार आ बेमार सेहो बदलि गेल। जेना बटगमनी, लगनी आदि गीत, बड़दक दाउनि, करीन पटायब, चूड़ा कूटब, धान कूटब, कोल्हुआड़ आदि। मन राखी जे ई सभ क्रियाक संग संस्कृतिक बड़ घनिष्ठ रूपेँ जुड़ल अछि। तहिना महफा-खरखरिया-सम्फनी, बैलगाड़ी आ ताहिमे ओहार तर जाइत नवकनियाँ सेहो आब नहि भेटतीह। विदागरीक दिन मनायब आ दिन फेरब तथा लेआओन करा बेटीकेँ आनब आ छओ मास-बरख दिन नैहरमे राखब आदि आब खिस्सा भए गेल। भगिनमान ने बसेनहार भेटत आ ने बसनिहार।

माल-जाल नगण्य भए गेल त' ओकरा सम्बन्धी मारिते रास ज्ञान, पावनि, स्नेह आ मान्यता सेहो खतमे भेल जा रहल अछि। तहिना ओकर उपयोग सम्बन्धी वस्तु सभ सेहो आब धरोहर भए गेल।

लोक ओ पारम्परिक गीतमे मिथिला बहुत समृद्ध रहल अछि। एहि मामिलामे कोनो सांस्कृतिक समाजक लेल एकर मोकाबिला करब कठिन। मुदा सेहो आस्ते-आस्ते क्षीण भेल जा रहल अछि। चन्दा झा जतेक तरहक लोकराग आ भासक चर्चा केने छथि ताहिमेसँ लगभग 60-65 टा त' 40-50 बर्ख पहिनहि अलोपित भए गेल छल। शेष प्रचलित 60-70 गोट राग-भासमे आधासँ अधिक अन्तिम अवस्थामे अछि। किछु त' साफे खतम भए गेल। लगनी, बटगमनी, पचनियाँक गीत, गोदना गीत, निर्गुन आदि आब भेटब दुर्लभ। तहिना पमार, ग्वालरि, तिरहुत आदि आब जएह दिन अछि सएह दिन। धियापूताकेँ मलारी गाबि आब के सुतबैत अछि! खिस्सा त' एहिठामक कहल नहि जाए। किछु आखर मात्रसँ लए भरि-भरि राति धरि कहल सुनल जाएवला खिस्सा सब। मुदा इहो परम्परा समाप्त भए गेल। भरि साल विभिन्न पावनि-तिहारक कथा-कहिनिक आयुर्दा सेहो लगिचिआएले अछि। मैथिली लोकगाथाक गायन आ मंचनक परम्परा सेहो आब नहि रहल। तहिना विभिन्न लोकनाट्यक परम्परा सेहो उठि गेल। एहि सभक बदला पहिने टेप, टीवी, वीसीआर, वीडियो, सिलेमा आ आब आरकेस्ट्रा, इंटरनेट पर परसाइत विभिन्न सामग्री आदिक चलनसार।

लोकक खानपीन आ पहिरन-ओढ़न सेहो परिवर्तित भेल अछि। भात, दालि, तरकारी, चटनी, अचार, तरुआ, दही, दूध, घी, साग, बड़-बड़ी आदि मिथिलाक मुख्य भोज्य वस्तु छलै। विशिष्ट रूपेँ फुलकी (गहूमक रोटी), पूड़ी, सोहारी, मालपूआ, खीर, पोछुआ-पू, सकरौरी, मानक खीर आदि सेहो। मड़ुआ, मकइ, चाउर आदिक रोटी, साम, चीन, कोदो आदिक भात, अल्हुआ आदि सेहो सामान्य भोजन छल। सामिष भोजनमे माछ मुख्य छल। बलिप्रदान वला छागरक माउस लोक खाइ छल। परबा, पौरकी, सिल्ही, बगेरी, साही आदिक माउस सेहो साइत संजोगे खाएल जाइत छल। रातिक बाँचल भोरमे बसिया लोक जलखै रूपेँ खाइ छल, नहि त' चूड़ा-दही प्रसिद्ध छल। बेरहटियामे दिनका बाँचल भोजन अथवा फुटहा, मुरही, माढ़ आदि लोककेँ प्रिय छलै। अगहन मासमे त' लाइ-मुरहीक खास चला-चलती रहै छल। आ से विन्यास मौसम आ स्वास्थ्यक अनुकूल छलै। आब त' कोनो गाममे कन्सारो भेटब कठिन। आब गहूमक रोटी मुख्य भोजनमे सम्मिलित भए गेल अछि। बासि-बेरहटक सामग्री सेहो बदलि गेल अछि। आब मुर्गा, अण्डा आदि से खाली मुसलमानमे प्रचलित छलै से अधिकांश लोक खाइ छथि। आ ताहि संगहि भारतक विभिन्न प्रदेशक भोज्य वस्तु खेबाक प्रचलन सेहो भेल अछि। जेना— इडली, डोसा, सांभर, उतपम, हलुआ, पराठा, पापड़, सेबइ, नूडल्स, चाउमीन, पोलाओ आदि आ से अधिकांश खास कए लजखइमे। हँ, मधुर खेबाक रेबाज अनामति अछि। मधुरक प्रकार सेहो बढ़ि गेल अछि। बहुत रास पारम्परिक भोज्य वस्तु लोक सओख सेहन्तासँ खाइत अछि। मधुरक संस्कृतिक खान पान आ मखान अमन महत्व धरि एखनहु रखनहि अछि। दुनूक उपयोग दैनिकसँ लए विशिष्ट अवसर पर एखनो होइछ।

मिथिलामे पहिरन-ओढ़न सेहो खूबे बदलल अछि। मुसलमानक एलाक बाद सियाओल वस्त्र पहिरबाक रेबाज भेल।

पुरुख लोकनि कुर्ता, मिरजइ गोल गंजी आदि पहिरय लगलाह। पछाति पैजामा, लूंगी आदिसँ सेहो परहेज नहि रहलनि। अंग्रेजक देखादेखी बुस्सट, पेंट, कोट, टाइ, सूट, सैंडो, टीशर्ट आ आर अनेक तरहक परिधान। पाग, पगड़ी, टोपटा आदि त' आब अवसर विशेषक शोभा रहि गेल अछि। स्त्रीगण सेहो आँगी, कुर्ती, समीज, सलवार, घघरी, लहँगा, पेंट, शर्ट आदि पहिरय लगलीह। ओना स्त्रीगणक मुख्य पहिरना एखनो नूआ सएह छनि। हालाँकी आब ओ लोकनि सुनटा आँचर कम आ उनटा आँचर बेसी पहिरै छथि।

आब पुरनका अधिकांश गहना सेहो उठिए गेल अछि। महिला लोकनिकेँ बुलकी, बाजूबन, सूति, पाइत, काड़ा, अगेली-पिछेली-बिचेली, मोहर-माला, रुपैया छड़, माकड़ी डँड़कस आदि पहिरने नहि देखबनि। आब मंगलसूत्र, झुमका, रंग-बिरंगक हार आदिक चलनसारि भेलैए। हँ बाली, छक, नथुनी, पायल, बिछिया, औंठी आदि एखनो चलै छै। महिला लोकनिक पुरनका केस विन्यासक बदला नव-नव तरीका सब विभिन्न माध्यमे आएल अछि। तहिना पुरुख लोकनिमे प्रचलित कनौसी, कुंडल, मट्ठा, हलुमानी, काँड़ा आदि सेहो अलोपित भए गेल। पुरुख लोकनि त' मिथिलाक प्रसिद्ध त्रिपुंड सेहो छोड़ि देलनि। टीक सेहो आब कम्मे लोक रखै छथि। हँ तहन नव-नव फैसनक केस विन्यासक चलती जरूर अछि।

फैसनक मोह त' तेहन अछि जे नव-नौतार छुतिकोमे केस कटेबासँ कंछी कटै छथि। एही दुआरे कतेको नवछुरिया कटिहारी नहि जाए चाहैत अछि। आब अनुमान लगा सकै छी जे छुतिकामे जे तेल, साबुन आ शृंगार वर्जित छल तकर की अवस्था होएत। श्राद्धकर्म सोड़ह टा संस्कारमे अन्तिम संस्कारक बादक क्रिया थिक। एहिमे सेहो शास्त्रीय विधिसँ बेसी प्रदर्शन बढ़ल अछि। भोज-भातमे खूब खर्च कएल जाइछ आ एकरा सामाजिक सम्मानसँ जोड़ल जाइछ। हँ, तखन मृत्युभोजक विरोध सेहो कतहु-कतहु आरम्भ भेल अछि। किछु वर्गमे छठिहार, विवाह आ अन्तिम संस्कार आ किछुमे मूड़न आ उपनयन सेहो मुख्य रूपेँ ततबे। ओना उपनयनमे किछु आओरो संस्कारक बिध पूरा देल जाइछ, धरि सेहो अधिकांशकेँ बुझल नहि। प्रदर्शन आनो संस्कार सभमे बढ़ल अछि। पारम्परिक बिधसँ बेसी प्रदर्शनक महत्व। 'वैवाहिक वर्षगाँठ' सेहो आब लोकप्रिय भेल जा रहल अछि आ एहिमे सेहो खूब खर्च-बर्च कएल जा रहल अछि। जे लोकनि अपन प्रचलित बिध-बेभारसँ अकछल रहैत छलाह, बोझ लगै छलनि सएह लोकनि आन-आन संस्कृतिक देखाँउस करै छथि, अपन परम्परा तेजि अनकर अपनबै छथि। आब शेरवानी, सूट आदि पहिरि विवाह होमय लागल अछि। जयमालक परम्परा बहुतो ठाम आरम्भ भेल अछि आ ताहिमे मारिते खर्च कएल जाइछ। आजन-बाजन केर चलनसार भेल अछि।

पावनि-तिहारमे आस्थाक कमी भेल अछि। पावनियो कम भए रहल अछि आ पावनिक संख्या सेहो घटि रहल अछि। आब ओ साबिक वला नियम-निष्ठा सेहो नहिये सन। गाममे लोकक कमीक कारणे गोसाउनि आ कुलदेवताक पूजा सेहो नहि भए पाबि रहल अछि। गामक डीहवार किंवा ब्रह्म बाबाक पूजाक प्रति सेहो आब पहिने सन उत्साह देखबामे नहि अबैछ।

भार-चँगेरा साँठि पठेबाक रेबाज त' खतमे भए गेलै जे ताहि संगहि टोल-पड़ोस आ हित-अपेक्षितकेँ बएन पठेनाइ सेहो प्रायः बन्ने भए गेल। बेटी-पुतहुकेँ विदागरी भए अएला-गेला पर टोल-पड़ोसक लोक द्वारा खएक देबाक परम्परा सेहो आब अपवादे जकाँ बाँचल अछि।

पहिने दसगर्दा या सामाजिक काज करबामे लोक अपन प्रतिष्ठा बुझै छल, सामाजिक काजकेँ अपन कर्तव्य बुझै छल। ताहि लेल परिश्रमसँ ल' धन सेहो खर्च करै छल, दान दैत छल। भूमिहीनकेँ घराड़ी द' बसाओल जाइ छल। मुदा आब सब अपनेमे मस्त। आब त' कौआ-कुकूरकेँ पर्यंत एक मुट्ठी ऐंठो अन्न देनिहार केओ नहि।

कोठी, ठेक, बखारीक बदला ६ ातुक ड्राम केर उपयोग भए रहल अछि। माटि, बाँस, काठ, सिक्की आदिक दैनिक उपयोगक वस्तु, जेना कोहा, खापड़ि, घैल, अथरा, पथिया, चँगेरी, मौनी, कठौत, ढाकन, दाबि, सरबा आदिक उपयोग सेहो नहि होइये आ एकर स्थान धातु किंवा प्लास्टिक लए लेने अछि। सेज, गोनरि, पटिया, सितलपाटी, चटगुनी आदिक बेभार सेहो कमल अछि आ बदलामे प्लास्टिक आदिक नव-नव वस्तु आबि गेल अछि।

अरिपन एखनो पड़ैत अछि, मुदा कोबर अधिकांशतः कागते पर बना साटि देल जाइछ। देबाल पर जे शोभाक हेतु लिखिया लिखबाक परम्परा छल सेहो बिरलैके देखबामे अबैत अछि। हँ मिथिला चित्रकलाक रूपेँ एकरा कागत आ कपड़ापर उतारि व्यवसाय जरूर भए रहल अछि आ से पैघ स्तर पर भए रहल अछि। एहि क्षेत्रमे व्यवसायसँ एहि चित्रकलामे प्रयोगक प्रवृत्ति खूब बढ़ल अछि आ आब पारम्परिक विषयक संगहि नव विषय ओ समस्या पर आधारित चित्रकला बनाओल जाइत अछि। मिथिला आ बाहर सेहो तैलीय रंगमे बहुत रास चित्रकारी विभिन्न भवन ओ देबाल सभ पर भेल अछि। मिथिलाक एकटा आओर चित्रकला मंजूषा चित्रकला एखन धरि अपन मूल रूपमे बाँचल अछि आ एकरा प्रोत्साहनक बेगरता छै। देखल जाए त' मिथिलाक बहुत रास पारम्परिक लूड़ि-भास आब नहि देखल जाइछ। जेना सुजनी बनाएब, कुरुस पर उपयोगी आ सजावटी वस्तु बनाएब,

सुइटर-गुलेबन्ध आदि बुनब, खजूरक पात आ रारी खढ़क उपयोग कए टाकु रेक सहयोगे चंगेरी, डाली, धुथरी आदि बूनब आ एहने अनेक लूड़ि-ढंग।

वास्तुकलाक क्षेत्रमे सेहो मिथिलाक अपन विशिष्टता रहल अछि। फूस, भीत, पक्का आदि घर किंवा मकान तथा मन्दिरक शैलीपर ध्यान दए एकरा नीकसँ अकानल जा सकैत अछि। फूस आ भीतक घर त' आब बहुत कम बनैत अछि आ जँ ओ बनितो अछि त' तकर आकार-प्रकारकेँ ठीकसँ अकानि बेकछायब कठिन होएत। किन्तु पक्का घर, कोठा आ मन्दिर पर कनिको ध्यान देबै त' ई सोझे स्पष्ट भए जाएत जे एहि सभक निर्माण शैलीमे मिथिलाक जे अपन विशिष्टता छलै से आब एकदम्मे नै रहल।

बहुत रास पारम्परिक खेलधूप सेहो नेना सभकेँ अपन संस्कृतिसँ जोड़ैत छल आ ओकर बहुमुखी विकासमे सहायक छल। एहिमे चोरानुक्की, रूमालचोरी, कबड्डी, सरोइयाँ, अटकन मटकन, टालगुल्ली, पचीसी आओर अनेक प्रकारक खेल छल। खेल सभसँ सम्बन्धित मारिते फकरा ओ शिशुगीत सेहो प्रचलित छल। मुदा पहिने क्रिकेट आ पछाति मोबाइल सभटाकेँ खा गेल।

सुखरातीसँ पहिने हूराहूरी आ जूड़शीतल दिन शिकार खेलेबाक संस्कृति त' उचिते समाप्त भेल। धरि सामाजिक मेलजोलक प्रसिद्ध पावनि फगुआ सेहो रंग-अबीरक पावनि कम आ खाए-पीबाक पावनि बेसी भए गेल अछि। तहिना जट-जटिन, सामा-चकेबा, झिझिया आदि खेलेनहारि सेहो बेस कमि गेल छथि।

अकानय वला बात त' इहो अछि जे बोलीक मधुरतामे सेहो बेस ह्रास भेल अछि। मैथिल समुदायमे हँस्सी-ठट्ठाक समृद्ध संस्कृति रहल अछि। एहि लेल अनेक सम्बन्ध आ अवसरक व्यवस्था मिथिलाक संस्कृतिमे कएल गेल अछि। सार-बहिनोइ, ननदि-भाउजि, सरहोजि-ननदोसि, सारि-बहिनोइ आदि त' सहजहिँ जे पुरुखक सासुरमे त' के ने हँस्सी मजाक क' आनन्दित होइत छल! छठिहार, मूड़न, विवाह, चतुर्थी, द्विरागमन, भरफोड़ी, बरियातिक स्वागत, बरियातिक भोजन, समधिक सौजन आदि अनेक एहन अवसर बनाओल गेल छल जे हँस्सी-मजाकक बिना भइये नै सकैत छल। एहि अवसर सभपर हँस्सी-मजाक लेल डहकन आ अन्य तरहक गीतक रेबाज सेहो बनल अछि। मुदा समयक चोट एतहु पड़ल अछि। एहिमेसँ बहुतो अवसरपर आब पहिने जकाँ चौल करबाक चलनसारि नहि रहि गेल अछि।

संस्कृति त' मिथिलामे कनबाक सेहो अछि। कनबाक ई संस्कृति बेटीक द्विरागमनक दिन मनाओल जेबासँ आरम्भ होइत अछि। बेटीक द्विरागमन काल बेटी, माए ओ परिजनक कानब सूनिकेँ धैर्य राखि सकत! बेटी जखन-जखन नैहर अबैत अछि आ नैहरसँ सासुर जाइत अछि त' बेस घाना पसारि कनैत अछि। आ से बड़ी दूर धरि कनिते रहैत अछि। दूरेसँ लोक बुझि जाइछ जे कोनो बेटीक विदागरी भए रहल अछि। ककरो-ककरो कानब त' प्रसिद्ध भए जाइछ आ बहुत दिन धरि मन राखल जाइछ। बेटी कनैत त' अछि नैहरसँ कोनो भेंटघटियोक गेलापर। किन्तु कनबाक ई परम्परा आधुनिकताक प्रभावेँ क्षीण भए गेल अछि। मेला-ठेलामे सेहो माए-पितियाइन भेटि गेने घेंटा-जोड़ी कए कनबाक जे दृश्य देखल जाइत छल सेहो आब दुर्लभ भए गेल। कनबाक एकटा स्वाभाविक क्रिया होइछ प्रियजनक मृत्यु भए गेने। मुदा ताहूमे द्वादशा दिन जखन 'घाट' परसँ श्राद्धकर्म खतम कए कर्ता अबै छथि आँगन तखन नियम क' कनबाक रेबाज अछि।

मिथिलामे बहुत रास मेला लगैत अछि आ से एक दिनक मेलासँ लए मास दिनक मेला धरि। विभिन्न मेलाक विभिन्न उद्देश्य आ महत्व। जेना सिमरिया मेला, कमला मेला, देवघरक मेला आदिक धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व छै। बहुत रास बड़द, महींस आदिक मेला लगैत अछि। किन्तु मालजालक उपयोगिता खतम भए गेने एहि मेला सभक महत्व घटल अछि। ओना सिंघियाघाटक साँप मेलाक महत्व अनामति अछि। चरौतक बड़दक मेला काठक वस्तुजात लेल एखनो प्रसिद्ध अछि। सिंघेस्सर स्थानक पशुमेलाक महत्व साबिक वला नहि रहलै।

ई विषय एकटा आलेख मात्रक नहि अछि। संस्कृति मनुक्खक परिचिति होइ छै। एकर सरूप विशाल होइ छै। ताहि पर मिथिला सन प्राचीन भूभागक सांस्कृतिक समृद्धि केर त' बाते अनूप अछि। तथापि एहिठाम हमरा लोकनि ई देखल जे वर्तमानमे मिथिलाक संस्कृति बहुत बदलि गेल अछि। एहि बदलल सरूपमे किछु त' आवश्यक छल। कारण एहिसँ अन्धविश्वास ओ पारिवारिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य बाधित होइत छलै। किछु परिवर्तन समयक प्रभावेँ भेल अछि। बहुत रास परिवर्तन दोसराक देखाँउसे, बड़प्पन केर लोभे, अज्ञानक कारणे, गौरवबोधक कमीक कारणे, प्रदर्शनक प्रवृत्तिक कारणे आदि सेहो भेल अछि। परिवर्तन स्वाभाविक मुदा ध्यान ई रखबाक चाही जे से ओतबे हो जाहिसँ संस्कृतिक मूल तत्व अनामति रहय आ हमर परिचिति पर बट्टा नहि लागय। जड़ि उखड़ि गेने कतहु कोनो मोजर नहि हएत आ हमरा लोकनि सूपक भाँटा भए रहि जाएब।

•

मिथिलाक उपासनामे लौकिक विधान

डॉ. महेन्द्र नारायण राम

मैथिली साहित्यक वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेन्द्र नारायण राम बिहार सरकारक शिक्षा विभागक प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारीक पदसँ अवकाश प्राप्त छथि। एखनधरि हिनक बियालिस गोट पोथी प्रकाशित छनि। हिनका 'कार्मेलीन' हेतु साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्राप्त छनि। एकर अतिरिक्त मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, मैथिलीश्री, साहित्य रत्न आदि सम्मानसँ सम्मानित छथि। पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना, सदस्य, मैथिली सलाहकार समिति साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली आदिमे अपन सेवा प्रदान कयने छथि।

सम्पर्क : खुटौना, मधुबनी, मो.- 9162205484

मिथिला, भारतीय वैदिक संस्कृतिक केन्द्रभूमि रहल अछि। एकरा सांख्य, योग दर्शन, न्याय ओ मीमांसाक क्षेत्रमे विश्व, अपन गुरु मानि लेने अछि। एकरा जड़िमे अछि– एकर लौकिक विधान, जे एहिठामक जन-जीवनमे आत्मसात अछि। ई अध्यात्मिक प्रवृत्ति पर आधारित अछि। बिना लौकिक विधानक कोनोहु कर्म, धर्म ओ उपासना सफल नहि भ' सकैत अछि।

कर्म मिथिलाक दश कर्म पद्धति पर आधारित रहल अछि। ई वेदसम्मत अछि मुदा व्यवहारमे लौकिक विधानकेँ ल' क' चलैत अछि। जेना– कोनो कर्म बिनु तील, कुश, गंगाजल, मधु मखान, पान, सुपारीक संभव नहि। प्रेत कर्ममे मत्स्य ओ मांसक अनिवार्यता रहैत अछि। तहिना तर्पणमे फल पवित्री ओ कुशक अनिवार्यता। उपनयन कर्ममे खिखिरक बीहरिकेँ पूजब, आम, महुक पूजा करब आ पानि काटब। श्राद्ध कर्ममे कटहरक पातकेँ पूरा बना ओहिसँ कर्म सम्पादित करब, गाय-दान करब, मरबा काल नांगरि धरा वैतरणी पार करब, मृत्यु पश्चात लहासकेँ तुलसी चौरा लग उत्तर सिरमे आँगनमे राखब, काँच बाँसक रंथी बनाक' श्मशान ल' जायब, कर्त्ता बाम हाथमे अग्नि प्रज्वलित गोरहा आ दहिन हाथमे नव कोहा, जाहिमे पाँच कौड़ी राखल रहैछ, ल' जायब, ओहि अग्निसँ कर्त्ता द्वारा अग्नि देव, वापस आब' काल पंचकठिया पाछाँ मुँहे फेकब, कुरहड़िक बेंट छोड़ा उनटा फेकब, जाहि रास्ते जाय ओहिसँ नहि अपितु दोसर रास्ते आयब, उत्तरी पहिरब, छरझप्पी करब, अरथी गंगामे विसर्जन करब अछि।

मिथिलाक आध्यात्मिक भाव भूमिक आधार धर्म थिक। एहि धर्मक तीन स्वरूप देखबामे अबैत अछि– स्वधर्म गृह आ उपासना धर्म। एकदिस सदाचारीकेँ सत्य भाषण करब, उपकार करब आदान प्रण्य करब स्वधर्म थिक त' दोसर दिस सन्ध्योपासना, व्रतउपवास, सत्य नारायण भगवानक पूजा शालिग्रामक पूजन, माटिक महादेव पूजन, सीरपाठ तुलसी चौड़ाक पूजन, हनुमत ध्वजा गाड़ब ओ ब्रह्मक पूजन गृह धर्मक अन्तर्गत अबैत अछि। यज्ञ, होम, जाप सेहो एहि कोटिमे अबैत अछि।

तेसर अछि– उपासना धर्म। एहिमे मनुष्य विभिन्न तरहक साधना ओ उपासनाकेँ द्वारा सिद्धिक प्राप्ति करैत अछि। मुदा से ई बिना लौकिक विधानसँ संभव नहि। यथा– शुभकार्यमे स्नान करब, नव वस्त्र पहिरब, डराडोरि आ जनेउ बदलब, शिखा बान्हब आदि। अन्नक भण्डारणक काल कोठी-बखारीमे तुलसी दल देब, भोज सामग्रीमे पहिने तुलसी दल देब, नित्यकर्ममे दहिना कान्ह पर जनेउ ल' आ जल ल' लघुशंका करब, भोजन कर'सँ पहिने पंचदेवताक नैवैद्य देब से जमीनपर नीचा राखब, चरणामृत अछि लौकिक विधान समस्त मिथिलामे पसरल अछि।

मूर्तिपूजामे जाहि माटिक मूर्तिकेँ प्राण प्रतिष्ठा द' पूजैत छथि तकरा पोखरि-नदीमे भसान क' देल जाइत अछि, जाहि सामा-चकेबाक पूजा पन्द्रह दिन धरि कयल जाइत अछि, ओहि सामा-चकेबाकेँ

कार्तिक पूर्णिमाक रातिमे मूर्तिकेँ मुँह ऐंठा अपन भाइक द्वारा ठेहुनसँ फोड़बैत छथि आ तकरा जोतलाहा खेतमे भसान क' देल जाइत अछि।

मूंज ओ कृष्ण मृग चर्मक जनेउ ब्रह्मणकेँ देबाक विधान अछि, पश्चात् भीख माँगबाक, मुदा से ओतबहि जतबासँ मात्र एक दिनक भोजन चलय।

गृहस्थाश्रममे दानक प्राधान्य रहल अछि। भोरसँ साँझ धरि भीक्षा माँग' वलाक क्रम चलैत रहैत अछि। जाहिमे ककरो खाली हाथ लौटेबाक विधान नहि अछि। एहिना तिला-संक्रांतिमे अन्न, वस्त्र, जुड़शीतलमे सातु ओ घटक दान, वैशाखमे जल ओ बदामक दान मुख्य रूपसँ अबैत अछि। अतिथिक भोजनोपरान्त जनेऊ-सुपाड़ी दान सेहो कएल जाइत अछि। कार्तिकमासमे एक मास धरि प्रातः स्थानक लौकिक विधान त' सतमीमे माथ पर साट आ बैरक पात राखि चुप्पा डूमक विधान अछि। नदी-वृक्ष-पक्षी-चन्द्रमा, सूर्य, बॉस पूजाक अतिरिक्त अग्नि, विष्णु इन्द्र, वरुण, सलहेस, अघोरी, दीनाभद्री आदि लोक देवी। देवताक अलग-अलग पूजा विधान अछि।

नागपंचमीसँ पन्द्रह दिन धरि मधुश्रावणी धरि नव-विवाहित ललना द्वारा हुंजक-हुंज फूल-पात लोढ़ब, नाग पूजा करब, नाग पंचमी दिन मूसक माटि, बंगौर ओ लाबा फेंटि, मंत्र पढ़ि छिटबाक बिधान अछि। चिकनी माटिसँ पाँचटा थुम्हा बनाओल जाइछ।

मिथिलामे चुमानकाल पाँचटा बिआहल लोक मंत्र पढ़ि दुर्बाक्षत देब, ओठंगर काल वर लगा क' आठ व्यक्ति ओ आठ चोट मारबाक आ तीन बेर सूत लपेटबाक विधान अछि। ठक-बक चिन्हबाक विधान अछि।

जे क्यो मंत्र नहि नेने छथि से सूर्य भगवानकेँ अर्ध्य नहि द' सकैत छथि। पोखरि-इनारकेँ शुद्ध ओ पवित्रीकरणक लेल ओकर बिआह संस्कार कयल जाइत अछि।

ग्रहण लागत त' अपन डोम गहनदान ओ अपन पसारी सभ पावनि-तिहारक अवसर पर पबनौट मंगैत छथि। उपनयनमे भड़बा पर माटिक पकाओल हाथी ओ कोबरमे गोबरक हाथीक अनिवार्यता, विवाहक पूर्णता वा अहिबातक प्रतीकक लेल माँगमे सिन्दूर ओ हाथमे लहठी, पैरमे बीछीया पहिरब विधवा भेलापर चूड़ी फोरब, माँग धोअब आदि लौकिक विधान अछि।

बट सावित्री दिन गाछ तर कनियाँ-पुतराक विआह आ नव बीयनिसँ लत्तासँ बनल वर-कनियाँकेँ हौंकब संगहि अंकुरी आ तेल परसबाक विधान अछि।

कोनो यात्राके निष्कंटक बनेबा लेल, सिरहर भरल जाइत अछि। यात्रासँ पहिने काल देखाओल जाइत अछि। नीलकंठकेँ विष्णु रूप मानि नमस्कार कयल जाइत अछि। सुग्गा पोसि ओकरा सीताराम-सीताराम पठेबाक लौकिक विधान अछि।

अकाल भेलासँ महिला लोकनि जट-जटिनक नाच ओ गीत गबैत छथि। कोन दिन मुँहक यात्रा करी तकर विवेचन अछि। दिकशूल देखल जाइत अछि।

किछु लौकिक विधानक फकरा सेहो प्रचलित अछि। यथा—

• चैतक गुड़ वैशाखक तेल, जेठक चलब अखाढ़क बेल, साओनक साग भादवक दही-वर्जित।

• कसिक' जोतिह' खेत, ऊँचकेँ बन्हिह' आरि।

तैयो जे खेत नहि उपज' डाक के पढ़िह' गारि।।

एहि तरहेँ लौकिक विधान मिथिलामे जीवन-क्रिया-कलापसँ जोड़ल अछि, जकरा मिथिलाक संस्कृतिसँ विलग मानव एकटा भ्रान्तिपूर्ण अवधारणा सिद्ध हएत।

•

गजल

विद्यानन्द बेदर्दी

दिग-दिगन्त धरि बाँचल रहए मिथिला
जग सुतलो रहए, जागल रहए मिथिला

इतिहास-फ्रेममे बनि अनुपम छवि एक
चमचम चमकैत साँजल रहए मिथिला

लागए नहि बैरीक नजरि-गुजरि हो रामा
नितहुँ चालनिकेँ चालल रहए मिथिला

मोन-मन्दिरमे पूजा धड़कनमे धड़कि
रगरग शोणितमे सानल रहए मिथिला

अन्तिम दम तोड़ि जँ हम पेटकुनिया द'
भरि भरि छातीसँ लागल रहए मिथिला

सम्पर्क : धरान, नेपाल

गजल

मैथिल सुमन 'हृदय'

एखन स्वार्थमे डुबल ई संसार छै
स्वार्थीक होइत सपना साकार छै

अपन ईमान, धर्मकेँ बिसरिक' एतय
सब केयो करैत स्वार्थक व्यापार छै

आत्मीयता आ मदतिकेँ नाम ल' क'
अपने सभ केओ करैत दुर्व्यवहार छै

पैरवी बिना मनुक्खक मनुक्ख
बुझै जेना समुच्चा जीवन बेकार छै

एहि स्वार्थी संसारमे परिक' बुझू जे
'हृदय'क मोन बनल जेना बेमार छै

लहान, नेपाल

आधुनिक सन्दर्भ मे 'रामेश्वर'क महत्त्व

डॉ.सुरेश पासवान

डॉ. सुरेश पासवान, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापक छथि। मैथिलीक विभिन्न पत्रिकामे निबन्ध, आलोचना आ कविता प्रकाशित छनि। डी.एल.एड- डायट, दरभंगामे पाठयक्रम पोथी लेखन नालंदा खुला विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर कक्षा हेतु अध्याय लेखन।

सम्पर्क :- 8051997405

धर्म आ कर्मकाण्डक कोखिसँ उपजल विकृति आ विडम्बना, वाह्य आडम्बर, अनाचार, व्यभिचार आ शोषण करबाक प्रवृतिकेँ देखार करैत बीसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक रूपमे पं. जीबछ मिश्र कृत 'रामेश्वर' उपन्यास तत्कालीन स्वार्थी समाजक कुकृत्यसँ परिचय करबैत अछि।

उपन्यासक माध्यम सँ उपन्यासकार सामाजिक जीवनमे व्याप्त कुरीति पर प्रकाश देलनि अछि। एहि मध्य भूखक आगिमे हेरायल विवेकक चित्रण भेल अछि। भूखक ज्वाला जखन उदर होइत मनुक्खक मन-मस्तिष्क धरि पहुँचि जाइत छै तखन विवेकशील लोकक विवेक सेहो कोना डोलि जाइत छैक, लोक कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यक विचार छोड़ि कोना कुमार्गक यात्री बनि जाइछ, तकरे ज्वलन्त उदाहरण थिक रामेश्वर उपन्यास।

मिथिलाक उत्तर भाग मध्य जनकपुरक समीप दुर्गापुर नामक एकटा सदगृहस्थ ब्राह्मण रामेश्वर एहि उपन्यासक नायक छथि। अपेक्षित, परउपदेशक समाज तथा जिज्ञासापरक लोकक दुराग्रह तथाकथित वाह्य आडम्बर पिताक श्राद्ध कर्ममे अत्यधिक व्यय होयबाक कारणे कतेको पड़ाय, उपटय पड़लनि तकर... चित्रण अछि एहि उपन्यासमे। एक दिन पाप तँ दोसर दिस प्रायश्चित एहि उपन्यासक विषय-वस्तुक स्वाभाविकतासँ परिचय करबैत अछि।

नरभक्षी समाज क्रूर पिशाच बनि रामेश्वरक सुख-समृद्धिकेँ गीड़ि लैत अछि आ समाजक एकटा सुखी-सम्पन्न पिताक परोक्ष होइतहि पुत्र आ पौत्रकेँ अहुछिया कटबा लेल विवश क' दैत अछि। तीन वर्षक अबोध नेना आनन्दमोहनक आसमर्द सुनि असमर्थ रामेश्वर बापक श्राद्धमे कर्जा देनिहारक नजरिसँ बचबाक लेल घर-घराड़ी बेचि गौरीपुर जाइछ। ओतय गौरीपुरक थानेदार रामेश्वरक उपयोग थानासँ भागल एकटा चोरक रूपमे करैत अछि। ओ अपन अक्षमताक दोषसँ बचबाक तथा लाभ पएबाक लेल ओकर उपयोग करैत अछि। जमीन्दारी छिना जयबाक डर सेहो एहि बेर छलैक। तेँ जहल काटि अथवा काल धरि परिवारक पालन-पोषण लेल पचास रुपया प्रतिमाह पर रामेश्वर अपन स्वीकृति द' दैछ। थानाक अपन केसकेँ आशंकासँ निशाभाग रातिमे चोरीक एकटा वस्तु चूल्हा लग गाड़बाक लेल रामेश्वरक घर जाइत अछि। पुत्रक बिछोहकेँ सहबामे असमर्थ सगर देह लोहा कड़ीसँ बेढ़ल रामेश्वर सिपाहीकेँ चकमा दए भागि, सोझे घरक कोनटा लग आबि ठाढ़ भ' जाइत अछि। नायबके घरमे घुसैत आ अपन कनैत पत्नी के केबाड़ बन्न करैत देखि अवैध सम्बन्धक अनुमान कए पत्नीकेँ लांछित करैत रामेश्वर अपन शेष जीवनक प्रति निराश भ' सभ अपराध कबुलि बीस वर्षक जहल पबैत छथि।

एम्हर पतिपरायणा पार्वती पतिक सेवा-सुश्रुषासँ बँचि जाइत छथि आ बबाजीक कुटीमे रहैत छथि। एहि दुनू घटनाक कारणक भागीदार नायबकेँ जखन अपन करनीक बोध होइत छनि तँ एहि जघन्य पापक

प्रायश्चित करबा लेल रामेश्वरक पुत्र जकाँ करैत छथि। पढ़ि-लिखि आनन्द मोहन डॉक्टर बनि जाइछ। बीस वर्ष जहल काटि घुमलाक पश्चात आनन्द मोहनकेँ नहि पाबि रामेश्वर परोपट्टाकेँ आतंकित करयबला डकैत गिरोहक सरदार बनि जाइत अछि। डकैतीक क्रममे आहत भेला पर आनन्द मोहन ओकर इलाज करैत छैक, मुदा ओ चीन्हि नहि सकल एक-दोसरकेँ।

रामेश्वरकेँ स्वस्थ भेल देखि गिरोहक आन सदस्य सभ ओकरा ओतय पुनः उठा कए ल' जाइत अछि आ फेरसँ डकैती कार्यमे लीन भ' जाइत अछि। एक दिन ओहि डॉक्टरक ओहिठाम रामेश्वर अपन दल-बलक संग डकैती करबा लेल जाइत अछि। गिरोह आन सदस्य डॉक्टरक कनपटीमे भाला-बरछी सटा दैत छैक। मुदा डॉक्टरकेँ चीन्हि गेलाक बाद रामेश्वर फराक भ' विचार करैत अछि। विगत बीस वर्षक घटनाक्रम डॉक्टरक समक्ष उपस्थित भेला पर डॉ. आनन्द मोहन पिताक पएर पर खसि अपन परिचय दैत अछि। पुनः पार्वतीसँ भेंट होइत छनि आ आनन्द मोहनक पत्नी तथा बाल-बच्चाक संग प्रसन्न।

रामेश्वर पत्नी पार्वती संग काशीवास करबा लेल चल जाइत छथि। आधुनिक सन्दर्भमे कहबाक अछि जे आइसँ लगभग एक सय पाँच वर्ष पहिने जखन ई उपन्यास लिखल गेल होयत, गानल-गुथल किछु साहित्य प्रेमीकेँ छोड़ि बाँकी समाजक ठेकेदार द्वारा पं. मिश्र अवश्य निन्दाक पात्र बनल हेलाह। एक तँ पहिल प्रयास आ ताहूमे विसंगतिक उद्घाटित स्वरूप। हमरा कहबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे बीतल कालमे मैथिली साहित्य दू पीढ़ी देखि चुकल, मुदा समस्या कम होयबाक अपेक्षा आओर अधिक बढ़िये गेलैक। सामाजिक जीवनमे व्याप्त कुरीति आ विसंगतिकेँ दूर करबाक उद्देश्यसँ जाहि मनोभावकेँ उपन्यासकार केन्द्रबिन्दु बना समाजक समक्ष रखलनि ओकर उल्टा प्रभाव समाज पर पड़लैक। लोक सबकिछु जनितो खाधिमे खसबा लेल आतुर भेल अछि।

चाहे कोनो समाज हो, प्रायः ई देखल गेलैक अछि जे समाजक शीर्षस्थ लोकक द्वारा पालित परम्पराक अनुशरण ओ अनुकरण समाजक नीचला पाँतिमे ठाढ़ लोक द्वारा होइत आबि रहल अछि। एहि तरहेँ देखल जाय तँ समाजक कोनो अंग एहिसँ अछूत नहि अछि। भूमंडलीकरण आ बाजारवादक प्रभाव जहिना लोकक आम जनजीवनकेँ प्रभावित कयलक साहित्य सेहो एहिसँ अबंच नहि रहल। एकर प्रत्यक्ष प्रभाव संस्कृति आ संस्कार पर पड़लैक। लोक भले चान-सुरूज पर जयबाक कल्पना करय, विडम्बना अछि जे आधुनिकताक दौरमे लोक जतबा आगू भागि रहल अछि ओतबे अपनासँ दूर जा रहल अछि। दैनिक जीवनमे सुख-सुविधाक जोगाड़क लेल अपन कहयवला इएह कारण रहल होयत, जाहि कारणे हरिमोहन बाबू मैथिली भाषी मैथिल नामकेँ अलंकारसँ विभूषित कयने छलाह जे— 'एक बीत टाट घुसकौला पर अपन सहोदरक घेंट छोपनिहार मैथिल।'

अहिना रामेश्वरक अबोध नेना अपन पितामहक श्राद्धकर्ममे फेकल माटिक बर्तनकेँ कुकुरक अवस्थामे पड़ल जर्जर लोक समाजक सुविधाभोगी सम्पन्न लोकक झूठ शान आ गुमानकेँ आँखि पसारि टकटकी लगौने निहारि रहल अछि।

अपनहिमे कुकुर जकाँ कटाउझ करैत ई नर-पिशाची समाज एक दोसरक मासु नोचबा लेल तेना उद्यत भेल अछि जे 'गिद्ध' शीर्षक कवितामे व्यक्त कवि अजित आजादक एहि भावसँ सहजहि अनुमान लगाओल जा सकैत अछि :—

'गिद्ध मुनक्ख तँ नहि बनि सकल
मुदा मनुक्ख गिद्ध भ' क' रहल।'

जखन परिवर्तन संसारक नियम छैक तँ परम्परामे परिवर्तन किएक नहि? मुदा आगू के बढ़य। जौँ किओ साहस करबाक सोचथि तँ दसक नजरिमे अधलाह कहाबथि। तखन तँ जहिना संसार चलैत छैक चलय दियौक। अपन नीक-बेजायक संग आबयवला भविष्यक लेल सोचब इहो दायित्व तँ लोककेँ बूझक चाही, कारण एकटा मनोवृति कतेको तरहक प्रवृतिकेँ जन्म दैत छैक। लोक द्वारा कयल गेल कार्यक जँ समाज द्वारा समीक्षा नहि हो, ओहना समाजसँ लोक की अपेक्षा क' सकैत अछि। एहन समाजके कोन संज्ञा देल जाय। द्रष्टव्य अछि "अजगुत अनटोटल" नाम पोथीमे कवि रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर'क भाव :—

'बेचि घरारी भोज करै छथि
आडम्बर नहि ओज करै छथि
कोलो सोझ, देयादक बखरा
तकरो नहि किछु लाज
मैथिलक अछि अलबौक समाज।'

पं. मिश्र जाहि सुधारवादी दृष्टिएँ एहि उपन्यासक रचना कयलनि तकर प्रभावसँ प्रभवित भ' भाषाविद डॉ. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन महोदय अपन प्रशंसा-पत्र 'रायल ऐशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयरलैंड'क जर्नल मे सन् 1919 ई.मे प्रकाशित करौलनि, मुदा दुर्भाग्य अछि जे एकर महत्वकेँ हमसब धरि नहि जानि सकलहुँ। आइ पं. मिश्र हमरा सभक बीच नहि छथि। नीके अछि जे नहि छथि, जौँ रहितथि तँ संतापे टा होइतनि।

मैथिली साहित्यमे कथ्य आ तथ्यक अभाव नहि अछि, जौँ मैथिललोकनि एहि विषय पर छटाको भरि अमल कयने रहितथि तँ मैथिली संस्कृते जकाँ विश्वक सभ भाषाक सिरमौर बनल रहैत आ मैथिलक संग मैथिलीक ई दुर्दशा नहि रहितैक।

•

छहर टूटतै, छहर-महर हेतै

सच्चिदानन्द 'सच्चू'

मैथिली, हिन्दीक प्रशिद्ध पत्रकार, कवि आ उपन्यासकार छथि। लोकगाथा पर हिनक शोधकार्य छनि।

सम्प्रति : इलेक्ट्रॉनिक मीडियामे कार्यरत छथि।

सम्पर्क : मो.- 7492031081

बाढ़ि अयलै। बाढ़ि एतै। बाढ़ि अबिते रहत ...मनुक्खक कोन वश जे एकरा रोकि लेत। से बाढ़ि एहू बेर आएल। अगिला बेर सेहो आओत। मुदा हमरा पहिनहिसँ ई बुझना जाइत रहल अछि जे बाढ़ि अबैत नहि अछि, अपितु आनल जाइत अछि। आ एहि बाढ़िकेँ अनबामे सरकारी तंत्रक महत्त्वपूर्ण भूमिका होइत अछि। खैर, एहि पर हम गप्प करब, मुदा कने विलमि क'। पहिने गप्प करैत छी एहि बेर आएल बाढ़िमे एकटा सकारात्मक परिवर्तन पर। एहि बेर आएल बाढ़िमे प्रशासन कने संवेदनशील बुझाएल। एहिमे सोशल मीडियाक भूमिका सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। नदीमे जहन पानि खतराक निशानसँ ऊपर बहय लागल तखनहिसँ सोशल मिडिया पर एकर अपडेट आबय लागल। तटबंध टुटलाक बाद सोशल मीडिया पर हाहाकार मचय लागल। लोक सभ सूचना देमय लगलाह जे एहिठाम बाँध टूटल त' एहिठाम लोक सभ फँसल छथि! एहि सभ सूचना पर प्रशासन तुरंत हरकतमे आएल आ युद्ध स्तर पर राहत आ बचाव कार्य शुरू कएल गेल। निश्चित रूपसँ सोशल मीडिया पर सक्रियताक ओजहसँ बाढ़िसँ होमयबला क्षति कम भेल। जतय-जतय लोक फँसल रहथि, ओतयसँ लोक सभकेँ निकालल गेल। जतय कतहु भोजन, पानि आ दवाइ केर आवश्यकता छलैक, ओतय ओ सभ चीजकेँ पहुँचाओल गेल। पिछला बेर जकाँ अहू बेर मधुबनीक डी.एम. शीर्षत कपिल अशोक स्वयं बोटक सहारे पीड़ित धरि पहुँचलाह आ हुनका सभकेँ सहयोग उपलब्ध करौलनि। डी.एम. एहि कार्यक लेल लोकक बीच बेस प्रशंसित सेहो भेलाह। मिथिला स्टूडेंट यूनियन आ आन संगठन सभ सेहो सक्रिय भेल आ पीड़ित व्यक्ति धरि राहत पहुँचाओल गेल। सभ गोटे समर्पित भ' क' एक-दोसराकेँ मदति कयलनि। ओना एकर बादो बहुतो ठामसँ एहि बातक शिकायत अबैत रहल जे हुनका सभकेँ राहत समय पर नहि भेटि रहल छनि। मधुबनी जिलामे प्रशासन जतेक सक्रिय रहल, ओहन सक्रियता आन जिलामे देखयमे कमे आएल। दरभंगा, समस्तीपुर जिलामे लापरवाही करबाक आरोप प्रशासन पर लगौलनि। तथापि एहू सभ ठाम सोशल मीडिया पर एकर जिकिर-फिकिर कएल जाइत रहल आ हुनको सभकेँ विलम्बेसँ सही, राहत भेटलनि।

एन.एच. 57 बनल शरणस्थली

एहि बेरक बाढ़िमे इहो एकटा प्रश्न उठल जे एन.एच. 57 नहि रहैत त' की होइतय। भ' सकैए जे जानमालक नोकसान बेसी होइतय। मुजफ्फरपुरसँ ल' क' फारबिसगंज धरि एन.एच. 57 पर लोक प्लास्टिक टाँगि क' शरण लेलनि। लगभग एक मास धरि एन.एच. 57 पर एहन दृश्य देखबामे अबैत रहल। पहिने जे बाढ़ि अबैत छल ओ एक-दू दिनमे वापस चलि जाइत छल। आब जे बाढ़ि अबैए, कमसँ कम मास दिन धरि रहैए। जाबत धरि बाढ़िक पानि गन्हाय नहि लगै छै, पानि सटकैत नहि अछि। कहल जाइत अछि जे पहिले जे बाढ़ि अबैत छलैक से अपना संगे खेतक उर्वरा-शक्ति सेहो अनैत छल। ओहिसँ धानक फसिल नीक भ' जाइ। मुदा आब जे अबैत अछि से अपना संगे खेतक उर्वरा शक्ति नहि, अपितु रंग-बिरंगक बेमारी सभ अनैत अछि। मेडिकल सक्रियताक बादो एहि सभ बेमारीकेँ रोकब असम्भव सन भ' जाइत अछि।

फारबिसगंज केर कॉलेज चौक पर स्थित एकटा चाह दोकान पर हम रुकैत छी।

चाह दोकान पर लोक आपसमे बाढ़िक चर्चा क' रहल अछि। लगभग दस बाजि रहल हएत, मुदा घोर कारी मेघ एखनहुँ लागल छल। कखनहुँ बरसि जेबाक लेल तैयार। एहि मेघसँ लोक डरि रहल छल। चाह दोकानदार उमेश यादव कहैत छथि— 'हम एतय चालीस बरससँ दोकान करैत छी। ई हाइवे सभसँ ऊँच जगह अछि। पिछला बेर जहन बाढ़ि आएल छल त' एतय पानि नहि आएल छल। मुदा एहि बेर बुझाइए जे पानि हाइवेकेँ ओइ पारक समूचा क्षेत्र जलमग्न भ' गेल अछि। ओना एहि बेर बाढ़िक पानि हाइवे केँ नहि छू सकल। मुदा आगुओ इएह स्थिति रहत से नहि कहल जा सकैत अछि। बाढ़ि प्रति वर्ष अपन पिछला रिकॉर्ड तोड़ि क' नवका रिकॉर्ड बनबैत अछि। एना मे ई कहब कठिन अछि जे ई हाइवे कहिया धरि लोकक शरण स्थली बनल रहत!'

चलिये रहल अछि लूट-खसोट

सरकारी तंत्र आ प्रशासनिक पदाधिकारीक ध्यान छहर-महर पर बेसी रहैत अछि। निश्चित रूपसँ प्रशासन राहत आ बचाव कार्य चलेबामे पहिनेसँ बेसी संवेदनशील भेल अछि, मुदा बाढ़ि आ राहत केर नाम पर एखन धरि लूट-खसोट चलिये रहल छैक। निकट भविष्यमे एहि लूट-खसोटमे कोनो कमी होयबाक सम्भावना नहि देखाइत अछि। 1953-1954 मे बाढ़िकेँ रोकबाक लेल कोसी परियोजना शुरू कएल गेल। 1953 मे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू कोसी परियोजनाक शिलान्यास करबाक क्रममे कहने छलाह जे, 15 सालमे बाढ़िक समस्या पर नियंत्रण पाबि लेल जाएत। 1965 मे लाल बहादुर शास्त्री कोसी बराजक उद्घाटन कयलनि। कोसी क्षेत्रमे नहरि बना क' सिंचाइ केर व्यवस्था कएल गेल। कटैयामे एकटा पनबिजली केंद्रक स्थापना कएल गेल, जकरा 19 मेगावाट बिजली उत्पादन करबाक रहै। मुदा रहै, भेलै नहि! जाहि बाढ़िकेँ महज 15 वर्षमे रोकि देबाक गप्प कहल गेल रहै, ओ बाढ़ि 66 साल बादो नहि रुकल। अपितु ई आर भीषण होइत गेल। कटैया पनबिजली केंद्रसँ उत्पादन त' दूर, एकरा 20 मेगावाट बिजली बाहरसँ कीनय पड़ैत छैक।

जहन पानि जाइ छै त' कंक्रीट आ बालूक बैग राखल जाइत अछि। एकर की माने-मतलब? अहाँ कोना देखबै जे एतय कतेक बैग राखल गेल। किएक त' सभटा पानिक नीचामे अछि। फेर एक सौ बैग राखिक' एक हजार बैगक एस्टीमेट बना लिअ। के देखत? जँ एकर जाँच हेबो करत त' आसानीसँ कहल जा सकैत अछि जे एतय बैग त' राखल गेल छल, मुदा धार सभटा बहाक' ल' गेल। ई खेल प्रति वर्ष चलैए आ करोड़ो रुपयाक छहर-महर होइत रहैए!

कुसहा त्रासदीक बाद कोसी पुनर्निर्माण योजनाक अंतर्गत कौशिकी भवन बनाओल गेल छल। एकर निर्माणमे 320 करोड़ टाका खर्च कएल गेल। हम एहि बेर कौशिकी भवन गेल रही। ओतय केओ अधिकारी नहि भेटल। पता लागल जे साहेब सभ साइट पर गेल छथि। मुदा किछु स्थानीय लोक सभ कहलनि जे कुसहा त्रासदीमे मारल गेल लोकक स्मृतिमे एहि भवनकेँ बनाओल गेल छल, जकर काज बाढ़ि रोकबाक आ पुनर्वासकेँ सुचारू रूपसँ करबाक छलै। मुदा आब ई नाम मात्रक रहि गेल अछि।

परियोजना पर उठैत रहल अछि प्रश्न

बाँध बनाक' नदीकेँ बन्हबाक परियोजना पर पहिनहिसँ प्रश्न उठैत रहल अछि। 2017 मे बागमतीक कातमे बनाओल जा रहल तटबंधक काज रोकबेबाक लेल आंदोलन करयबला पर्यावरण कार्यकर्ता अनिल प्रकाश कहैत छथि जे बाँध बनाक' नदीकेँ मोड़बाक प्रयास सदति खतरनाक रहल अछि। ओ कहैत छथि जे अंग्रेजक समयमे सेहो एहन प्रस्ताव आएल छल, मुदा एहि पर अमल नहि कएल गेल। किएक त' ओ लोकनि जनैत छलाह जे तटबंध तोड़ि क' आएल पानि सीधे नदीसँ आएल पानिसँ बेसी खतरनाक होइत अछि। सिल्ट आ गादसँ नदी उत्थर भेल जा रहल अछि। नेपालमे अन्धाधुन्ध पहाड़ काटल जा रहल अछि। इएह स्थिति रहल त' आइ तटबंध टूटि रहल अछि, काल्हि भ' सकैए जे बराज बहि जाय।

एमहर दस बरिससँ कमला-बलानकेँ देखिक' इएह चिन्ता भ' रहल अछि। नरुआर नाम कमलाक पश्चिमी तटबंधसँ सटले अछि। पहिने ई गाम नीच छल, आब गामक दूमहला कोठाक बराबर नदीक ऊँचाइ पहुँचि गेल अछि। ई त' हमर देखल-सुनल अछि। एहन तरहक मारिते रास गाम सभ हएत, जे नदीसँ गहींर भ' गेल हएत। ई आबयबला समयमे भीषण स्थिति उत्पन्न हायेबाक संकेत अछि। गरमीक दिनमे नदी सुखाएल रहत आ बाढ़िक दिनमे ई भीषण रूप धारण क' लेत। मुदा सरकारी तंत्रकेँ एहि पर कोनो चिंता करबाक आवश्यकता नहि बुझाइत अछि। राहत आ बचाव कार्यक प्रति सरकारी तंत्र पहिनेसँ बेसी भने संवेदनशील भेल हुअए, मुदा एकर ठोक समाधानक प्रति एखनहुँ कोनो बात-विचार नहि भ' रहल अछि। आ से, हमरा बेसी चिंताजनक गप्प बुझाइत अछि। बी.बी.सी.क एकटा पत्रकारसँ भेल साक्षात्कारक क्रममे केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री नितिन गड़करी कहैत छथि— 'बाढ़ि आ सुखाड़ प्रकृतिक देन छैक।' एहिमे ओ की क' सकैत छथि।

सत्ते, ई प्रकृतिक देन छैक, मुदा एकटा केन्द्रीय मंत्रीक एहन तरहक बयानसँ सरकारक उदासीनता साफ झलकैत छथि। बाढ़िकेँ अहाँ नहि रोकि सकैत छी, मुदा एकटा ठोस जल प्रबंधन अहाँ अवश्य तैयार क' सकैत छी। भ' सकैए जे बाढ़िक एकटा ठोस समाधानक लेल नीतिगत परिवर्तनक आवश्यकता पड़ैक। मुदा, ई नीतिगत परिवर्तन के करत? की सरकार अहूँक लेल कोनो जन आंदोलनक प्रतीक्षा क' रहल अछि? आ से जँ सरकार क' रहल अछि त' हमसभ एहि जन आन्दोलनक लेल कतेक तैयार छी?

•

प्रदीप बिहारी

प्रदीप बिहारी समकालीन मैथिली कथाक प्रतिनिधि कथाकारक रूपमे ख्यात छथि। मैथिली, हिन्दी आ नेपाली भाषा-साहित्यकेँ एक रचना-सूत्रमे बन्हबामे हिनक योगदानकेँ महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। अद्यावधि हिनक अठारह गोट पोथी प्रकाशित छनि जाहिमे चारिटा कथा-संग्रह, चारिटा उपन्यास, एक लघुकथा-संग्रह आ एकटा नाट्य रूपांतरण अछि। नेपाली आ हिन्दीसँ मैथिलीमे प्रकाशित सात गोट पोथी, पत्र साहित्यक एकटा पोथी अछि। रंगकर्मसँ जुड़ल रहलाह अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कार संग-संग कतोक पुरस्कारसँ सम्मानित छथि। चर्चित *अंतरंग* अनुवाद पत्रिकाक सम्पादक छथि।

सम्प्रति : भारतीय स्टेट बैंकमे अधिकारी छथि।

***सम्पर्क* : 9431211543/6202140561**

फेसबुक फ्रेंड

कौलबेलक घंटी टनटना उठल।

संतोषकेँ अचरज भेलैक। एखनि के भ' सकैत अछि। ओ नवे-नव ई डेरा लेलक अछि। एहि अपार्टमेन्टमे वाचमैनकेँ छोड़ि केओ ने चिन्हैत छैक ओकरा। करीब पनरह दिन धरि पत्नी रहथिन। ओहो घरेक काजमे ओझरायल रहलखिन। ककरोसँ जान-पहिचानक बात तँ नहि बाजलि रहथि। तखनि सबेरे-सबेरे के भ' सकैत अछि?

घंटी फेर टनटनयलैक।

संतोष केबाड़ खोललक। एकटा महिला ठाढ़ि छलीह।

'जी?' संतोष पुछलक।

'नमस्कार। हम पाँच सय दूमे रहैत छी। आइ दिनमे करीब एगारह बजे हमरा फ्लैटमे सत्यनारायण भगवानक पूजा अछि। कृपया आबी।' ओ महिला बाजलि।

'मुदा, हम तँ ताहि समय आफिसमे रहब।'

'कोनो हर्ज नहि, आफिससँ घुरलाक बाद आयब। मैडम नहि छथिन?'

'नहि, एक मासक बाद औतीह।'

'हम सभ बाट तकैत रहब।' बाजि ओ महिला लिफ्ट... दिस बढ़ि गेलीह।

संतोषकेँ अचरज भेलैक। ओ एकरा हकार' किएक अएलीह? भ' सकैछ जे पत्नीसँ परिचय भेल होनि। इहो भ' सकैछ जे एहि बहन्ने अपार्टमेन्टमे अपन एकटा समाज बनाब' चाहैत होथि।

साँझ खन ओ पाँच सय दूमे गेल।

पुरुष महिलाक भीड़ छलैक। ओ धुरखुर टपनहि छल कि एकटा भद्रपुरुष आबिक' अभिवादन करैत बजलाह, 'अपने चारि सय दूसँ?'

'हँ, मैडम बजौने छलीह।'

'अबियौ ने।' ओ भद्रपुरुष बजलाह, 'हम मधुक पति भेलियनि। ओ भीतरमे पाहुन सभ लग छथि बजबै छियनि।'

एतेक आत्मीयताक बादो संतोष स्वयंकेँ कीनलहुँ अछि। आब एतहि रहब। एहि आयोजनक बहन्ने परिचय बढ़त ने। ताहूमे, अपने तँ मधुक फेसबुक फ्रेंड भेलियैक। हुनक पोस्टकेँ खूब लाइक-कमेंट करैत छियनि। अपने दुनू प्राणीकेँ एकदिन देखलनि, तँ चिन्हलनि। तकर बाद अपनेक मैडमसँ गपसप भेल रहनि।'

मुदा, पत्नी संतोषकेँ एहि मादे नहि कहलनि। दोसर बात, हकार देब' अयबाकाल मधुकेँ सेहो कहक चाहियनि।

भद्रपुरुष एकटा कुर्सी दिस संकेत करैत बजलाह, 'अपने बैसियो। अपनेक अयबाक जनतब मधुकेँ दैत छियनि।'

भद्रपुरुष एकटा कुर्सी दिस संकेत करैत बजलाह, 'अपने बैसियौ। अपनेक अयबाक जनतब मधुकेँ दैत छियनि।'

कुर्सीपर बैसितहिं संतोष अपन मोबाइल बहार कयलक आ मधुक फेसबुक प्रोफाइलमे अपन लाइक आ कमेंट ताक' लागल।

•

भगवती

ह्वाट्स-एप पर फोटो अयलैक। पुतौहु दुर्गा माइक खोइंछ भरिक' बहराइत कालक सेल्फी। सेल्फीमे बेटा-पुतौहु आ दू मासक पोता छलैक।

ओकर नजरि ओहि फोटो साढ़े तीन बर्खक पोती मिथिकेँ ताकि रहल छलैक। ओ फोटोमे नहि छलि। चोट्टे घुरती प्रश्न कयलकि, 'मिथि किएक नै छैक फोटोमे?' ओकरा मोनमे कतोक रास बात उचर' लगलैक।

पुतौहु उतारा देलनि, 'रुसलि अछि। कहैत रहलियै। नहि आयल फोटो खिचाब'। दुर्गा जीक मूर्ति दिस एकटक ताक' लागलि।'

'किएक रुसलि ओ?'

'दुर्गा माइकेँ शृंगारक समान चढ़ौलियनि, ताहि लेल।' पुतौहु उतारा देलकि, 'कह' लागलि जे हमरा द' दे। ई हमर शृंगारक समान अछि। हमरा दिअ'। कतबो मनौलियै जे एक सेट दोसर कीनि दैत छियौ, से नहि मानलकि। भगवतिए बला शृंगारक समान लेल रुसलि अछि।'

•

प्रेमक ओर ने छोर

श्याम दरिहरे

झारखंड सरकारमे डिविजनल कमान्डेंटक पदसँ सेवानिवृत्त मैथिली आ हिन्दीक प्रतिष्ठित कवि, कथाकार आ उपन्यासकार श्याम दरिहरे जीक दू गोट कहानी संग्रह *'सरिसोमे भूत'* एवं *'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कॉम'* प्रशंसित कृति छनि। उपन्यास *'घुरि आउ मान्या'*, *'जगत सब सपना'*, *'हमर जनम किए भेलै हो रामा'* एकर अतिरिक्त मैथिली कविता-संग्रह *'क्षमा करब हे महाकवि'* आ हिन्दी कविता-संग्रह *'गंगा नहाना बाकी है'* ई सभ कृति चर्चित छनि।

'सरिसोमे भूत'क लेल हिनका 'किरण सम्मान' एवं 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉटकॉम'क लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ तिरहुत साहित्य सम्मान, हैदराबाद प्राप्त छनि।

धर्मवीर भारतीक प्रसिद्ध काव्य-कृति *'कनुप्रिया'क* अनुवादक श्याम दरिहरेजीकेँ हालहिमे 2020 क 'ब्रजकिशोर सम्मान'सँ सम्मानित करबाक घोषणा भेलनि अछि। अनुप्रासक सभ सदस्य लोकनि दिससँ हिनका सादर शुभकामना आ बधाइ।

सम्पर्क : 341191332

'से हमरा की कहे एले ग'? अइमे हम की करबौ। आब की पहिलका जमाना हइ जे मेठ-माइनजनक बात लोक मानतै। आब त' सबटा लेल कानून हइ। मौगी सुनके आजादी हइ त' हम की करबै आ तोँ की करबिहीं।' दिलचन मड़र कहलखिन।

मंगला चुप भ' गेल मुदा दिलचनेक ओसारा पर बैसल रहल।

'कथिक ठकमुड़ी लागल हौ रे मंगला।' घरक भीतरसँ सुराजपुरवाली बाज' लगलै, 'ओहेन मौगी भागि गेलौ सेहे निम्मन। जे मौगी साँयके रहिते दिनादिष्टी ओइ दारूवलाक संगे सुतै छलै से भागि गेलौ त' कोन अधलाह भेलौ!'

'आन गाम भागि गेल रहितै त' ओतेक दुख नइ होइत। आँखिक परोछ रहैत। से त' ओ एके टोलामे अइ आँगन से ओइ आँगन भागि गेलग'। सेहे अखरै हए काकी।' मंगला बाजल।

'तोंहू त' ओनाहिते उढ़ाड़िक' ने अनले रही बौआ! तखनी आब किए छाती फटै हौ? एकबेर उढ़ड़ी से बेर-बेर उढ़ड़ी।' दिलचन मड़र बजलाह।

'न्न! कक्का से किए कहै छहक। हम चारि साल पहिले जखनी अनलियै, तइ दिन ओ ककरो दोसराक राजी नइ रहै। ओ कुमारिए रहै। हमरा से परेम करइ त' हम ओकरा ल' अनलियै। तकरा तोँ उढ़ड़ब कोना कहै छहक?' मंगला विरोध कएलक।

'माइ-बापके बिनु कहने जे घरसे भगै हइ तकरा हमरा भक्खामे उढ़ड़बे कहल जाइ हइ। हमरा सिखा नइ तोँ। ओकरा लुकुम लागि गेल हइ भागे के। जे छौंड़ी एक बेर माइ-बापके, शूल लगाक' भागि गेल, से एखनी साँइ छोड़ि भागलि से कोन बड़का बात! ओहेन छौंड़ी-मौगी लेल त' आइ तोँ आ काल्हि दोसर!' दिलचन फेर बजलाह।

'तखन त' तोरा मोने, परेम-तरेमक कोनो मोजरे ने हइ।' मंगल फेर अपन पक्ष रखलक।

'परेमेक ने बात हइ बौआ। पहिले माइ-बापसे परेम। तकर बाद तोरासे परेम। आब मोहनासे परेम। फेर काल्हि ककरो दोसरासे। सरूप देनहें हइ भगमान। तइ पर एखनी जवानी मजगूत हइ। त' परेमक कोनो कमी हइ! जे नेतघट भ' गेल तकरा खातिर त' परेमे-परेम हइ।' दिलचन चुप रह'वला नहि छलाह।

दिलचनक बात ओकर अपन घरवालीकेँ अनसोहाँत लगलै। बाजलि, 'त' की एकरो मोन होइ हइ जे एकदिन एकरोसे परेम क' लेतइ कोनो सरूपवाली?'

'मर बहिं! आब अइ उमेरमे हम मौगिए उढ़ाड़ब ग'! से जे करिती त' जमानिएमे ने केने रहिती। ई त' मंगला के बोलै छियै जे, जे मौगी एक बेर छोड़िक' चलि गेल, तकरा लेल किए नेप चुआएब! जो तोंहू दोसर जोगारि ले कतहु। मौगीके कोनो चुट्टी खेने हइ! एक बोलाबह सत्रह आबह। बाँहि आ जाँघ मजगूत हइ त' बौहुक कोन कम्मी!' दिलचन जोर द' क' कहलखिन।

'बाप रे! ई केहन पुरखारथ करै हइ! हमरा सनक बौहु मिललइ तें! हमरो सरूप नीमने रहे। हमरो कते लोक कनखी-मटकी दै। कनिको डोल-माल करितियै

त' एकर एते पुरखारथ नइ रहितै।' सुराजपुरवाली कहलकै।

'सरूप त' एखनो तोहर छित्ते हउ आ उमेरो कोनो बेशी नहिए भेलौ ग'। कने हिल-डोल क' क' देखही ने। सबहक मूड़ी रेत दइ छियौ कि नइ, भोतहा हाँसू से!' दिलचन हँसैत बजलाह।

'दुर ज्जो! आब की करब ग' ओ सब। भगमान इज्जति भरमा निमाहि देलनि।' सुराजपुरवाली सेहो हँसैत बाजलि।

'त' हम चुपचाप बैसि जाउ आ ओ दारूवला हमर बौहुक संग रास करैत रहओ।' मंगला बाजल।

'नइ रहबे चुपचाप त' फरसा उठा, दुनूक मूड़ी छपटि दहिन आ जहल चलि जो! आर की करबे!' दिलचन कहलखिन।

'आ गामक सर-समाज किछु ने?'

'चुप रह। सर-समाजके आब के पुछै हइ। तोँ पुछने रही समाजके? तोँ जहिआ छौंड़ीके ल' अनने रही तहिआ चौपाल-समाज कि धानुक-समाज तोहर कुच्छो बिगाड़ने रहौ?'

'चौपाल आ धानुकमे बेशी फरक नइ हइ। दुनूक पानि बरमहल चलैत रहलैअ। मुदा अइ बेर त' ओ अछोपक संग भागि गेल' किने हौ। दुनू जातिक मुँहमे कारीख-चून लगा देलकै ग'।' मंगला बाजल।

'हे रौ जाति-पातिक बात आब नइ कर। आइ जे तोहर बौहु बाभन-राजपूतक संग भागल रहितौ त' की तोँ नेगाड़ा पीटिक' खुशी मनबिते? बौहुक भागबसे बेशी तोरा इहो दरद हौ जे मनपट्टीवाली तोरा दुसाधोसे हीन बना देलकौ? आब त' मोहना तोरासे बेशीए चाँढ़ हइ। दारू बेचिक' धनिक बनल हइ। थाना-पुलिस सबके हप्ता दै हइ। ओ तोरासे कथिक हीन हौ। दोसर जे तोहर के सुनतौ! रहलौ समाज आ जाति। त' आइ-काल्हि के मानइ हइ तकर बान्ह-छेंक। सुरेश मालिकक बेटी कालेजक एकटा मियाँक संग उढ़ड़ि गेलै। त' के की क' लेलकै। उनटे सुरेशे मालिक जहल जाइत-जाइत बचला। बेटी अपन साटीपिटी थाना आ आफिसरके देखा देलकै जे बलू ओकर उमेर अठारहसे बेशी भ' गेल हइ। बालिग लड़की ककरासे बिआह करतै से ओकर मोन। माइ-बाप कोइ नइ हइ आब! आब बेटी-पुतहु जकरा संग मोन तकरे संग भागि जेतइ। के की बोलत? तुरते पुलस पकड़ि लेतै। एके बात त' बोलै हइ, जे मौगीक आजादीमे टाँग अड़ाबेवला तोँ कौन है। तखन के जेतौ अइ खुनिआ साँढ़ से लड़े। ई कानून हइ खुनिआ साँढ़! तोरा सट्ठा होउ त' ढुसि ले ग'। ने त' जो चुपचाप बैस आ बौहु से ओनाहिते फोंका दरड़बैत रह। ईहे जमाना हइ। तोरे कोन सबूत हौ जे ओ मौगी तोहर बौहु? समाजी बिआह जे केने रहिते त' एकटा गवाहीओ बजितौ, जे ई तोहर बौहु हौ। से त' तोंहू उढ़ाड़िए क' अनने छें। जदि सरकारीए खातामे बिआह केने रहिते त' सेहे रहितौ सबूत। किछु जे करबिहि तकर सबूत चाही ने रौ, जे ई तोहर बौहु हौ! से बाज ने।' दिलचन खोंइचा छोड़ाक' कहलखिन।

'समाज ई नइ देखै हइ जे एते दिन से, जे कुमुदा हमर बौहु छलै ग'।'

'त' चल ने हम दू-चारि गोरा मुँहसे कहबै। मुदा ककरा कहबै की कहबै से ने बाज।'

'मर्र बड्ड भारी बात कहै छहक कक्का। हम मोहनाके कहबै। तोहूँ सब कहबहक जे एते दिनसे ओ ककर रहै। समाज हइ, ओकरा पकड़ल जाइ। पर-पंचैती होइ। आर की?' मंगला कहलकै।

दिलचनकेँ हँसी लागि गेलनि। बजला, 'रौ बहिं! आइ तोरा समाज मोन पड़ै हौ। अपना समाजमे त' पहिले सेहो जखन जकर राजी भेलै तकरे संग रहै छलै मौगी। तोरा त' एकोटा बच्चो नइ हौ। अही गाममे दू-दू बच्चाक माइ रातिए भरिमे पलटी मारिक' दोसरक राजी भ' जाइ आ समाज मुँह देखैते रहि जाइ। जे अपन माइनजनक मुट्ठी गरम करै तकर त' पंचैतीओ होइ, बाँकी जाइ तेल लेबे। ओहो पंचैती बड़े खरच के बात रहै। तखनो बौहु घुरल कि नइ घुरल तकर कोनो ठेकान नइ। महनाक बेटीके देखनेहे रहिअइ। बौकाक माइके सेहो देखने रहें जे कोना बापक गलामे उखड़ि बन्हाएल रहै। तैओ नइ त' नहिए राजी भेलै अपन पहिलका घरवलाके आ रतबा संग अही गाममे जीवन भरि रहलै? की भेलै? के की बिगाड़ि लेलकै? हँ एकेटा रस्ता हौ, फरसा उठा आ दुनूके दोखड़ि दे! आर कोनो रस्ता नइ।'

'तैओ एक बेर पंचैती क' क' देखतै से नइ त' खाली भाषण दै हइ।' सुराजपुर वाली कहलकै।

'पंचैतीक महिरम हम बुझै छियै किने। मोहनाके पाइक गरमी हइ। ओकरा थाना पुलिसक मदति हइ। ओ किन्नहुँ पंचैती नइ मानतै। दोसर बात ओ मौगी बेकहल हइ किने। ओ त' पंचैतीएमे आबिक' चिचिआए लगतै जे ओ मोहनाक राजी हइ। ओ पंच सबके सेहो उकटिक' राखि देतै। त' की करतइ पंच। तें भने भागि गेलौ। चुपे रह। ने त'...।' दिलचन बजला।

ओ बेर-बेर गरदनि काटि देबा लेल कहि रहल छलैक। मंगला मारि-काटि नहि कर' चाहैत छल। दिलचने कक्का जखन पंचैती लेल तैयार नहि छलैक त' अनेरे ककरो आर किए कहितैक। सौंस टोल त' ओकरा पर हँसिते छैक।

मंगला चुपे उठल आ अपन आँगन चलि आएल। पहिले मंगला सेहो सझिए आँगनमे छल। जखन ओ कुमुदाकेँ मनपट्टीसँ उढ़ाड़िक' अनलक त' लोकक बोलीसँ बचबाक लेल फराक आँगन-घर क' लेने छल।

मनपट्टी गाममे मंगलाक बहिनक

बिआह छलैक। तें ओहि ठाम ओकर अबरजात बरमहले रहैत छलैक। ओही अबरजातमे कुमुदासँ ओकरा भेंट भेलै। कुमुदाकेँ देखिते मंगलाक मोनक घंटी बाजि उठलै। मुदा कुमुदा एकरा जातिक नहि छलि। तें मंगलाक आगू-पाछू करब, कि घरेड़ करबकेँ कुमुदा कोनो मोजर नहि दैत छलि। दोसर दिस मंगलाक हिक्क ओकरामे गड़ि गेल छलैक। तें ओ बेशीकाल बहिनिए ओहि ठाम गरसामूड़ देने रहैत छल। देह-दसा बेश बफगर छलैक से मजूरी खूबे भेटैत छलैक। तें बहिन-बहनोइकेँ सेहो ओकर रहब अखड़ै नहि।

एक धनकटनीमे मंगला सेहो बहिनिए ओहि ठाम धनकटनी कएलक। अपना गाममे रौदी सनक रहै आ मनपट्टीमे धरती फाड़िक' उपजा भेल छलैक। ओही एक मासमे ओ कुमुदाकेँ पटिआ लेलक। कुमुदा सेहो धान कटैत छलि। दुनू बेशीकाल एके गिरहसक खेतमे कटनी करए। मंगला छल चाँढ़। ओ दू-दूटा बोझ गछाड़िक' अपन धान उघि लिअए। तकर बाद कुमुदाक बोझ सेहो उघि दैक। कुमुदाकेँ ई छौंड़ा आँखिमे समा गेलै। यद्यपि ई मिलान मंगलाक बहिनकेँ खटकैत छलैक। ओ कतबो डाँटै तैओ कुमुदाक मदतिसँ मंगला बाज नहि आबए। ओही धनकटनीमे कुमुदा ओकर राजी भ' गेलैक।

छओ मासक बाद दुनू भागि गेल। मजदूरी आ धनकटनीक कमाइ रहबे करै त' डरे कथिक। दुनू दिनादिष्टी गाममे रह' लागल। कुमुदाक माइ-बाप कने-मने हल्ला-गुल्ला क' क' चैन भ' गेल। कुमुदा रहैक सुन्नरि आ मजगूत। ओकरो मंगले सन चाँढ़ घरवलाक खगता छलैक! से भेटि गेल रहैक। तें सभ मोने-मोन अइ जोड़ीकेँ स्वीकारे क' लेलक। जाति-पाति ल' क' की लोक चाटत— सैह सभ कहलकै। से सभटा मंगलाक अनुकूल भ' गेलैक।

दुनू खूब मेहनति कर' लागल आ मजदूरक एकटा नीक जिनगी जिबए लागल। मजदूरी आ बटाइक बले अन्न-पानि आ वस्त्रक कमी कहिओ नहि रहलै। कि तखने सरकार प्रत्येक पंचायतमे दारू-शराबक लाइसेंस बाँट' लगलै। सभ पंचायतमे एक गोटा लाइसेंस लेलक आ वएह अपन दसटा खुदरा दोकानदार बना लेलक। ओ सभ गामे-गाम देशी दारू बेच'मे पड़कि गेल। एहि पंचायतमे अनुसूचित जातिक नाम पर मोहनाकेँ दारू बेचक लाइसेंस हाथ लगलै। बस तखनेसँ गामक सभटा समीकरण उल्टा-पुल्टा होअए लगलै।

मंगला सेहो शुरूमे सौखे पीब' लागल। मुदा दारू अपन निस्सामे ओकरा नहुँए-नहुँए गछाड़ि लेलकै। मोहनाक नजरि मंगलाक परी सन सुनरी बौहु कुमुदा पर बड़ पहिलेसँ छलैक। ओ ओहि लेल दावक ताकमे छल। मंगलाक दारूक चस्का ओ अवसर मोहनाक हाथमे धरा देलकै। मंगलाकेँ दारूक हिस्सक लगिते बिलाड़िक भागे सींक टुटि गेलैक। मोहना पहिले ओकरासँ दोस्ती कएलक आ सभ साँझ अपना दोकानसँ दारू आ चखना ल' क' मंगलाक आँगन आब' लागल। मंगलाकेँ मंगनीक दारू अलभ्भक लाभ बुझाइक। से ओ हाथ-पएर छोड़िक' भरि छाक पीब' लागल। कुमुदा शुरूमे विरोध केलकै, मुदा बादमे हारि-दारि क' छोड़ि देलकै।

तकर बाद मोहना अबिते भरि मोन दारू पीआक' मंगलाकेँ टंच क' दैक आ तकर बाद कुमुदाकेँ परतार'मे लागि जाए। किछुए दिनक हिन-छिनक बाद नव-नव वस्तु-जातक लोभमे कुमुदा सेहो पटिया गेलि। तकर बाद त' मंगला राति भरि निस्सामे मातल आ ओकरे घरमे कुमुदाक संग मोहना आनन्दमे मस्त।

किछुए दिनमे बात गुलगुला गेलै। लोक मंगलाकेँ बोकिआब' लागल। आब महिन्द्राक कहला पर साँझ होइते महिन्द्राक बौहु आबिक' मंगलाक आँगनमे जमि जाइक। ओकरा रहैत मोहना लीला नहि चलि पबैक। दोसर दिस मंगला सेहो अपन बौहुकेँ भसिआइत देखि दारूसँ दूर होअए लागल। मुदा ताबत बहुत देरी भ' चुकल छलैक। कुमुदा ता मोहनाक अधीन भ' चुकल छलि। आइसँ तीन दिन पहिले आखिर मोहना आएल आ कुमुदाकेँ सपठिआक' अपन घर ल' क' चलि गेल।

पछिला बात सभ सोचैत मंगला आँगनमे पटिया पर पड़ल रहल। अपन गलती सेहो साफ बुझा रहल छलैक। ने ओ दारू पीबैत ने मोहना ओकर आँगनमे पड़िकितै। तखन हँ कुमुदो त' राजी भेलै ओकरा संग तखने ने एतेक बात आगू बढ़लै। तें तीनू दोखी अछि। केओ ककरो पर पूरा दोख नहि लगा सकैए। मंगला असगरे अपसोच करैत पड़ल रहल।

'की समांग? कत' चलि गेल छलें?' बजैत महिन्द्र आँगनमे पैसल।

'कत जाएब। दिलचन कक्का लग गेल रही।' मंगला उठिक' बैसैत बाजल।

'दिलचन कक्का की कहलकौ।'

'किछु ने। कहत की? कहलक जे मोहना लग अफरात पाइ हइ। ओ पंचैती मानतौ नइ आ केस फौदारी जे करबे से ने सट्ठा छौ, ने बिआहक सबूत।' मंगला कहलकै।

'तकर की माने ओ बौहु भगाक' ल' गेल आ हम सब चुप्पे बैसल रहू। से की तोरा देहमे खून नइ छौ।' महिन्द्र तामसे बाजल।

'से त' दिलचन कक्का सेहो कहलक जे आन कोनो उपाय नइ छौ। कुमुदा सेहो तोहर विरोधमे ठाढ़ भ' जेतौ त' कानूनो ओकरे सबहक संग देतै। पंचैतीक त' बाते छोड़ि दे। तें एकेटा उपाय छौ जे फरसा उठा आ ओकरा दुनूके दोखड़ि दे। तकर बाद चलि जो अपने जहल।' मंगला बाजल।

'ठीके त' कहै छौ। तोरा अपने कमीक कारण एकोटा बात तोरा पक्षमे नइ

हौ। ने कोनो सबूत हौ। तखनिओ जदि एकोरत्ती आनि-अवगरानि हौ त' सत्ते दुनूके मारिक' सुता दे।' महिन्द्र कहलकै।

'अँए रौ महिन्द्रा, तोँ सब खाली सबूत-सबूत बजै छें। परेम कोनो सबूत नइ हइ? हम कुमुदासे सत्ते बड़ बेशी परेम करै छियै। तकर कोनो मोजर नइ?' मंगला अइ बेर गह्वरित भ' क' बाजल।

'हँ हइ ने किए! सबूतमे तोँ अपन छाती चीड़िक' परेम देखा दहिन ग'। रे लेलहा। ओइ परेमक पहिचान त' मौगीए करितौ किने। से त' मुँह पर पादिक' चलि गेलौ, आ तोँ परेम-परेम चिचिआइ छें। तोहर अपन नेआर की हौ से कह ने! छोड़ अनकर बात।' महेन्द्र पुछलकै।

'हमर मोन हए जे एकबेर कुमुदासे अन्तिम बेरा पुछि लियै जे ओ की करत?' मंगल कहलकै।

'ओ की करत से त' कइएक' देखा देलकौ। आब की पुछबहिन ग'?'

'तैओ एकबेर खरिआरिक' पुछि लितियै। तामसे पित्ते किछु क' लेलक त' माफीओ त' हमरे ने करेके चाही।' मंगला बाजल।

'दूरे बहिं। एते नम्मा-चौड़ा देह भगमान अनेरे देलकौ। आगि लगा ले अइ देहमे। बूड़ि मौगा नहितन! ज्जो सार, जे मोन होउ से कर। तोरा सनक पतितक मुँहो देखब पाप हए।' महेन्द्र तामसे विदा भ' गेल।

दोसर दिन संध्या काल मंगला पहुँचल मोहनाक ओतए। दारू बिक्रीक समय खतम भ' गेल छलैक। ओसारा पर मोहनाक बाप बैसल छलैक। मंगलाकेँ देखिते मुँह टेढ़ क' लेलकै। भदैयाकेँ, अपन बेटा मोहनाक एहन करनी एकदम पसिन्न नहि पड़ल छैक। से ओ बेटा आ मंगला दुनू पर कन्हुआएल अछि। ओ मंगला पर कनि बेशीए कनखड़ल अछि। ओ मंगलाकेँ नहि टोकलकै। त' मंगले बाजल, 'मोहना कहाँ हइ?'

'हम की जाने गेलियै। तोरा काज हौ त' तो चाल करहिन।' भदैया मुँह अइँठ क' कहलकै।

'मोहना! रे मोहना!' सते मंगला सोर कर' लागल।

'की हौ? अइठाँ की करे एले ग'?' मोहना दारू दोकान पर अबैत बाजल।

'तोरा घरमे हमर कुमुदा आएल हए?'

'हँ आएल हौ। त' से की?'

'तामसे पित्ते घर छोड़िक' आबि गेलै त' की आब एतइ रहतै। कहि दहिन जे हम लेबे आएल छियै।' मंगला बाजल।

'आब ओ अही घरमे, हमरे लग रहतै।' मोहना कहलकै।

'तोरे घर किए रहतौ? ओकरा अपन घर नइ हइ?'

'आब हमरे घर कुमुदोक घर हइ।' मोहना फेर कहलकै।

आब मोहनाक बाप भदैया बाजल, 'से कोना ई ओकर घर होतै! एहनो अन्हेर होइ हइ गाम-घरमे? ओ खतबे हइ। हम सभ दुसाध। तखनी एहन अनिआय कोना होतै!'

'आब सरकार खतबेके सेहो दलित मानि लेने हइ। ओकरो हमरे सब जाँहित आरक्षण मिलइ हइ। तें कोनो अंतर ने। दोसर बात जे कुमुदा त' असलीमे धानुक हइ। ने एकरे जाति ने हमरे। जखन ई बरजोरी राखि सकै हइ ओकरा त' हमरा राखेमे की गलती हइ! हमहूँ त' राजी-खुस्सी अनलियै ग'।' मोहना तड़कल।

'सरकारी कागतमे जे होइ। गाम-समाजमे दुनू एक नइ होतै। चुपचाप मौगीके विदा क' दहिन।' भदैया फेर कहलकै।

'तों चुपचाप एत स' जाइ छ' की नइ बाउ! ने त' जे ने से भ' जेत' आइ। बड़ गाम-समाज वला भेलाहए। पचास केस हइ अही गामक जे खतबे आ दुसाधमे बिआह भेलइअ' आ हमरा बेरमे बड़ गाम-समाज वला। अही गामक कएटा बड़का जातिक बेटी छोटकासे बिआह क' क' भागि गेलै त' कोन उनटन भ' गेलै जे हमरे पर तोँ ताव छोड़ै छ'! हम जे करब से अपना मोने। तोरासे नइ ने मँगइ छिअ किच्छो! तखनी तोँ बजनाहर के?' मोहना अपन बापकेँ दमसेलक।

भदैया अपन लाठी उठाक' नेंगराइत आँगन चलि गेल।

आब छड़पिक' कुमुदा बाहर आएलि। ओकरा पाछू मोहनाक माए-बहिन सेहो छलैक।

'तोँ कोन मुँहे हमरा बजाब' एले रे! मोहनाक हाथे जखनी दारूक तरीमे हमरा बेचैत रहईं तखन नइ बुझेलौ। आब कोन हमर घर! आ के हमर घरवला? बड़ पुरुख बन' ऐलछे। ओही फूसक खोपड़ीके घर कहै छे। कलेमचे चलि जो एत'से ने त' की ने की भ' जेतौ तोरा।' कुमुदा लोहछलि।

मंगला ओकरा मुँहे एहन बात सुनबाक कल्पना नहि कएने छल; से भीतर धरि किछु टुटैत बुझेलै। एक मोन भेलै जे घुरि जाए। जखन कुमुदेक मोनमे कोनो पिरित नइ त' बरजोरी लइए जाक' की?

'हइ तो ँ एना किए बजै छ' मनपड़ीवाली तामसे-पित्ते भागि एले त' कोनो

बात ने। अहिना होइ हइ। तें की लोक अपन घर आ घरवला छोड़ि दै हइ।' मोहनाक माए बाजलि। ओ सेहो एहि कांडक विरोधमे छलि।

'तोँ चुप रह माइ। एकर घर आब इएह घर हइ आ हमहीं एकर घरवला भ' गेलियै। कुमुदा हमर राजी हइ कि नइ से पुछि लहिन।' मोहना बाजल।

'से जे होइ हम एकरा अपन घरमे नइ रह' देबै।' मोहनाक माए चिकरल।

'से ने कोना रह' देबहिन सेहो हम देखइ छियौ। आब ई घर हमरे हए।' मोहना सेहो बमकल।

'हँ-हँ-हँ! हम एक सए, एक हजार बेर मोहनाक राजी छियै। अही घरमे रहबै। मंगले कोन हमरा बिआहि क' अनने रहे। भगाइए क' ने अनने रहे। मोहना से त' हम सत्ते के बिआह करबै।' कुमुदा बाजलि।

'हमर परेमक कोनो मोजर नइ कुमुदा?' अइ बेर मंगला खसल मोने बाजल।

'केहेन परेम? जतेक परेम केलक ततेक मेवा सेहो खेलक। बस खतम।' कुमुदा एकदम सीलटुट्टू सन बाजलि।

मंगलाक मोन टुटि गेलैक।

'तोँ हमरासे बिआह करबे ने मोहना?' कुमुदा पुछलकै।

'करबौ की! अखने क' लइ छियौ।' मोहना बाजल आ अपना घरमे दौड़िक' पैसि गेल।

घरसँ मोहना हाथमे सिन्नुर ल' क' निकलल। ओ कुमुदाक माथमे सिन्नुर रगड़' लेल बढ़ल। कि तखने मंगला ओकर गट्टा पकड़ि लेलकै। मोहना अपन केहुनी आ लातसँ ओकरा जोरसँ मारि देलकै। तकर बाद दुनूमे कुश्तम-कुश्ता शुरू भ' गेलैक। दुनू एक-दोसरकेँ पीटि रहल छल। मोहना दौड़ि क' कतहुसँ एकटा मुँगरी उठा अनलक आ ओहीसँ मंगला पर चढ़ाइ क' देलकै। मंगला पर दू-चारि मुँगरी पड़िओ गेलैक। तकर बाद ओहो मुँगरी पकड़लक। आब उठापटक शुरू भ' गेलैक।

कुमुदा सेहो ओमहर मोहनाक पक्षे मंगला पर जुम्मुस बान्हि मार' दौड़लि। ओ जा मंगला पर हाथ छोड़ैत मोहनाक बहिन आ माए कुमुदे पर टुटि पड़लि, 'धरखने हम अइ रण्डीके घरमे राखब! मार रण्डीआके!' आब दोसरो अखाड़ामे झोंटा-झोटौअलि शुरू भेल।

हल्ला सुनिक' टोलक लोक सभ दौड़ल। सभ तमाशा देखैत रहल। चारू दलमे के कते मारि खएलक तकर हिसाब नहि रहलैक।

तमशबीनमे भदैया सेहो चुपचाप शामिल छल। कने कालक बाद भदैयेकेँ नहि रहल गेलैक। वैह चिकरल, 'रौ सार सब, हमरे जाँहित तोहूँ सब अपंग छे। छोड़ा ने दहिन झगड़ा।'

तखन टोलबैया सभ झुकल आ दुनू अखाड़ाक लड़क्का सभकेँ फराक कएलक।

तावत धरि तीनू महिला पहलवानक हाथमे मुट्ठी भरिक' केश आबि गेल छलैक। आ मंगला अपन प्रेमक मूल्य गरछनि बहैत शोणितसँ चुका रहल छल।

मंगला अपन सोनित पोछैत घुरि गेल।

मंगला अपन घर नहि घुरल। ओ गामसँ निकलि गेल। राति भरि बाधमे एकटा गाछक तर पड़ल असगर कनैत रहल। कुमुदा जे चोट हृदयमे देने छलैक से मुँगरीक मारिसँ बेशी असहनीय छलैक। ओ दर्द आब ककरा ओ देखबैत आ ओकर की दवाइ करैत। तें ओ भोरे निरुद्देश्य कतहु चलि गेल।

ककरो ई बात बुझऽमे नहि अएलै जे ओ कत' चलि गेल आ ओकर की भ' गेलैक। किछु लोक कहै जे मोहना ओकरा मरबा देलकै। केओ कहै जे ओ 'आतमहत्ता' क' लेलकै। केओ कहै जे कतहु भागि गेलै। जे किछु भेल होइ मुदा मंगला नामक अभिनेता अइ नाटकक दृश्यसँ गायब भ' गेल।

एहि घटनाक गोटेक नओ-दस बरसक बाद अचक्के एक दिन मंगला फेरसँ अपन गाममे ऊपर भेल। ओ शहरसँ चिक्कन कमाक' घूरल छल। ओ सोझे दिलचन कक्का ओहिठाम पहुँचल। झलफल भ' गेल छलैक। तें आन केओ ओकरा नहि देखलकै। ओ अपन मोटरी-चोटरी रखलक। दिलचनक घर सरकारी जोजनासँ पक्का भ' गेल छलैक। मंगलाक घरारी पर अंडी-बघंडी जनमल छलैक। मुदा घराड़ी अनामति छलैक।

'दिलचन कक्का! हौ दिलचन कक्का! कत' चलि गेलै सब गोट मरदे! काकी गे! गे काकी! कहाँ छे गे?' मंगला ककरो नहि देखि चिकरल।

ओकर चिकरब सुनि घरसँ एकटा महिला घोघ काढ़िक' बाहर आएलि। 'माइ-बाउ त' दू-तीन बरख पहिने मरि गेलखिन। ई के हथिन?' ओ पुछलकै।

'ओह! ओ सब चलि गेलै!' मंगला दुखसँ बाजल, 'हमर नाम हइ मंगला।'

मंगलाक नाम सुनिते ओ महिला तुरते एकटा पटिया ओछा देलकै।

'ई बैसथु एखने भाइ अबइ हनि। अही ठाम दोकान गेल हथिन।' ओ आग्रह केलकै आ एक लोटा पानि आनि क' देलकै।

मंगलाकेँ भावहुक व्यवहार नीक लगलै। ओ पटिया पर बैसिक' जा जल पीलक ता पलटू सेहो दोकानसँ घुरि अएलै। मंगलाकेँ देखिक' चौंकल आ खूबे खुश भेल।

'तोँ कत' चलि गेलहक भैया। माइ-बाउ तोरा खातिर ककुलैत क' क' मरि गेलै। तोँ घुरिक' एक बेर देख' कि पुछारिओ कर' नइ एलहक। हमरे माइ-बापक सरापे मोहना घरहंज भ' गेल सार। ओ मौगी आब कुकूरक गूँह नाहित गाममे रहइ हए। कोई पुछेवला नइ।' एके साँसमे पलटू बाजि गेल।

'छोड़ ओकर चर्चा आब।' मंगला कहलकै।

तकर बाद आर कते लोक जुटि गेलैक। सभ प्रसन्न छल आ सभक सहानुभूति ओकरा संग छलैक। सभक एके प्रश्न छलैक जे ओ एतेक दिन कत्त निपत्ता रहल? की कएलक? आदि। मंगला यथा सम्भव उत्तर सभकेँ देलक।

जखन सभ चलि गेलैक त' महेन्द्र ओकरा अपन घर दिस ल' गेल। महेन्द्र सभटा खेरहा कहलकै, 'तोरा भगलाक बाद मोहना सत्ते कुमुदासे बिआह केलकै। माइ-बापके फराक क' देलकै। दारू दोकान त' ओकरे रहै। से ओ दखल क' लेलक। खूबे रुपया कमाएल। अपने दुनू बेकती खूब ऐश-मौजमे रहे आ ओकर माइ-बहिन मजूरी करै। किछु दिनक बाद बहिन अपने बहनोइक भाइ संग चलि गेलै। भदैया दुनू बेकती तकर किछुए दिनक बाद भूखे मरि गेल। ता राजमे सरकार बदलि गेलै। दारू बन्न क' देलकै। तखन मोहना चोरी-चोरी दारू बेचे लागल आ एक दिन पकड़ा गेल। बड्डे मारि पड़लै। जहल सेहो भेलै। तीन महीनामे जमानत त' भ' गेलै मुदा शोगसे पीअर भ' गेल जेना सुसना ध' लेने होइ। दुनू बेकतीमे खूबे झगड़ा आ मारि-पीटि होए लगलै। एकटा बेटी सेहो भेल रहै। तकर बाद एक राति मोहना जे सूतल त' फेर नइ उठल। आब कुमुदाके देखेवला कोइ नइ। कत गेलइ बहिं सुनरताइ आ जमानी! देखबही त' कुच्छो ने फुरेतौ। जेहन केलक तेहने मैहरि भगमान बुझा देलकै मौगीके।'

मंगला सभटा सुनि लेलक। कुमुदाक दुख सुनिक' बड़ दुखी भेल। अपन सभटा अपमान आ दुख कुमुदाक त्रासदीक खिस्साक आगू बड़ हल्लुक लगलै। जाहि संतापकेँ बिसरबाक लेल ओ एतेक दिन रने-वनेक खाक छनलक से एखनो ओकर हृदयक कोनो कोनमे हुलकी मारैत बुझेलै। परेमकेँ लात मारि कुमुदा ने चलि गेलि। ओ त' परेमेक खातिर मारि खएलक आ की-की ने भोगलक। मंगला सोचैत रहल। कुमुदा पर दया सेहो लगलै। फेर ओ मोनकेँ झटलक— जेहन कएलक तेहन भोगलक। ओ उठिक' अपन घराड़ी दिस विदा भ' गेल।

दोसर दिन ओ पलटूसँ विमर्श कएलक जे घराड़ी पर ओ घर बान्हत। जा घर बनि नहि जाइत छैक ता ओकरे बाहर वला ओसारा पर सुतत।

तदनुकूल ओकर घर बनब शुरू भेलैक। मंगलाक मोनमे बेर-बेर कुमुदा आबि जाइ। मोन होइ जे जाक' ओकर हालचाल पुछि अबै। मुदा पहिलका अपमान मोन पड़ि जाइ आ ओकर मोन पर छाउर पड़ि जाइ। ओ तुरते घरहटमे मोन ओझरा लैत छल। ओ 'हँ' आ 'नइ'क वेदनामे पड़ल रहल मुदा कुमुदासँ भेंट करबाक साधंस नहि पड़लै।

एहि तरहें पन्द्रह दिन बीति गेलै। ओ नव ढंगे घर बना रहल छल। शहरसँ रुपया बचाक' अही लेल त' अनने छल। नीचामे ईंटाक देवाल आ ऊपर एसबेस्टस देबाक जोजना छलैक। ओ कखनो खुश होइत छल आ कखनो कुमुदाक छोहे दुखी भ' जाइत छल। ई घर ककरा लेल? के रहत अइ घरमे? हम त' अपन जिनगी कि अपन घर, कुमुदेक संग शुरु केने छली। आब की असगर रहल होत? ओ सोचैत रहैत छल। ककरो दोसरके बिआहि आनब त' ओ की कुमुदा सन लागत! कखनो सोचए जे अनेरे गाम एली। भने शहरमे मजूरी करैत बौआ ढहनाक' मरि जैती। ककरा लेल गाम घुरली!

एकदिन जखन रातिमे सुतल त' कुमुदा बड़ मोन पड़' लगलै। ओ दुखी मोने सुतल। कखन नीन्न भ' गेलैक से पता नहि चललै। आधा राति बितला बुझेलै जे केओ ओकर गोरथारीमे बैसल ओकर गोर धेने कानि रहल छैक। ओ अपन पएर ऊपर समेटलक आ बाजल, 'के हए?'

कोनो जवाब नहि भेटलै। गोरथारीमे बैसल लोक कानि रहल छलि। मंगला उठि बैसल। चटाइ पर बैसल कनैत लोक स्त्री छलैक से अटकर लगिते ओ बुझि गेल जे कननिहारि आन कोइ नइ कुमुदा हइ। तैओ अनठाक' पुछलकै, 'के हए?'

'हम छिकी कुमुदा।' कननिहारि बाजलि।

'एत' आब की करे एले ग'?'

कुमुदा किछु नहि बाजलि। कनैत रहलि।

'अइठाँ कान' एले ग' त' अपन घर जाक' कान ग'। ने त' कह की कहे के हउ।' मंगल कहलकै।

'हमर गलती माफ करे जोग नइ हए। तैओ हम नेहोरा करै छिऐ हमरा माफ क' दौ।' कुमुदा हिम्मति क' क' बाजलि।

'हमरा माफी से की होतै आ तकर खगता कोन हइ।' मंगला बाजल।

'हम जे कुकरम केली तकर फल हमरा भगमान भोगा देलनि। अही जनममे मनुख से गूँह भ' गेली। कोनो गति बाकी नइ रहल। बचलाहा पाइ से खोंटि-खोंटिक' खाइत रही सेहो सठि गेल। तखन एक टुकड़ी घराड़ी बेचिक' खाइ छिकी। जत्था त' मोहना अपने बेचि लेने रहे। आब कोनो असथान हमर लेल नइ बाँचल हए। ई खाली माफ क' दौ। गोरथारीमे हम असथान माँगे नइ एलियै ग'।' कुमुदा खेखनैत बाजलि।

मंगला बड़ीकाल धरि चुपचाप बैसल सोचैत रहल। कुमुदा ओहिना बैसल हिचकैत रहल। नेना कातमे सुतलि छलैक।

'किच्छो त' बोलौ।'

'हमरा किच्छो बोले जोगर तों रहे कहाँ देले जे बोलू। सबटा सुड्डाह क' देने छे।'

'एकटा अन्तिम बात कहइ छियै। हम त' बड़ खराप छिकी। सब कुकरम केली। सब दुखो भोगली आ भोगिओ रहल छियै। तैओ इनार-पोखड़ि हम किए नइ डूबली से ई नइ बुझै हइ? सेहे हमरा बोलेके हए। बस्स।' कुमुदा कनिते कहलकै।

मंगला चुपचाप ओकरा दिस देखैत

रहल।

कुमुदा फेर बाजलि, 'हम खराप छिकी से हम बुझइ छलिऐ। अपना परेम पर हमरा कहिओ बिसबास नइ रहे! मुदा एकरा परसे हमर बिसबास कहिओ नइ टूटल। हमरा मोनमे सदति ई बात बैठले रहल जे मंगला, हमरा छोड़ि दोसरके परेम नइ करतै। हम केहनो गलती करबै त' ओ माफ कइए देत। ओइ दिना जखनी ई हमरा खातिर लड़लै आ फूटल कपार ल' के चलि गेलै त' हम बड़े कानल रहियै। लोक बुझै जे हम आर बात लेल कानै छिकी। मुदा हमरा त' झगड़ाक तुरते बाद से एकर खून देख छाती फाटे लागल रहे। दोसर दिना हम एकरा चारूभर तकलिऐ। लोक बोलै जे बलू मोहना खून क' देलकै, मुदा हम आइधरि एकर बाट देखै छिकियै। आब एकरा संग रहेके मुँह हमर नइ हए। ई एकबेर खाली माफी द' दौ। हम भोरे धारक मोनिमे दुनू माइ बेटी डूबि मरबै। ई अपना मुँहे बोलि दउ जे 'माफी देलियौ'। एहे से हमर सब पाप कटित हो जैत आ चेनसे मरब।' कुमुदा आब जोरसँ कान' लागलि।

आब मंगलाकेँ नहि रहल गेलै। ओ कुमुदाकेँ भरि पाँजक' पकड़ि लेलक जेना हरायल कुमुदा फेर भेटि गेल होइक।

'तोँ मरबे किए। हम एखन जिबिते छिकी किने। आब एखन जो। एखन त' फेरसे घर बनाइए रहल छिकी। बनि जैत तखनी...।' मंगला नोराएल आँखिए बाजि उठल।

'एकरा बुते असगरे घर नइ बनतै। भोरे से हमहु लगबै त' जल्दी निम्मन घर बनतै।' कुमुदा बाजलि।

'ठीक हइ।' मंगला कहलकै।

कुमुदा एकबेर फेर मंगलाक पएर पकड़िक' कान' लागलि।

•

अंजली कुमारी

मैथिली साहित्यक उदीयमान लेखिका सुश्री अंजली कुमारी कविता, गीत, लघुकथा, निबंध आदि लिखैत छथि। 'मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान'क संरक्षिका अंजली शिक्षिकाक रूपमे कार्यरत छथि।
सम्पर्क : लोहा, मधुबनी
ईमेल : anjalikumarijha1993@gmail.com

बलिप्रदान

'बुधन, आइ दुर्गास्थानमे बेस चहल-पहल छैक, पूरा परोपट्टाक लोक सभ भोरहरियेसँ मैयाक दर्शनक बास्ते आबि रहल छथि।' कहैत सुमन बाबू चाहक कप पकड़लाह।

'हँ मालिक, आइ अठमी-नवमी छै ने तेँ लागी मंडिलमे बेसी भीड़ रहतैक। जनीजाति लोकनि खोंइछा भरथिन, कुमारि खियाओल जयतैक आ बलिप्रदानो आइये होतैक।'

'अएँ हौ नवमीयो आइये छैक?'

'हँ मालिक, पंडिजी कहै छलखिन एहिबेरदा दुनू तिथि एकेदिन पड़लैक, तेँ एकेदिन बलिप्रदान होतैक।

मालिक भीड़ बड़ रहतैक तेँ लागी हमरा आय जल्दीये जायकेँ हय, बेचना भोरे पर्चा कटा अनलकै, एक बजेकेँ टेम हय पर्चामे।'

'अएँ हौ बुधन, एहि बेर तोंहू छाग बलि देबही?'

'हँ मालिक, पोरुका बरिख बेचना बेराम पड़लै ने त' कोकनाबाली मातासँ पाँच बरिख छागर चढ़यबाक कोबला केलकै, तखन जाक' बेचना बचलइ।'

'अएँ हौ, कोबले करक रहै त' दोसर किछु कोबला करितै, एकटा निरीह प्राणीक बलिक कोबलासँ तोहर बेचनाक प्राण बचलहु, ई हमरा केनादन लागैए।'

मालिक असगरे हमरे घर टासँ नहि पड़तै, हमरा टोली बारह टा छागर एहि बेर छै। हमरा लगैए पूरा परोपट्टा लगाक' पाँच सौ तक छागर एहि बेर देल जयतैक। मालिक एहि बेर सब बेरसँ बेसी छागर चढ़तैक।'

'हौ बुधन, अपना खुशी लेल एकटा निरीह प्राणीक बलि हमरा अनुचित बुझना पड़ैत अछि, ओना सभ मैयाक कृपा।'

मालिक एहिबरदा एगो बात सुनलियै, जे एहिबेर छागरक सीरा मैयाकेँ चढ़तनि, केकरो नहि देल जयतैक। मैया पुजारीजीके कलशथापने दिन सपना देलखिन, त' पंडिजी सब विचार केलखिन जे मैयाकेँ एहि बेर सब सीरा चढ़तैक आ जतरा दिन मैयाक संगे सबके भसाओल जयतैक।'

•

बाबूजी

सुजीत कुमार झा

पेशासँ पत्रकार छथि सुजीतकुमार झा आ निरन्तर साहित्य सृजनमे लीन रहैत छथि। चिड़ै, रिपोर्टर डायरी, जिद्दी, गन्ध, खजुरीबाली, बुलबुल (कथा-संग्रह), कोइली घूरि आउ आ तितली संग दोस लगाएब (बालकथा-संग्रह) कुल्लम आठटा पोथी प्रकाशित छनि।

नेपालक एभि न्यूज टिभी, राजधानी दैनिक पत्रिका आ शिलापत्र आनलाइनसँ जुड़ल छथि। जनकपुरधामसँ मैथिली आ नेपाली भाषामे प्रकाशित 'दूधमती'क साप्ताहिक सम्पादक सेहो रहल ओ पूर्वमे 'मिथिला डॉटकम' दैनिकक सम्पादक सेहो रहल छथि।

सम्पर्क : जनकपुर (नेपाल)

मो. +977 9844101567

जखन रिक्सा बाहर आबिक' रुकल त' भोर भेलाक बादो देखाइ द' रहल छल। ओ अपन घरक गेटक आगा रिक्सा रुकबौलनि आ सामान उतारिक' ओकरा पैसा द' बिदा कएलनि।

रिक्सा गेलाक किछु देर बाद धरि ओ अपन सामान ल' ओतहि ठाढ़ रहलाह। हुनक घरबला पंक्तिमे चारिटा नव घर बनि गेल छल। दूटा घर बनएकेँ खबरि त' ओ सुनने रहथि मुदा ई तेसर, चारिम प्लॉट कहिआ बिका गेल आ घरो बनि गेल? सोचैत ओ घर दिस निहारए लगलथि।

फेर ओ कॉलवेल बजौलनि। माँ गेट खोललाक बाद आश्चर्यसँ हुनका दिस ताकए लगलीह। माँ हुनका चिन्हएकेँ कोशिश क' रहल रहथि! पहिचानक एहन संकट? ओ डेरा गेलथि। कि डेढ़ सालमे एतेक बदलि गेलथि अछि? केश किछु बेसी उज्जर भ' गेल अछि, मुदा ओ त' असमय अछि...। शायद मोटा बेसी गेल छथि।

'आ ...भीतर आ।'

'गोर लगैत छिऔक!' ओ पएर छुलनि।

घरमे घुसिते पहिल नजरि ओछाओन पर पड़लनि। बाबूजी ओतए नहि रहथि।

'बाबूजी कि एतेक ठण्ढमे सेहो...?'

'आओर की, नियम धर्मकेँ पक्का छथि...' माँ बिहुँसली।

माँ सीड़कमे पएर राखिक' बैसि रहलीह। ओहो कुर्सी खिचिक' ओतहि बैसि रहलाह। माँ हुनका दिस देखिक' बिहुँसि रहल छलीह। ओ माँकेँ ध्यानसँ देखए लगलाह। एहिसँ पहिले एक्कहुँ बेर माँ लग नहि बैसि पाएल छलाह। माँ कतेक बदलैत जा रहल छथि, हरेक बेर ओ दोसर माँ पबैत छथि। चेहरा घोंकचि रहल छल।

'माँ, तोँ त' बुढ़ भ' रहल छेँ?' ओ बिहुँसि क' बजलाह।

'जखन हमर सन्तान बुढ़ होबए लागल त' हम त' बूढ़ होबे करब।' माँ हुनका निकलैत जा रहल पेट दिस देखिक' बिहुँसलीह।

ओ लजा गेलथि आ नजरि हटाक' रुमकेँ चारु दिस देखए लगलाह। अलमारीमे नव सीसा लागल छल। ऊपरबला खन्नासँ रेडिमेड फुलसभ हटा देल गेल छल आ ओतए भगवानक किछु फोटो आ मूर्ति राखल छल।

नीचाँबला खन्ना पर किछु किताब आ बीचबला खन्ना पर दूटा फोटो राखल छल। एकटा फोटो पूरे परिवारकेँ छल जाहिमे माँ बाबूजी आगा कुर्सी पर बैसल छलथि आ ओ तथा छोटू कूर्सीक पीठ पर हाथ राखि ठाढ़ छलथि।

'तोहर बाबूजी प्रत्येक दिन पूजा करैत छथुन!' माँ बतबैत हँसए लगलीह।

'की ...? बाबूजी आ पूजा?' ई सुनि हुनका बहुत आश्चर्य भेल। जाहिमे ओ बहुत देर धरि डुबल रहलथि। बाबूजी त' शुरुएसँ महानास्तिक लोक छलथि जे माँकेँ पूजा पाठ आ उपवासक विरोधमे नम्हर-नम्हर लेक्चर पियबैत छलथि। आ आब स्वयं पूजा...?

'...आ सुन, माछ माउस सेहो खाएब छोड़ि देलखुन अछि। कहैत छथि, अहाँ नहि

खाइत छी त' हमरो नहि खएबाक चाही। माछ-माउसबला सभ बर्तनकेँ स्टोरमे राखि देने छी।' माँ ओहि गतिमे बता रहल छलीह।

हुनका बुझएमे बाबूजीक ई क्रियाकलाप नहि आबि रहल छलनि।

हुनका भ' की गेल छनि? हुनका आगाँ बाबूजीक कड़ा चेहरा घूमि आएल। हुनका अपन बाल्यपनक, पूरान दिन स्मरण आबए लागल, जखन बाबूजी घरमे तानाशाहक हैसियत रखैत छलथि। एतेक कड़ा जे हुनका जाएमे डर लागए आ एतेक अनुशासनवला की घरक गाछवृक्ष सेहो हिलएसँ पहिने हुनकर आदेश लए। पुरुष होबएकेँ अभिमान हुनका पुर्खेसँ भेटल छल। बाबा गामक जमिन्दार रहथि आ ओ पूरे जीवनमे दाइसँ एक्कोबेर प्रेमसँ बात नहि कएलनि। बाबूजी हुनकोसँ दू कदम आगाँ छलथि। ओ माँकेँ हरेक बात, चाहे ओ सही हुए वा गलत एतेक डपटिक' कहैत छलथि माँ डेरा जाइत छलीह।

कारण शायद रहल हेतनि अवचेतनमे बैसल किछु बात आ किछु संस्कार। बाबा आ हुनकर मण्डली आपसमे बैसिक' बात करैत छलथि त' तेज आवाजमे किछु शिक्षा निकलैत छल जे अप्रत्यक्ष रूपसँ होइत छलनि। महिला पएरक खराम होइत अछि, ओकरा बेसी माथ पर नहि चढ़ाओल जाए, पुरुषकेँ महिलाक कोनो बात नहि मानबाक चाही, महिलाकेँ भोजन बनाबएसँ बच्चा पालब बाहेक किछु नहि सोचबाक चाही आदि-आदि।

माँ पूरे बात दाइसँ सुनिक' फेर अपन अनुभवसँ शिक्षा प्राप्त क' अपना लेल एकटा सीमा खिचने छलीह। माँ कहैत छलीहि जे बाबूजी विवाहक बाद कए-कए दिनधरि माँसँ बजबे नहि करैत छलाह। माँ शाकाहारी छलीह आ ओ ओहि बर्तनमे माछ, माउस खाइत छलीह। कहिओ बजारसँ किनिक' अनैत छलथि आ कहिओ लाबि क' माँकेँ बनाबएकेँ आदेश दैत छलथि। माँ नाक बन्द क' कनैत बनबैत रहैत छलीह। ओहि समय माछ माउस बनाबए सेहो नहि अबैत रहन्हि समय सभ किछु सिखा देने रहन्हि। बादमे माछ माउस ओ बहुत नीक बनाबए लागल छलीह। एकर किछु दिनक बाद त' ओ स्वयं कहिओ-कहिओ बजारसँ माछ-माउस आनि हमरा आ बाबूजीकेँ प्रेमपूर्वक खुअबैत छलीह।

बाबूजी पढ़ल लिखल रहथि आ विवाहक डेढ़-दू वर्षक बाद शहरमे नोकरीक लेल आबि गेलाह, एहि द्वारे ककरो शिक्षाकेँ बहुत दिनधरि आवश्यकता नहि पड़लनि। किछु दिनक बाद ओ माँसँ बढ़ियाँ जेकाँ व्यवहार करए लगलाह। बढ़ियाँ जेकाँ व्यवहार करएकेँ अर्थ ई नहि छल जे माँकेँ काजमे हाथ बटाएब वा माँकेँ कहला पर कोनो निर्णय लेब। हँ, माँकेँ बातक बात पर डाँटब छोड़ि देलनि आ हुनकर बातकेँ एकबेर सुनि अवश्य लैत छलथि, भलेहि अन्तिम निर्णय स्वयं लैत छलथि। माँ बतौने छलीह जे सुनएमे भलेहि ई परिवर्तन छोट लागए मुदा हुनका जेहन मनुष्यक लेल ई बहुत क्रान्तिकारी छल।

'चाह पिबेँ?' माँ ओछाओन परसँ उतरैत पुछलीह।

'हँ... हँ... बनो ने!' हुनकर तन्द्रा टुटल। माँ किचेनमे चलि गेलीह आ ओ टहलए लगलथि।

'परसू राति टीभी पर तोहर कार्यक्रम देखलिऔ, बहुत बढ़ियाँ छल।' माँ किचेनसँ बजलीह।

'हँ ...बाबूजी सेहो देखलखुन?' ओ आवाजमे कनि जोर क' क' पुछलनि।

'हँ... हँ... ओहो देखलखुन।'

हुनकर मोन भेलनि ओ पुछथि जे बाबूजीकेँ कार्यक्रम केहन लगलनि, मुदा चुप्प रहलथि। माँकेँ स्वयं बतेबाक चाही। ओ बुझैत त' छथि एहि सम्बन्धमे बाबूजी कहिओ हुनकर प्रशंसा नहि करताह आ ओ कहिओ ई देखाबएकेँ प्रयास नहि करताह जे बाबूजी हुनका विषयमे जे सोचैत छथि, ओकरा बुझबाक हुनका भीतर कोनो इच्छा वा उत्कण्ठा अछि।

माँ चाह ल' क' ओछाओन पर चलि अएलीह। ओ बहुत प्रसन्न देखाइ द' रहल छलीह। वर्तमान घटनाक्रमकेँ जेना हुनका पर कोनो असरे नहि पड़ल छल। की माँ छोटूक कारण कनिको दुखित नहि अछि? जखन ओ अपने मोनसँ स्वजातीयमे विवाह कएने रहथि त' सुनने रहथि जे माँ हप्तो अनजल त्याग कएने छलीह। छोटू त' दोसर धर्मबलासँ विवाह कएलनि अछि। फेर माँ एतेक प्रसन्न कोना देखा रहल छथि, ओहो मात्र 4-6 महीनामे...?

'कनियाँ केहन...? आ साक्षी...?' माँ चाह पिबैत पुछलीह।

इहे विषय अछि जाहि पर माँ आ बाबूजीसँ बात करैत ओ स्वयंकेँ अपराधी बुझए लगैत छथि।

बाबूजी त' एहि मुद्दा पर एक-दू बेरक बाद त' बाते नहि कएलनि, मुदा माँ ...? ओ त' जेना अपना-आपकेँ सम्हारि लेने छथि।

'ठीक अछि दुनू,' ओ खिड़की दिस तकैत जवाब देलनि।

'साक्षी त' आब बड़का भ' गेल हएत?' माँ वात्सल्यसँ बिहुँसैत पुछलीह।

'हँ, आब स्कूल सेहो जाए लागल छैक।'

'अच्छा... हमरा ओकरा देखबाक मोन करैत अछि मुदा...' माँ किछु कहैत-कहैत रुकि गेलीह।

'सत्ते...? त' चल ने हमरा संग। जखन मोन करौ एतए छोड़ि देबौक!' ओ चहकि उठला।

'तोरा बुझल नहि छौ बाबूजी असगरे भ' जेताह!' माँ ठण्ढा श्वास लेलीह।

'माँ किछुए दिनक लेल चल ने...। बाबूजीसँ सेहो कही ने चलए लेल!' ओ माँकेँ ठेहुन पर हाथ राखि प्रसंगकेँ भावनात्मक बनबैत कहलनि, मुदा तुरन्ते अनुभव भेलनि ओ एकटा असम्भव बात कहि देलनि अछि। ओ एकटा सम्भव विकल्प रखलनि, 'तो चल ने माँ। बाबूजी असगरो रहि सकैत छथि किछु दिन। हम हुनकासँ बात करब।'

'किए, तोरा किए नहि जाए देथुन? की हमरा एतबो अधिकार नहि अछि...?'

माँ किछु परेशान भ' सोचए लगलीह। फेर अचानक बिहुँसैत बजलीह, 'हुनकर किछु पता नहि, हमरा जाए नहि देताह। बुझल छौक की कहैत छथि? पहिने कहैत छलथि जखन हमर बच्चेकेँ हमर चिन्ता नहि अछि त' हम ओकरासभकेँ किए करु आ आब...।'

'आब की कहैत छथि?' ओ बुझएकेँ लेल उत्सुक भ' उठलथि। किए की पहिनेबला बात ओ बुझैत छलाह, मुदा आब बाबूजी की सोचए लागल छलथि?

'आब...? आब बच्चा सभ पर कोनो तामस नहि करैत छथि बच्चाकेँ अपन जीवन जीबय दिअ सुनिता हम अपन फर्ज पूरा क' देलहुँ। हमरा आब ओकरासभसँ कोनो अभिलाषा नहि रखबाक चाही। हम कोनो व्यापारी छी जे हरेक बातकेँ बदला खोजब? ओ किछु करैत अछि हमरा लेल त' ठीके, हम स्मरण करैत छी, हमरा लग अबैत अछि, तैयो ठीक नहि त' हम एक दोसरकेँ अकेलापन बाँटि सकैत छी। हमरा बेसी मोह माया नहि बढ़य। बाक चाही आ आओर त' हमरा गीताकेँ पता नहि की-की श्लोक सुनाक' ओकर अर्थ कहए लगैत छथि। माँ बिहुँसैत बतबैत जा रहल छलीह। ओ माँकेँ प्रसन्न देखि खुश रहथि।

'हँ एहन बात करए लागल छथि ओ...?' हुनका विश्वासे नहि भ' रहल छनि, अपन जिद्दकेँ हरेक समय सही बुझएबला आ जीवनमे कहिओ हारि नहि मानएबला मनुष्यक विषयमे सुनिक' हुनक हृदय एहि बातकेँ सत्य होबए पर विश्वास नहि क' पाबि रहल छल।

'ओ त' बहुत बदलि गेल छथिन...' माँकेँ ई बात सुनिक' बहुत प्रसन्नता भेल। प्रसन्न त' ओहो छलथि, मुदा एकर पाछु त' कोनो ठोस आधार नहि बुझि पाबि रहल छलथि।

'एहन परिवर्तन कहिआसँ आएल अछि हुनका भीतर...? की छोटूक विवाह कएलाक बादसँ...?' हुनका मोनमे जे आशंका रहनि, ओ आगाँ राखि देला।

माँ कनि देरक लेल रुकि गेलीह, फेर अचानक जेना किछु स्मरण आएल होनि, 'हँ एकदम ओकरे बाद नहि... परिवर्तन त' तोरे विवाहक बाद शुरु भ' गेल रहनि।'

'केहन अछि छोटू...?' ओ पुछलनि।

'बढ़ियाँ अछि। हरेक दू-तीन दिनक बाद फोन क' हालचाल पुछैत रहैत अछि, महीना डेढ़ महिनामे घरो अबैत अछि। एहिबेर त' अपन कनियाँकेँ सेहो अनने छल। ओहो बढ़िया छथि। बहुत जल्दी पूरे हिन्दू संस्कार सीखि लेने छथि ओ। तोहर बाबूजीसँ त' खूब बात करैत छलीह, तोहर बाबूजी सेहो हुनकर खूब प्रशंसा करैत छलथि।'

हुनका बड़का झटका लगलनि। बाबूजी बात करैत छथि अपन पुतहुसँ, ओ पोतहु, ओ पोतहु जे दोसर धर्मक छथि, जेकरा लेल बेटा घरक विरोध क' क' विवाह कएलनि। हुनकर दृष्टिकोण एतेक विस्तृत भ' गेल अछि हुनका बाबूजीसँ भेटएकेँ उत्कंठा बढ़ैत जा रहल छल।

'तों त' जेना पूरे सम्बन्धे समाप्त क' लेने छेँ। अबैत छेँ साल-साल भरि पर आ चलि जाइ छेँ एक दू दिनमे, कनियाँ आ बच्चाकेँ सेहो नहि लबैत छेँ। कतेको बेर कहलिऔ तोरासँ जे कनियाँ आ बच्चाकेँ छुट्टीमे एतए पहुँचा दे, दस दिनक लेल किए नहि। मुदा तोरा त' अपन बाबूजीसँ ठनल रहैत छौ!' माँ जेना शिकायतक पुड़िया खोलि देलनि।

'बाबूएजी त' कहने रहथि एहि महिलाकेँ अपन घरमे घुसए नहि देब। आब जहिआधरि ओ स्वयं नहि कहता, तहिआ धरि हम हुनका नहि लाएब!' ओ माँकेँ आँखिसँ आँखि मिलबैत बीना कहलनि। ई बात ओ बहुत पहिने तय क' लेने रहथि। आखिर ओकरो त' कोनो स्वाभिमान छैक।

'आ तों मानि लेलए? ओ त' तामसमे कहने छलखुन। स्मरण नहि छौ तोरा आ छोटू पर कतेक गर्व करैत छलाह, देखने नहि छहुन जखन तोहर काकासँ झगड़ा भेलैक त' ओ सभकेँ आगाँ कहने छलाह हमरा कोनो मतलबी कुटुम्बक आवश्यकता नहि, हमर दूटा बेटा दू करोड़क अछि आ तोसभ आइधरि कोनो बात नहि मानलए, हुनकर मोन लायक कोनो काज कएलए। तामस आएब त' स्वभाविक छल।'

सत्ते कहैत छथि माँ-बाबूजी सहीमे हुनका आ छोटूकेँ बहुत मानैत छलथि। एकटा हुनकर मित्र पुलिसमे बड़का पोस्ट पर छलथि, हुनकासँ जेठकाक लेल नोकरीक बात कएने छलथि। तहिना घर बनबैत समय छोटूक लेल आगाक स्थान दोकान, शो रुम वा ऑफिस खोलए लेल सुरक्षित रखने छलथि। तहिना घर बनबैत समय छोटूक लेल देखएकेँ हुनकर सपना रहन्हि। एकटा बेटा घरमे रहबाक चाही, हुनकर एहन अटल मान्यता छल। मुदा हुनकर बेटा हुनकर छोट-छोट अभिलाषा सेहो पूरा नहि क' पओलनि। ओ पढ़ाइ पूरा करिते मित्रकेँ संग काठमाण्डू चलि गेलथि। आ संघर्ष करैत-करैत मिडियामे अपन बढ़िया नाम कमा लेलनि। ओतहि अपन सहकर्मी संग विवाह क' लेलनि। छोटू पोखरा चलि गेला आ कैन्टीनकेँ ठिक्का लेबए लगलथि। बहुत पैसा भेलाक बाद हुनकोसँ दू कदम आगाँ

निकलि क' एक गैर हिन्दूसँ विवाह क' लेलनि। बाबूजीक प्रतिक्रिया त' ठीके रहनि। हुनकर बेटा लायक भेलाक बादो हुनकर बात नहि मानलकनि। तामस त' होएबे करत। मुदा हुनकर आ बाबूजीक मानसिक संघर्षमे बेकारमे माँ पिसा रहल छलीह। आब ओ अवश्य प्रमिला साक्षीकेँ ल' अएता। यदि बाबूजी एकबेर स्वयं लाबएकेँ लेल कहि देताह त'...।

बाबूजीकेँ भोरमे मार्निंग वाक करएकेँ नियम पुरान छनि। जखन ओ छोट रहथि त' बाबूजी हुनको घुमाबए ल' जाइत छलाह, मुदा जेना-जेना बड़का होइत गेला, बाबूजीक लगाएल सभ आदत छुटैत गेलनि।

किछु देरक बाद कॉलवेल बाजल। गेट खोलए वएह गेलथि।

'आरे तोँ...?'

'गोर लगैत छी बाबूजी!' ओ पएर छुलनि।

'नीके रह, की हालचाल?'

हुनका लागल जेना बाबूजीक चेहरा पर वएह भाव अएतन्हि जे पहिने हुनका देखिक अबैत रहनि। मुदा हुनकर चेहरा एकदम शान्त छल। ओ भीतर जाक' सोफा पर बैसैत बजला, 'आ बेटा, भीतर आ।'

हुनका शब्द पर विश्वासे नहि भ' रहल छल। बाबूजी नहि जानि कतेको बर्षक बाद बेटा कहने रहनि। ओ जाक' हुनका आगाँमे बैसि रहलाह। ई एकटा साधारण घटना कतहुँ नहि छल।

'कखन अएलएँ?'

'जी, एक डेढ़ घण्टा पहिने...।' ओ बात करैत स्वयंकेँ असहज अनुभव क' रहल रहथि।

'पेट कोना रहैत छौक, आइ काल्हि?'

अत्यधिक आश्चर्य। हुनका लागल जेना ओ कोनो सपना देखि रहल होथि। बाबूजी हुनकर स्वास्थ्यक बारेमे पुछि रहल छथि। पेटक रोगी ओ बच्चेसँ छलथि। ओ बहुत सम्हरलाक बाद बजला, 'जी, आइ-काल्हि ठीक अछि।'

'चल बढ़ियाँ। आओर सभ...?'

'जी सभ किछु ठीके अछि।'

'कनियाँ आ साक्षी बेटी?'

'जी ...दुनू ठीक अछि।' ओ आँखि फाड़िक' एहि सत्य पर विश्वास करएकेँ कोशिश करैत बजला।

बाबूजी किछु देरक लेल चुप भ' गेलथि। माँ जलपान बनाक' लौने छलीह। जलपान बीचमे राखिक' बाबूजीक बगलमे बैसि रहलीह। बाबूजी चाह उठबैत बजला, 'तों केहन होइत जा रहल छें दिन-प्रतिदिन? जेना 45 सालक अधेड़ हुअएँ। केश एतेक उज्जर होइत जा रहल छौ आ पेट...? एना लगैत अछि जेना हलुवाइ हुअएँ। देखैत छियैक सुनीता? हमरा लगाओल मार्निङ्गवाकक आदत अपनौने रहैत त' आइ पैंतीसक उमेरमे चौबनके नहि लगैत... कनी स्वास्थ्यक सेहो ध्यान राख बेटा।'

ओ बिहुँसए लगलाह। बाबूजी सेहो बिहुँसि रहल छलाह। माँ दुनूकेँ एहि प्रकार बात करैत देखि प्रसन्न छलीह। ओ किछु देरमे उठिक' किचेनमे चलि गेलीह।

'एखन रहबएँ ने किछु दिन?' बाबूजी खोज खबरिकेँ हिसाबसँ पुछलनि।

'जी मात्र एक दिनक काज टिभीकेँ अछि... काल्हि साँझमे चलि जाएब।'

बाबूजी किछुदेर धरि हुनका देखैत रहला, फेर आवाज उच्च करैत माँसँ कहलनि, 'सुनीता हमरा तरकारी द' दिअ। मुँह धोलाक बाद तरकारी काटि देब आ अहाँ आँटा सानि लेब।'

ओ मुँह धोबए बाथरुममे चलि गेलथि। हुनका बाबूजीसँ भेटिक' हुनकर ई रूप देखिक' आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता भेल छल। मुदा पता नहि किए एकटा आओर आश्चर्यजनक भावना मोनमे घुमड़ि रहल छल। उदासी, निराशा, तामस, आत्मग्लानि वा एहिमेसँ कोनो भावनासँ मिश्रित कोनो नव भावना जेकरा पहिचानलाक कारण ओ कोनो संज्ञा देबएमे असमर्थ छलथि। ई भावना हुनक प्रसन्नताकेँ रोकि रहल छल। एहिमे एतेक प्रसन्नता होबएबला बातो नहि। सत्य त' इहे छल बाबूजीक ओ रूप शुरूसँ देखैत अबैत रहथि, ओहिमे एक सय अस्सी अंशक परिवर्तन हुनका बहुत बढ़िया नहि लागि रहल छल। ओ शुरुएसँ एकटा तानाशाह जेकाँ रहल छलथि। हुनका एहि प्रकारे हँस्सी क', हुनक बराबरीमे बैसिक' बात करब बढ़िया नहि लागि रहल रहनि। ओ माँकेँ काजमे सेहो हाथ बटाबए लागल छलथि। हुनकर दृष्टि निश्चिते बदलल अछि, मुदा किए? ओ सहीमे माँकेँ सहायता करए चाहैत छथि वा हुनका डर छनि। माँ सेहो हुनका हुनकर बेटा जेकाँ असगरे नहि छोड़ि देथि? बाबूजी मुँह धोक' आबि गेल छलाह। शोफा पर बैसिक' ओ अखबार उठौलन्हि आ कुर्ताक जेबमेसँ चश्मा निकालिक' लगा लेलनि आ बढ़िया जेकाँ अखबारक पन्ना पलटय लगला। ओ आश्चर्यमे छलाह। हुनकर माथ जेना चकराए लागल छल। बाबूजी हुनकर चश्मा लगौने छथि। वएह चश्मा, जाहि तरहक चश्मासँ हुनका बहुत चीढ़ रहनि।

जखन एकबेर ओ अपन पावरकेँ सीसा नव फ्रेममे लगाक' अनने रहथि त' बाबूजी बहुत तमसाएल छलथि।

'ई सिनेमा फैसनबला चश्मा पहिरबेँ तोँ? एतेक छोट-छोट सीसा जाहिमेसँ आँखि बाहर तकैत रहैत अछि? उठाक' बाहर फेकि एकरा। जाक' बड़का सीसाबला चश्मा जेकाँ। जेना विद्यार्थी लगबैत अछि...' बाबूजी कड़कि क' बाजल रहथि। आ सहीमे डेराक' ओ चश्माकेँ नुका देने रहथि आ दोसर चश्मा आनि लेने रहथि। बादमे ओ एहि तरहक चश्मा बाबूजीक आगाँ नहि लगौने छलथि। ई चश्मा ओ गल्तीसँ छोड़ि गेल रहथि जखन अगिला बेर आएल रहथि त'।

'बाबूजी, ई चश्मा...?' ओ किछु नहि बुझि पाबएकेँ स्थितिमे रहथि, बहुत परेशान आ बहुत कन्फ्यूज्ड।'

'हँ ई त' तोरे छौक।' बाबूजी चश्मा निकालिक' एकबेर देखला आ फेर लगा लेलनि।

'अहाँ बला...?'

'ओ? ओ त' अलमारी पर राखल छैक। हमरा लगैत अछि ओहिसँ एहिमे साफ देखाइत अछि।'

'हँ ...।' ओ फेर चकित छलथि।

'तोँ फ्रेस-त्रेस भ' जो फेर संगे खाएब।' बाबूजी फेर अखबार पढ़ए लगलथि।

ओ बेचैन भ' गेला आ उठिक' टहलए लगलथि। बाबूजीसँ एहि तरहक मित्रवत व्यवहारकेँ नहि ओ कहिओ अभिलाषा रखने रहथि आ ने हुनका बढ़िया लागि रहल छलनि। एकटा चट्टानकेँ एहि प्रकारें धसब, एकटा पहाड़केँ झुकि जाएब हुनका अखरि रहल छल। जे कहिओ ककरो आगा नहि झुकला, भगवानक आगाँ सेहो नहि, आइ ओ एतेक नरम भ' गेल छथि। पूरे परिवारकेँ, पूरे अनुशासन आ कठोरतासँ नेतृत्व करएबला सम्राट आइ स्वयं हारि गेल छथि। एहि समझौताक लेल हुनका के विवश कएलक, हुनकर सन्ताने त'। एतेक असुरक्षित स्वयंकेँ ओ अपन बेटेक कारणसँ अनुभव कएलन्हि अछि। ओ लगातार अपराधबोधमे धसैत जा रहल छथि। टहलैत ओ अलमारीक लग गेलाह आ बाबूजीक पुरान चश्मा उठाक' देखए लगलाह। ओ चश्मा लगेलाक बाद हुनका लागल जेना हुनको ई पहिरला पर पहिनेसँ साफ देखा रहल छल, हुनकर स्वयंकेँ चश्मासँ बेसी साफ। किछु देरधरि ओ चश्मा लगौने घुमैत रहला आ फेर आबिक' बाबूजीक आगाँ बैसि रहलाह।

'एहि बेर प्रमिला आ साक्षीकेँ ल' क' आएब बाबूजी।' चश्मा हुनका एकदम फिट लागल छल।

'हँ बेटा, एहिबेर छुट्टी किछु बेसीए दिन निकालिक' अबिहेँ!' बाबूजी अखबार पढ़ैत बजला।

भानसघरसँ कचरीक सुगन्ध आबि रहल छल। शायद माँक हाथक कचरी दुनूकेँ अपना दिस तानएकेँ प्रयास क' रहल छल।

•

बिभा कुमारी

विशेषण

पैघ-पैघ विशेषण तरमे
दाबि देल गेलै स्त्रीके
सभ किछु ल' लेल गेलै
बदलामे नियम-धरम
आचार-संहिताक तेहन
शृंखला जाहिमे
एकबेर ओझरा
बहरा नहि सकथि
दाबल रहथि सभदिन
विशेषण सभक
जाँत-सिलौटक तरमे
बुकनी करैत रहथि
अप्पन अस्तित्व अपने हाथे।

•

सम्पर्क : राजनगर
मो. : 8368419386

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

प्राज्ञ परिषद सदस्य
नेपाल संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

मानैत छी जे नहि अछि एक्खन, दुनियाकेर भूगोलमे
तैयो छी हम बचा क' रखनहि जकरा माइक बोलमे
सोहर, लगनी, जटाजटिन कि झिझिया, साँझ, परातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

लोहछल नस-नसमे एखनहुँ तिरहुतिया सोनित बरकैए
केहनहु बज्जर मैथिलकेर धड़कनमे मिथिलहि धड़कैए
जिनगीक तुलसी चौरामे नित बरैत दीपक बातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

बगय-बानि बदलल रहितो माथा संस्कारक पाग जत'
विद्यापतिकेर गीतक संग पसरल मधुमय अनुराग जत'
होरीक रंग, धुरखेलक संग सुकरातीक उक्कापातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

सरुजक अगुआनीलए जइठाँ महिँस-पीठपर पसर खुलै
सैर बराबरि गबैत जत' पौरखिया चाँचर प्रेम झुलै
करसी जरबैत घूरमे आ' कनकन्नी पचबैत गाँतीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

मन-मनमे दहबैत चिनगीकेँ हवा लगा क' प्रखर करी
अन्हड़िमे बहबैत जिनगी ठेकनाएल पथपर मुखर करी
कत'-कत' बौआएब कते, जोड़ी मन-तार गतातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

•

सम्पर्क : काठमाण्डू, नेपाल।

चैम्पियन

सोनू कुमार झा

हरिनगर गाम निवासी युवा कथाकार सोनू कुमार झाक 'गस्सा' नामसँ कथा-संग्रह प्रकाशित छनि। एहि कथा-संग्रह लेल हिनका चेतना समिति पटना द्वारा डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार भेटल छनि। विभिन्न पत्र-पत्रिका सबमे हिनक कथा सब छपैत रहैत छनि। सोनू मैथिली विषयसँ एम.ए. ओ नेट उत्तीर्ण छथि। हालहिमे मायानंद मिश्रक उपन्यास पर हिनक पी-एच.डी सेहो सम्पन्न भेल छनि। वर्तमानमे ई आकाशवाणी दरभंगामे नैमित्तिक प्रस्तोताक रूपमे कार्यरत छथि। सम्पर्क : मो. : 6202649608, 8877765673

'माय गे हमहूँ उसकुल जाउ?'

'गे भक्क! छौंड़ी कतौ उसकुल गेलैय'!'

बजैत मदीना माय तरकारीक पथिया उठाक' बिदा भ' गेलि बेचय लेल आ मदीनाकेँ कहैत गेलि— 'खा लिहे तब बाध जइहे।'

मदीना सेहो खुरपी, पथिया ल' क' विदा भ' गेल बाध दिस। आइ ओ जलखै नहि केलक। पथियामे अपन रोटी राखि लेलक। दिनमे दू खेप बाध जाइत अछि त' महिंस लेल घास अनैत अछि। आ दोसर खेप बेरियामे जाइत अछि त' पतलोइ अनैत अछि। बीचमे आबि घरक सभटा काज सेहो करैत अछि। भरि दिन मदीना अपनेमे व्यस्त रहैत अछि। ओना दिनक बेसी समय ओकर संगी सभ संग बाधेमे बितैत छै। ओकरा भोरका संगीमे जरीना, फातिमा, बौका, जिबछी, करिया छैक आ संझुका संगीमे एकरा सभक संग पानदाइ सेहो रहैत छै। पानदाइ भोरखन क' बाध नहि जाइत छै। उसकुल जाइत छैक। मुदा उसकुलसँ अयलाक बाद पतलोइ आनय ओहो बाध जाइत अछि। आ पथिया भरलाक बाद सभ पाकरि गाछ तर बैसिक' खेलाइत अछि। छुकुत्ती, सतघारा आकी कबड्डी। कबड्डी खेलाएमे मदीना चैंपियन छै। कबड्डी पढ़ैत ओ तेना बिर्रो जेकाँ दौगैत छै, जे जे सामनेमे एलै तकरा चित्त केनहि घुरैत अछि। आ ओकर पीठिया-ठोकक त जवाबे नहि छै। एतबे नहि कोन गोधियाँकेँ कत' लगाओल जाए से नीक जेकाँ बुझैत अछि मदीना। जे दोसर गोधियाँक कबड्डी पढ़निहार बेसी भीतर नहि जाइत अछि। आ जे गेल से पकड़ा जाइते अछि। तेँ जखन गोधियाँ बटवारा हुअ लगैत छै, त' सब बच्चा मदिनेकेँ गोधियाँमे रह' चाहैत अछि।

ओना सब संगीमे एकरा पानदाइ संगे बेसी आपकता छै। आ कबड्डी खेलेबाक काल सब दिन दुनू दू दिस रहैत अछि। जतबे एकरा दुनूमे आपकता छै। खेलेबा काल ततबे प्रतिद्वंद्विता। पानदाइ त' स्कूलोमे खेलाइत छैक। मुदा मदीना बस बाधेमे। तैयो पानदाइ मदीनाक लोहा मानैत छैक। मदीना संग खेलेबामे ओकरो नीक लगैत छैक। जल्दी दुनूक खेल फरिछाइत नै रहैत छैक।

काल्हि पानदाइ नै पायल रहै, से मदीना के खेलेबामे मोन नै लगै। तुरते खेल फरिछइ जाइ। आइ फेर खेल जमतै। सभ जल्दी-जल्दी पतलोइ बिछैत अछि। एही बीच मदीना पुछलकै— 'काल्हि कत' रहक बहिना?'

'काल्हि खेले लेल दोसर ठिम गेल रहियै।'

'दोसर ठिम कत' खेलाए गेल रहक है?'

'अपना उसकुल दिससँ खेले गेल रहियै, बेल्हवार।'

'उसकुलमे खेलाएलो जाइ है? उत्सुकता बस मदीना फेर पुछलकै।'

'हाँ है! उसकुलमे पढ़ाइयो होइ है। आ खेलेनाइयो। तुहू किएक ने नाम लिखा लैत छ।'

'हमर माय नाम नै लिखा दै है।'

'ऊँ.. पागले ह' तोरो माय बाउ किएक ने कहै छहक जे बलू उसकुलमे डिरेस भेटै है, पाई भेटे है साइकिलो भेटे है

आ खाइले सेहो भेटे है। एकदम बुझनुक बच्चा जेकाँ पानदाइ मदीना के बुझब' लागल।

'त' चल ने कने तोंही बुझाक' कहियक हमर मायके।' मदीनाक बाजबमे निवेदनक भाव नुकाएल रहै।

'ठीक है हम तोरा माय के कहब। भोरे हम तोरा अंगना अबै छिय। सभ काज क' क' खेलमे लागि गेल।'

प्रात भेने पानदाइ मदीनाक अंगना गेलि। मदीना चूल्हि लग बैसिक रोटी ठोकि रहल छल। आ मदीना माय बेचाक मुरै धो-धोक' पथियामे राखि रहल छल। पानदाइकेँ देखिते मदीना अपन मायसँ कहलकै— 'माय देखही के एलौ!'

'गे के है?' मदीना माय मूड़ी झुकौनहि बाजल।

'ऊ टोलाक पानदाइ है हमर बहिना। तोरेसे भेट करे एलौअ।'

'की कहै छी बौआ?' मदीना माय पानदाइ दिस घुमैत कहलकै।

'काकी मदीना के उसकुल कैलय ने जाय दै छहक? एकरो नाम लिखा ने दहक। दुनू गोरे ज'रे जेबै उसकुल।'

'तू जाइ छहक बौआ?'

'हाँ काकी हम त' जाइ छियै।'

'लेकिन बौआ मदीना उसकुल जेतै त' घरक काम के करतै।'

'काकी तकर चिंता तों नै कर'। बहिना हमरे नाहित घरक काम क' के उसकुल जेत'! की है बहिना!' पानदाइ मदीना दिस देखैत कहलक।

मदीनाकेँ जेना साहस भेटलै। ओहो मायसँ कहलक— 'बहिना ठीके कहेहौ माय। हम घरक सब काम क' देबौ। घासो लाबि देबौ आ पतलोइयो। तू खाली उसकुलमे नाम लिखा दे।' मदीना माय मानि गेलै पानदायक गप्प। आ कहलकै— 'ठीक है काल्हि से लेने जैहक अपने जरे उसकुल। आ तू ही नाम लिखा दिहक। हम त' भोरे चलि जेबह बेचा करे। ई सुनिते दुनू बहिनाक प्रसन्नताक ठेकान नहि रहलै।

प्रात भेने पानदाइ संगे मदीना सेहो स्कूल गेल। पानदाइ मास्टर साहेबसँ अपने किलासमे मदिनाक पानदाइ संगे पँचमामे नहि लिखाक' बहुत सोच-विचारक बाद उमेरक हिसाबे मास्टर साहेब ओकर नाम तीसरामे लिखि देलखिन।

मदीना आब रोज स्कूल जाए लागल। भोरे घरक सभटा काज क' लिअए। एक खेप घासो आनि लिअए। आ तखन स्कूल जाए। आ फेर स्कूलसँ अयलाक बाद बाध जाए, पतलोइ अनबाक लेल। आ ओत' कबड्डी त' हेबे करै। एहि सब कारणे मदीनाक घर पर पढ़बाक समय नहि भेटै। धीरे-धीरे तैयो किताब पढ़' आबि गेलै। देखसा लिखय आबि गेलै।

एक दिन स्कूलक हेडमास्टर साहेब पानदाइकेँ बजाक' कहलखिन, जे अंतर जिला जूनियर कबड्डी प्रतियोगिता हुअ बला छै। ताहि लेल अपन अपन टीम तैयार क' क' लिस्टमे सबसँ ऊपर नबका विद्यार्थी मदीनाक नाम छलै। लिस्ट देखिक' मास्टर साहेब पानदाइकेँ पुछलखिन— मदीना के खेलाए अबैत छै?'

'हँ मास्टर साहेब खूब नीक खेलाए अबैत छै।'

'लेकिन हम त' कहियो खेलाइत नै देखलियै!'

'मास्टर साहेब ओ खाली पढ़बामे कमजोर छै। मुदा खेलाएमे चैंपियन छै। हम सब रोज बाधमे कबड्डी खेलाइत छी। पानदाइ मास्टर साहेबकेँ कहलनि।

'अच्छा त' ठीक छै। तोँ सब काल्हिसँ प्रैक्टिस शुरू क' दे। अगिला सप्ताह खेलाए लेल जेबाक छौ।

प्रात भेने स्कूलमे टिफिनक बाद कबड्डीक प्रैक्टिस शुरू भ' गेल। मदीनाक खेलेनाइ देखिक' मास्टर साहेब सब चकित भ' गेला। आ अपनामे गप्प कर लगला जे ठीके मदीना नीक खेलाड़ी अछि। एकरा देखलासँ लगैत अछि जे एहि बेर अपन स्कूल जितबे करत। स्कूलमे रोज प्रैक्टिस होइत रहल।

निर्धारित दिन अपन समय पर मदीना स्कूल आबि गेल। स्कूलसँ टीम विदा भ' गेल। मदीनाक लेल ई पहिल अनुभव छलै। तेँ मोनमे बहुत तरहक गप्प चलि रहल छलै। मुदा पानदाइ ओकरा थम्हने रहै।

सब टीम पहुँचि गेलै। निर्धारित समय पर खेल आरम्भ भ' गेलै। उठा-पटक चलैत रहलै। दर्शक सब खेल देखिक' रोमांचित होइत रहल। खेलक अंतिम राउंड चलि रहल छलै। खेल फरिछा नहि रहल छलै। मुदा अन्तमे फरिछा गेलै। मदीना अपन चक्रव्यूहमे फंसा लेलकै। आ ई जीत गेल। स्कूल जीत गेलै। अधिकारी तगमा दैत पीठ ठोकलकै आ कहलकै जे बिना प्रशिक्षणक ई एतेक नीक खेलेलक अछि। जँ प्रशिक्षण भेटै त' आर नीक खेलाएत। एकरामे नीक खेलाड़ीक सम्भावना छै।

से ठीके मदीना प्रशिक्षणक बाद नीक खेलाड़ी भ' गेल। ओ सभठाम अपन जौहर देखबय लागल। आ एक दिन अखबारमे मदीनाक बड़का फोटो छपलै। बड़का हाकिम संग गाड़ीमे मदीना अयलै। से देखि गामक सभ लोक चकित छल। असलमे मदीना जिला स्तर पर खेलेलाक बाद, राज्य स्तर पर खेलाइत राष्ट्रीय स्तरक कबड्डी प्रतियोगिता अपन झंडा फहरा आएल छल। चारूदिस ओकर कामयाबीक चर्चा भ' रहल छलै। मदीना चेम्पियन भ' गेल छलि।

ओ सिद्ध क' देलक जे जीवनक कोनो क्षेत्र हो, ओकर लगनशीलता ओकरा चैंपियन बना दैत छैक।

•

समय

डॉ. अनमोल झा

मैथिली भाषा ओ साहित्यमे लघुकथा विधाक क्षेत्रमे डॉ. अनमोल झाक नाम सम्मानसँ लेल जाइत अछि। मैथिली लघुकथाक आठ गोट पुस्तक प्रकाशनक संग हिनक एक गोट बाल कविताक पुस्तक सेहो प्रकाशित छनि। ई मैथिलीमे एम.ए., नेट, पी-एच.डी. छथि।

मैथिली साहित्यमे सर्वाधिक लघुकथाक लेखन, सर्वाधिक लघुकथा-संग्रहक प्रकाशन, पत्र-पत्रिकामे सर्वाधिक लघुकथाक प्रकाशनमे हिनक नाम अबैत अछि। ई एक हजारसँ अधिक लघुकथा लिखि चुकल छथि। एतबे नहि, मैथिलीमे कोनो विश्वविद्यालय द्वारा लघुकथापर पी-एच.डी. कयनिहारमे ई प्रथम व्यक्ति छथि।

सम्पर्क : मो.- 9433753863

जखन पन्द्रह दिन पटनामे पिताकेँ भर्ती भेना भ' गेलनि आ कियो गामसँ देखय नहि अयलनि त' सूरजकेँ बहुत आश्चर्य भेलनि, सएह कोन समय आबि गेलैक जे कियो ने देखय अयलनि आ ने खोजे-पुछारि लेबय। कियो एक-आध गोटा छोड़िक' फोनो नहि करनि जे केना छथुन केना नहि!

आश्चर्य तखनो भेलनि जे दियाद-बाद त' नहि, मुदा घरक, आस-पड़ोसक लोक आ किछु हित-अपेक्षित सेहो पटनामे अपन घर बान्हिक' छथि। किछु गोटा डेरा ल' क' सेहो। कियो नहि अयलाह कहियो। हँ, नोकरी-चाकरीबलाकेँ त' दिक्कत होइते छैक, मुदा एहि बीचमे दू टा शनि, दू टा रवि आ एक-दू टा कोनो ने कोनो छुट्टियो पड़ल रहैक। तथापि अपन लोक लेल किछु कतहुँ नहि।

सूरज पिताक इलाजक क्रममे ओ पुरना दिन, बच्चा महक मोन पाड़ैत छथि, जखन कियो दियाद-बादक या घरक अगल-बगलक या टोलेक कियो दरभंगा या पटनामे डॉक्टर लग भर्ती रहैत छलनि त' प्रायः सभ घरसँ सभ दिन कियो ने कियो जिगेसा आ रोगीक हाल-समाचार पुछय जाइत छलथि। कत्ताक बेर सूरज अपनो गेल छथि, बच्चा रहितो लोकक जिगेसामे। ओतय आगन्तुकक लाइन लागल रहैत छलैक। एहिसँ जे होइत होइ या नहि, मुदा रोगी आ घरबारीकेँ एकटा बल भेटैत रहैत छलैक। मुदा एखन सभ असगर-असगर भ' गेल अछि। ककरोसँ कोनो मतलब नहि, तेना लागि रहल छनि सूरजकेँ। सत्तेमे समय कतेक बदलि गेल अछि से सूरज सोचैत छथि, अस्पतालमे पिताक बेड लग टूल पर बैसल-बैसल!

•

साफ

मायक मृत्युक पश्चात प्रभुनारायणकेँ सभ दियाद-बाद जे बाहर रहैत छथि से दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, भोपाल, सूरत आदि जगहसँ फोन करब शुरू कयल। कियो कहनि— 'की करबैक, जे हेबाक छलैक से त' भ' गेलैक, आगाँ जे दिक्कत हो से कही, हम तैयार छी।' कियो कहनि— 'निधोख हमरा कहब, हम पाछाँ नहि...' कियो स्पष्ट रूपेँ कहनि, 'बैंक एकाउण्ट... आ की कतेक काज अछि से कहू हम पठा दैत छी। हम सभ एखन नहि अहाँ लेल करब त' कखन करब?' आदि-आदि।

ओ सभ बुझैत अछि जे गाममे एखनो बिना जयबार केने कोनो उपाय नहि छनि। जाबे तक रसगुल्ला, लालमोहनक... नहि बहि जायत, तामे कल्याण नहि! समाज संग रहबाक अछि त' ओकरा संगे आ ओकरा मोने चलबाक अछि।

प्रभुनारायण छागर-पाठी बनि गेल छथि। लोक बाहरसँ कियो अबैक लेल तैयार नहि छनि, मुदा डाक-डकौबलि क' के कतेक चाही से हम नहि हम पठायब लेल तत्पर, समर्पित। सभक नजरि प्रभुनारायणक रस्ता कातक कोत्तर पर छनि! एखनहुँ तक समाजक मोन साफ नहि अछि!

•

कोना परतारब हे तथागत

(साल-दर-साल चमकी बोखारक बलि चढ़ैत शताब्दीक संतानक स्मृति-तर्पण)

गोपाल झा 'अभिषेक'

ओहो एकटा माय छलीहि
एक मुट्ठी सरिसो अनबाक
जकरा यथार्थबोध
अहाँ सक्षम भ' गेल
सभघरमे आगाँक
ककरो ने ककरो मृत्युक
संतोष क' लेने होथि ओ
एकटा युक्तिए छल...

ओहि शोकसंतप्त मायकेँ
छलैक अहाँसँ चमत्कार
छलैक विश्वास
अहाँक ईश्वरत्व
ओकर बच्चाकेँ
मुदा अहाँ जनैत छलहुँ
मृत्युक आगू काज नहि
कोनो जेना केँ काल...
होइत छैक चिकित्सकीय...
आ यथोचित संसाधन

छोड़ि देने रही अहाँ...
जकथक
विश्वास रहल होयत अहाँकेँ
भविष्यमे अवस्से मनुष्यक...
निकालि लेल जायत...
आ अहाँक परिबोधता...
द' देने छलीह अपन मृत संतानकेँ
जल-समाधि
ओहि मायकेँ तँ अहाँ
परतारि देने रहियैक हे अमिताभ!
मुदा आजुक शताधिक मायकेँ
कोना परिबोधक हे करुणाकर
करूण-क्रंदन सुनि-सुनि जकर
अवस्से विचलति भ' रहल होयत अहूँ आइ

हे बोधिसत्व!
तत्क्षण उचित समाधान नहि नीक लगबाक
कारणे
अभिशापित भ' गेल अछि
ई जन-क्षेत्र
बेबस भ' गेल अछि
अधुनातन व्यवस्था
आन्हर भेल अछि
अनुसंधान प्रवृत्ति
असमर्थ छथि
आधुनिक जीवनदाता
पंगु बनि चुप्पी साधि लेन छथि।
नीति-नियंता

हे मृत्युञ्जय!
आब यथार्थक दिग्दर्शन नहि
करुणाक वर्णन चाही
महावर्षण
अहूँकेँ नेत्रद्वय केर-कोरमे नीर चाही
दयासागर!
नोकर अजस्र धार
सएह मात्र बचा सकत
हमर सभक भविष्यकेँ!

•

सम्पर्क : सप्ता, मधुबनी, मो. - 9122019246

अहींक रोपल

मुन्नी कामत

नहि कहू... हमरा
कलंकिनी, निर्मोही, कुरूपनी
नहि पहिराउ हमरा उतरीक हार
हम तँ छी निर्मल, शीतल
गामक काते-कात बहैत
सुखैत कंठक तरास
निश्छल नदीक धार

सिहरैत रही हमहूँ
जखन अहाँक दाबा ढहैत छल
पोछैत रही अपन लोड़
जखन बरेड़ी पर पानि हुलकैत छल
की करी, बेबस रही हम
आ अहाँक साँस उखड़ैत छल

हमहूँ कतेक सहब
उफनैत अपन धारकेँ
कतेक पँजिया क' राखब
बेर-बेर अहाँ हमरा रस्तामे
कतेक तटबंध बनेलहुँ
हमरे घरमे कहू हे मानुष
किएक हमरा कैद कयलहुँ

आबो चेतू हे मानुष
बंद अपन शोध करू
नहि ललकारू प्रकृतिकेँ
धधकैत अंगारमे नहि हाथ धरू
नहि तँ आओर भयावह
रूप संगे प्रकट हएब
अहाँक आश आ लोड़क टघार
सब अपना पेटमे समेटने
डकरैत, हँसैत अहिना चलि जायब!

•

सम्पर्क : दिल्ली, 9818832568

डॉ. शेफालिका वर्मा

त्रस्त कोसी

हमर मोनक कोमल वृंतसँ अहाँ
अपन घरक निर्माण केलौं
हमर भावना के वरि हमरे पर
शर-संधान केलौं
हम त' छलौं आत्मा अहाँक
नदी मात्र हमरा बुझलौं
बेटी हिमालयक हम
मस्त अल्हड़ चंचल सन
छागर-पाठी सिन्नुर क' लैत पूजा
धराक कोरमे
उन्मुक्त गीत गबैत छलौं! मुदा
सहन नहि भेल अहाँकेँ
हमर मुक्त हास
अनुखन विलास
बराज बनाय छातीमे हमर
कील ठोकि अहाँ देलौं
दुर्गाक सिंहनाद सन
भैरवीक निनाद सन
कट-कट विकट ठोर फुट पाँरड़ि
हुंकारैत हम रहि गेलौं
पूर्वी पश्चिमी तटबंधक कारामे
सिसकैत
नारीक नियति बुझि मौन भ' गेलौं
जखन ज्वार उठैत छल
तामसे माहुर भ'
गामक गाम
बहा दैत छलौं
कतेको प्राणीके निष्प्राण
बेघरबार बना दैत छलौं...
मुदा, अहाँक सतत उपेक्षासँ
त्रस्त भ' उठलौं हम
त्यागि देलौं लौह भुजपाशके
अपन बाट स्वयं बनेलौं
कुसहा बान्ह तोड़ि
अपन मुक्ति स्वयं खोजलौं
तैँ, महाविनाशक संहार सन
सुरुज कारी भ' गेल
कतहु बालुक पर्वत बना देलौं

कतहु जलक संसार अथाह
किन्तु
अहाँ तुरंत निर्णय ल' लेलौं
एकटा आर बान्ह बान्हि बंदिनी हमरा
बनेबाक
एकटा आर महाप्रलयक दंश सहबाक लेल
हमर क्षेत्रकेँ असहाय छोड़ि देलौं...!

•

सम्पर्क : दिल्ली
मो. : 9311661847

सागर

वेटलेस पाग

हमरा सभ एखन धरि अकुलायल रहलहुँ अछि
देखबा लेल अपना माथा पर एकगोट लौलीन
पाग
ठाढ़ होयबा लेल मिथिलाक बैनर लगाओल
मिथिलासँ दिल्ली धरिक कोनो मंच
बजबा लेल ओ बात, जे करैत काल
मोन पड़ैत अछि प्रवास
आ कि अपन सामर्थ्यक ओकाइत
जाहिसँ बेस बाजि लेलहुँ अछि
किछु आओर थोपड़ी सुनबाक वास्ते

हमरा सभक मुँह, मुँहक स्वर
बान्हि रखने अछि मंचहिकेँ माइक्रोफोन

जा धरि मंच परहक माइक
नहि लेल जायत छीनि
पागकेँ नहि फेक देल जाइ जुमा मंचहिसँ
हम बजैत रहब
पूजैत रहब इतिहासक गौरवकेँ
जा धरि मिथिला टेक नहि दैछ मूड़ी
थोपड़ी सुनैत रहब
जा धरि संस्कारक देह
नहि सन्हिया जाइ आधुनिकताक चूल्हामे

पागकेँ माथ पर उठओने
उघैत रहलहुँ एहि मंचसँ ओहि मंच
टँगैत रहलहुँ विदेसक देबाल पर पेंटिंग
अखियास नहि रहल अछि
कहिया टाँगि अयलहुँ विरोधक स्वर
मीठसँ आओर मीठ होयबाक बाटमे
उजड़ि गेल शरीर आ
आधुनिकताक लपेटमे
ठाम परहक संस्कार

पाग नहि छोड़ल हमर माथा
आ मूड़ी टुटलाक बादो नहि धएल जमीन
किछु माथक पाग
किछु मंचक
मंचहि भरिक चालि देखि लगैत अछि
ओजनगर तँ नहिये टा भ' सकैछ ओहिठामक
पाग!

•

सम्पर्क : पटना
मो.- 8678008100

मैथिल प्रशान्त

हमर हिस्साक भोर

किछु सन्हिया गेल अछि हमरा भितरीमे
अंगोर सन आ कि सुल्फा सन, जानि नहि
अदंके सुआदि नहि पाबि रहल छी
की अछि ई
कोनो मिठगर आ कि कोनो अक्कत तीत
किछु अम्मत सन छैक ई, अछि नोनछराइन
सन
जकरा अनभुआरमे घोंटि गेल छी हम
आ आब माहुर बनि खौलि रहल अछि हमरा
पोर-पोरमे

विचित्र दृश्य सभ चित्रित भ' रहल अछि
हमर आँजर-पाँजरमे
जेना सहस्रो हमरे माथक नापक, फाँसीक
फन्ना
लटकि रहल अछि अकासमे
पराहि लागल अछि हमरा
आ पछोर धयने अछि मृत्यु-दंड
बीतभरि जग्गह नहि भेटि रहल अछि
अपन प्राण बचयबा लेल

एकहकटा गुलाबक फूल
बदलि रहल अछि अपन रूप-रंग
लाल उतरि रहल छैक
कारी चढ़ि रहलैए
भयाओन सन रूप अख्तियार क' लेलक
अछि गुलाब
ओकर काँट डेराओन
कोनो नरभक्षीक दाँत सन भ' गेल छैक
आ हमरा भम्होरि लेबाक लेल बिर्त्त अछि

स्वस्ति वाचन आ दुर्वाक्षतक मंत्र
जेना तिलांजलिक मंत्र बनि गेल अछि
जड़-चेतन, प्रकृति-अप्रकृति
जेना हमरे सोधि लेबाक लेल
गुरिया-मिन्टी क' रहल अछि
एकटा षड्यंत्रक आभास विचलित क' रहल अछि
हमर मानसिक संतुलन
अपवर्तन आ परावर्तन कोनक बीच ठाढ़
क्रांतिकोणिय अवस्थामे अछि

निरासेटा नहि
एकटा आदंकक छहरि सेहो घेरि नेने अछि
सभ अपन
यमराज सन लागि रहल अछि
सभ आन
यमदूत बनल अछि

हम स्वयंकेँ बिट्ठू कटैत छी
की ई कोनो अधलाह स्वप्न अछि
की यथार्थहिमे हम भोगि रहल छी असाध्य
वेदना
हाथ नहि सगबगा रहल अछि!
जेना खिरकी दोगसँ
सूर्यक किरिन हमर कपारकेँ सेक रहल
छथि
आ बाँचल अछि...
हमर हिस्साक भोर।

•

सम्पर्क : दुर्गौली, बेनीपट्टी, 7909060408

मनोज कामत

भाषाक प्रति...

मैथिली हम नहि बजबै
त' के बजतैक आन
पथिया, मौनी, कनसुपती नहि कहबै
नहि कहबै कोसिया, कोनिया आ मटकुरी
त' के कहतैक आन

अपन बेटाकेँ बौआ नहि कहबै
हजमाकेँ नौआ नहि कहबै
आ रुपैयाकेँ ढौआ नहि कहबै
त' के कहतैक आन

मिथिलामे रहनिहार
सभ छथि मैथिल आ
मैथिल नहि बजतैक मैथिली
त' के बजतैक आन!

भाइ तहन
किए बजैत छी अपना सभ
पनपियाइके जलपान आ
पाहुनकेँ मेहमान।

•

सम्पर्क : ब्रह्मपुरा, बेनीपट्टी
मो.- 9931454842

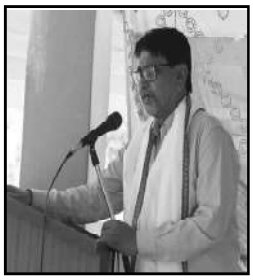

रोशन जनकपुरी

एहि बेरुक बरखामे

थाकल
उदास पल
ठहरि गेल
ओ कविता कहलकै
कतरल जा रहल
श्रमके बावजूद
पसीनामे भीजल
आश सबके
समय
पाँखि फड़फड़यलकै
आ उड़ि गेलै
दोसर अकास दिस

एहि बेरुक
बरखामे
आश सब
स्वप्न सब
जड़ाओल नइँ गेल
गाओल गेल
चारू दिस पानि रहै ने
मुदा तेरहा त' होयबे करतै
पण्डित आ चण्डाल
दुनूक हिस्सा सुरक्षित अछि
हजारो बरस बूढ़
गिद्ध
अपन भयानक विशाल पाँखि तरमे
एखनो झँपनहि अछि
संसारकेँ
नव-नव भेषमे
मुकुट आ रामरामी पहिरने
ई गिद्ध
ओइ गिद्धसँ
खतरनाक अछि
ओ मरलकेँ
नोचैत अछि
आ ई जीवितेकेँ
आकाश एखनो करियायले अछि
आ एखन आओर
आश आ स्वप्नकेँ
गाड़ल जयबाक सम्भावना अछिए
कोना गाड़ल जाय
कि जाड़ल जाय
की फरक पड़ै छै
गिद्ध त' नोचबे करत
की विचार?

समय
उतरैत अछि
जमीन पर
फेर सुन चाहैत अछि कविता
कविता की अछि
गिद्धगान
की गिद्धक अवसान
समयकेँ
कोन गीत सुनायल जाय
ओना लोक
गनगनायल सन सेहो बुझाइत अछि!

•

सम्पर्क : जनकपुर नेपाल
मो. - +977 9744001235

रोमिशा

प्रेम करबाक लेल

ई जरूरी नहि अछि
जे हम आ अहाँ
दी एक दोसरकेँ
लाल टुह-टुह गुलाब
आ ओकर सुगन्धकेँ
अपना भीतर जोगाओल राखबाक लेल
अगल बगल भभकैत
सब छल-छद्मसँ आँखि नाक मूनि
सिर्फ अपन अन्तरमे भरी गुलाबक साँस

प्रेम लेल जरूरी अछि
सिनुरिया भोरक इजोतमे
सभक आँगनमे पजरि जाए चूल्हा
सिद्ध भ' सकए भोजन
केकरो पेटमे अहुरिया नहि काटए भूख
कोनो अन्हार नहि बचल रहय नोर लेल
केकरो पोर पोरमे कुंठाक भयाओन
गुम्मी नहि होअए
भगवतीक सीरा पर
छागक निर्निमेष आँखिमे प्रश्न नहि होअए
ठामे बहैत शोणितक धारमे
हत्या आरोप आ अपराध बोध नहि होअए

प्रेममे फुलायल रहय तोरीक खेत
मंजरायल रहय आम आ लिच्ची
सितलहरीक बाद उगल रहय
बसंतक हिलसगर रौद

पसरल रहय भरि आँगन सोन सन गहूँम
देहरी पर बैसल बाबा बाबी लग खेलय नेना सब
साँझक ओटमे झट द' मुस्किया दिय' चान
पसरि जाय भरि आँगन इजोरिया
आ एकरा लेल जरूरी अछि बचल रहब
कनी माटि, कनी पानि कनिक हवा
आ कनिकटा प्रेम मनुष्यतासँ
तखन जीत जायत
बजारक टुहटुह लाल गुलाबमे
देसी तोड़ीक फूल

•

सम्पर्क : न्यू दिल्ली-17
मो. : 9810882109

गजल

सदरे आलम 'गौहर'

जीबक लेल एहि दुनियाँमे संघर्ष करै छी, लड़ै छी
जिनगी एकटा युद्ध छै सभ दिन युद्ध करै छी

जैह देखू सैह बाजू हम त' यैह पढ़ने छी
रातिक दिन कह' लेल हमरा कोना कहै छी

चमचागिरी, चाटुकारिता नहि कएलहुँ हम
ताहि दुआरे फूसक घरमे हम रहै छी

मिथिला देसक बासी छी हम मैथिली बाजब
अपन ई पहचान तएँ कहिओ हम बिसरै छी

महादेव उगना बनि जनिका घरमे अयलाह
हम मैथिल ओहि विद्यापतिकेँ नहि बिसरै छी

हँसयमे सभ हँसत कातमे नहि कानत
कानिकेँ देखू तखन कहब जे ठीक कहै छी

सभ दिन एके रंग तेँ होइ छै मोन राखू ई
कहिओ नाह पर कही गाड़ी पर नाह देखै छी

•

गुंजनश्रीक दू गोट गजल

1

छथि सीबि देने प्राण ओ, सम्बन्ध बन्धक तागसँ
दमकैत घोरने आँखिमे, बाजल करू अनुरागसँ

छल जे बेगरता मोनकेँ, कए देल सबटा होम से
सम्मुख उदित देखि चानकेँ, गमकैत फूल परागसँ

मधुकलश छुबिते हाथसँ, छिटकल इजोरिया गातसँ
गमगम करय अंगना हमर, बिहुँसैत बसंतक रागसँ

खन दिनक धीपल सूर्य संग, खन चान संग घूमी गगन
आकाश थम्हने आँखिमे, पूरब सेहन्ता फागसँ

•

2

बाजि ली जे मोन हो से हम कहू मानब कोना
मुइल अछि लोके एतय त' रण कहू ठानब कोना

काल्हिखन बरखल सुपहाने साहेबक सौजन्यसँ जे
ताहि घोंकल पानिसँ पीबा लए जल छानब कोना

मूड़ी छथि जे छोपि देने अपनेसँ अपना जजातक
ओहि बिलहल ठोरपर भाषा अपन आनब कोना

खन-खनन-खन खूब भेलै ओहि मंदिरक गर्भगृहमे
छुच्छ अछि खोइंछे हमर त' कहू अहीं मानब कोना

आइ बूझी, काल्हि बूझी, बात त' बुझबै जरूरे
मुदा ताधरि हम भविष्यक बाट ई तानब कोना।

•

सम्पर्क : हैदराबाद
मो. : 9121007933

मेनका मल्लिक

दीप गढ़ैत चन्ना कुम्हैन

थम्हैत नहि छैक कखनो
पाबनि आ लगन
अपना समय पर होइते छैक उत्सव

दूर-दूरसँ आनैत अछि माटि
राखैत अछि आँगनमे
सानैत अछि माटि
राखैत अछि चन्ना कुम्हैन
पुरहर, पातिल, घैल, हाथी
कोसिया, कुरवार, सरबा, ढकना
दौड़त अछि, रंगैत अछि
पहुँचबैत अछि घरे-घर

कतबो महगी होउक
सस्ते होइत छैक माटिक बासन
सोचैत अछि चन्ना कुम्हैन

चाक पर
माटिक दीप गढ़ैत चन्ना कुम्हैन
सोचैत अछि
एहिबेर दियाबातीमे
कहति लोक सभकेँ
बलू मंगनिये ल' लिअ'
मुदा, जराउ धरि माटिएक दीप

उत्साहित अछि चन्ना कुम्हैन
चलि रहल छैक ओकर चाक
हाथ गढ़ि रहल छैक दीप
दीप गढ़ि रहल अछि चन्ना कुम्हैन

एखनहुँ
माटिकेँ धयने अछि चन्ना कुम्हैन।

•

सम्पर्क : बेगूसराय, मो. 9430479745

दिलीप कुमार झा

हमरा गामक लोक

हमरा गामक लोक
सेवा धर्ममे निष्णात
अनका लेल प्रिय
अपना लेल कराह
दोसराक लेल सुभग
अपनाक लेल अबाह
अपन पनिआयल खेतकेँ छोड़ि
दोसराक जोतैत आँतर पर आँतर
अनठिया लए सुयोग्य, सपाचा
अपना गाम-समाज लए बाँतर
गामक सिंह बाहर कातर
तीन तिरहुतिया तेरह पाक रन्हबाक समस्त
आनक छिछा उतारबामे मस्त
एकबेरमे दू रंगक चालि चलबामे माहिर
गिरगिट जकाँ रंग बदलबामे जाबिर
जे काटि रहलए
परदेशमे अपन जिनगीक शेषदिन
गामक पुरनी पोखरि
कमला बागमतीक अछैत
मुम्बईक कोनो स्लम
अरब देशक कोनो शेखक गठुल्लामे
कएक दिनसँ बिनु नहेने
बारीक ओल-तिलकोर
रोहु माछक झोर छोड़ि
बिता रहलए अपन जीवन
मात्र दूइटे इच्छा शेष
अपना जातिक कोनो नेताकेँ
गद्दी पर बैसल देखि होइछ नेहाल
अपना पोता परपोताक नीक दिन अनबा
लेल अछि बेहाल
सभटा ज्ञानक पोथी-पतराकेँ
करिया कम्मल तर झाँपि
बौआ रहल अछि
हड़सन, डेन्यूब आ रेम्सक कछेरमे
जे गेल पछबरिया पर
ओ पुनि किए फोड़बाव' आओत अपन कपाड़
मोन पड़िये जाइत छैक
पितामहक ओ दिन
जे कोना एक घौर केशक लेल
अपने पितियौतसँ भेल रहनि मारि
कुरुक्षेत्र बनल रहय पुबरिया बाधे
निकलत रहय बिझेलहा
भाला, गरसा आ तरुआरि
भेल रहय मोकदमा
जाहिमे बिका गेलनि
पिताक हिस्सा तीनू बिगहा जमीन
पिता कोलकातामे कूलीक काज क' पढ़ौलनि
न्यूयार्क धरि पठौलनि
अभोगे चलि गेलाह पिता
बाँल छथि गाम
जे दृढ़ निश्चयी छथि
जे नहिये छोड़ब शेष दू घरारी
आ गोर दशेक गाछ आम
देव-पितर छुटिये जकाँ गेल अछि
तैयो साओन मास फूदनाबला राखी
आ आसिनमे गोसाओनिक आगूक जयन्ती
पठबैत छथि लिफाफमे सभ सात
पक्का घर बना देलियनि
बिजती पंखा लगा देलियनि
तैयो गामक धिया लोकनिक बिआहमे
अइपन-पुरहरसँ
नैना-जोगिन धरि पाड़ैत छथि
गर्वसँ मैया कहबै छथि
बेर-बेर चिट्ठीमे लिखै छथि
एकबेर पुनि आबि जाउ गाम
ई बुझैत छी जे
जाबन्तो वस्तु भेटत ओतय
किनसाइत हमरा सनक कियो भायो मेटि जाय
मुदा कतहुँ नहि भेटत
अपना माटिक सुगन्ध।

•

सम्पर्क : मधुबनी, मो.- 6207627509

बालमुकुंद

विदा कहबाक क्रममे

एक दिन सभ छूटि जात
ईर्ष्या, प्रेम, घृणा, उदासी,

विदा कहबाक क्रममे
कतबा किछु अछि जे रहि जाइछ शेष
हमरा-अहाँक हृदयमे.

रहरहाँ लोक विदा लैत अछि
आपस पुनः भेटबाक आश्वासनक संग

एहि तथ्यसँ दूर की जीवन
मकड़जालक एकगोट तन्तुक ताग
कौखन भखरि जाइ कोन ठेकान.

पीपरक गाछसँ झरैत पानि संग स्मृति सम्हारू
एक दिन विदा कहबाक समय आओत।

•

सम्पर्क : पटना
मो. : 9934666988

सपनामे अनुजा

डॉ. नारायण जी

विश्व साहित्यक गम्भीर अध्येता। गामक परिवेशकेँ वैश्विक दृष्टिकोणसँ चित्रित करयवला महत्वपूर्ण कवि। डॉ. नारायण जीक 'हम घर घुरि रहल छी', *'अँगना एकटा आग्रह थिक', 'धरती पर देखू'* आ *'जल धरतीक अनुरागमे बसैत अछि'* (कविता-संग्रह) एवं *'चित्र'* कथा-संग्रह बेस चर्चित छनि। चेतना समिति पटनासँ डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार आ कीर्त्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान प्राप्त छनि। अनेक भारतीय भाषामे हिनक रचना अनुदित-प्रकाशित छनि।

सम्पर्क : 7011360343

अनुजा स्कूलसँ आयलि। स्कूल बैग टेबुल पर रखलक आ जुत्ता खोलि सोफा पर बैसले रहि गेलि।

आन दिन स्कूलसँ अयला पर ड्राइंग रूममे पैसितहिं 'मम्मी-मम्मी'क अनघोल करैत छलि। मुदा आइ किछु नहि बाजि चुपचाप सोफा पर बैसले रहि गेल।

मम्मी अनुजासँ ओकर उदास देखयबाक कारण जानय चाहलथि। मुदा, किछु कहबासँ अनुजा निट्ठाहे नठि गेलि।

वास्तवमे अनुजा आइ बड़ उदास रहय। तकर कारण रहैक जे क्लासमे आइ मैडम ओकर बामा कान ततेक जोरसँ तिड़ने रहथिन जे एखन धरि दुखाइत छैक।

अनुजा आइ क्लासमे ककरोसँ झगड़ा नहि कएने रहय। ओ हल्ला सेहो नहि कएने रहय जाहिसँ मैडमकेँ पढ़ाबयमे कोनो बाधा भेल रहितनि। भेल छल एना जे 'फोर्टीन'क स्टैन्जा 'वनजा'सँ 'टेनजा' धरि अनुजा जे सुनओने रहनि, से सही नहि रहैक।

मैडमक कहब रहैक जे एना जे अनुजा पढ़लक अछि, से त' 'फोर्टी' जकाँ सुनि पड़ैत छैक। ओकर उच्चारण ठीक नहि छैक। एहिसँ सुननिहार जुलुमे अर्थ ने बूझत। आ तेँ अनुजाक बाम कान मैडम जोरसँ ऐंठि देने रहथिन।

स्कूलसँ अयबाकाल भरि बाट अनुजा सोचैत आयलि रहय जे गाममे बाबा जेना खाँत सभ सिखओने छथिन, स्कूलमे तहिना मैडम किएक ने पढ़बैत छथिन?

मुदा अनुजा ककरोसँ किछु बाजलि नहि रहय।

ड्राइंग रूममे मम्मी आयलि रहथिन। ओ अनुजाक लेल हलुआ बनओने आयलि रहथिन। अनुजा कटोरीमे आनल हलुआ चम्मचसँ खयने रहय, आ पानि पीबि पार्कमे खेलयबा लेल चलि गेलि रहय।

अनुजाकेँ खेलयबा लेल आइ पार्कमे कोनो संगी नहि भेटल रहैक। किएक ने एतय आइ क्यो खेलयबा लेल अयलैक? सोचि अनुजा आर उदास भ' गेलि रहय। भरिसक स्कूलमे मैडमसँ ओकरा पिटाइ पड़बाक बात सभ बूझि गेल रहैक। आ सभ की ओकरा पर हँसैत हेतैक एखन कोनो आन ठाम? अनुजा लेल सेहो एखनुक उदासीक एकटा कारण बनि गेल रहैक।

उदास अनुजा पार्कमे कनेकाल एम्हर-ओम्हर बौआअलि। एकसरि जे रहय आइ।

एकसरि बुलैत पार्कमे अनुजा गुलमोहरक गाछ दिस हियासलक।

गुलमोहरक गाछ पार्कक ओहि कोन पर रहैक, जतय कम लोकसभ जाइत-अबैत छलैक। ओम्हर फूलक गाछसभ त' छलैक, मुदा ओ सभ झँखुड़ाह छलैक। आ ओही झाँखुड़सभक बीचमे ठाढ़ छलैक गुलमोहर। खूब फुलायल। देखबामे अद्‌भुत सुन्दर लगैत छलैक। दूरेसँ देखाइत छलैक। से, अनुजा पार्कक एक कोनमे ठाढ़, फुलायल, गुलमोहरक गाछधरि, झँखुड़ाह फूलक गाछसभकेँ टपैत गेलि रहय।

गुलमोरहक गाछ जतय छलैक, ओकर चौबगली थोड़ेक दूर धरि चिक्कन जगह छलैक। ओतय झाँखुड़ नहि छलैक। ओतय गुलमोहरक जड़िक चारूभर बहैत बसात गुलमोहर फूलक एकटा घेर बना रखने छलैक।

अनुजाकेँ से देखबामे नीक लागल छलैक। ओ फूलसँ बनल ठाम-ठाम उजड़ल घेरकेँ सरिआबय लागलि रहय। ओहि लेल अनुजाकेँ किछु आर बेसी फूलक खगौट बुझायल रहैक। से ओ फूल हँसोथि अनबा

लेल गुलमोहर गाछक जड़ि धरि गेलि, ओतय बहुत रास फूल खसल छलैक।

अनुजा देखलक जे गाछक जड़िसँ सटि फूलक ढेरी छैक। हँसोथि अनबाक कोन काज छिड़िआएल फूलकेँ, जखन फूलक ढेरिये लागल छैक एकेठाम।

से अनुजा फूलक ढेरीसँ भरि-भरि आँजुर फूल उजड़ल घेर सरिआबय लेल आनय लागलि। मुदा, ई जानि चकित भ' गेलि जे फूलक ढेरीसँ जतेक फूलक ढेरीसँ जतेक फूल अनैत अछि, ओतेक त'र धरि गुलमोहरक अगबे फूले फूल भरल छैक।

अनुजा फूल ऊपर अनैत गेलि। अनुजा जतेक फूल ऊपर आनय, ओतेक गहीँर धरि अगबे फूले फूल भेटय।

अनुजा फूल ऊपर करैत गेलि।

अनुजा फूलमे धँसैत गेलि।

अनुजा धरतीमे समाइत गेलि।

अनुजा धरतीक त'र चलि गेलि। अनुजा ओहि लोकमे चलि गेलि जे ओकर गाम-नगरसँ नव छलैक, मुदा ओकरा लेखेँ अतत्तह अनभुआर छलैक। ओतय सूर्य नहि उगल छलैक। मुदा सूर्यक मद्धिम प्रकाश सभठाम पसरल छलैक। ओतय खूब चाकर-चौरस पीचरोड छलैक। आ पीचरोड दुनू कात अनेक गुलमोहरक मोट-मोट, आकाश ठेकल फुलायल गाछसभ छलैक।

पीचरोडक दुनू कात जे ऊँच-ऊँच मकानसभ छलैक, से सभ पीचरोडसँ हटिक' छलैक आ तकरा सभक दुआरि पीचरोड दिस नहि फुजैत छलैक। पीचरोड दिस मकानसभक पछुआति छलैक।

अनुजा सभकथूकेँ निहारैत पीचरोडक कातमे ठाढ़ि छलि, चारू दिस चकित आँखिएँ तकैत। तखनहि ओकरे एतेकटा एकटा लड़की आयलि रहैक। आ ओ अनुजाकेँ चकित भ' निहारने रहैक। आ ई जानि ओ एहि लोक-समाजक नहि थिक, ओकर हाथ पकड़ि प्रेमसँ घर लए गेलि रहैक।

अनुजा देखने रहय जे एहि लड़कीक घर सन ओकर अपन घर सुन्दर आ सजाओल नहि छैक। मुदा, गाछ-बिरीछ, फूल आ गाछमे लुबुधल आम ओकर अपने देश-कोस आ लोक सन छैक।

अनुजाकेँ ओहि लड़की आ ओकर माएक अपनामे गप करैत कोनो बात नहि बूझि सकल रहय। मुदा ओ सभ जेना मुस्कियाइत छलैक से ओहने जेना ओकर मम्मी-पापा मुस्कियाइत छथिन।

शीतल पावर घरक खिड़कीसँ अबैत रहैक।

सूर्च नहि उगल रहैक, राति नहि भेल छलैक। ओ जनैत नहि छलि जे एतय साँझो पड़ैत छैक आ कि नहि?

कनेकालक बाद ओहि लड़कीक घरक कातमे पीचरोडपर एकटा मोटरगाड़ी आबि ठाढ़ भेल रहैक। ओहि लड़कीक मम्मी खिड़कीसँ किछु बाजलि रहैक, से अनुजा सुनने टा रहय, बुझने किछु ने रहय। मुदा देखने रहय, जे से सुनि ओहि मोटरगाड़ीसँ एकटा मैडम उतरलि रहैक आ ओहि लड़कीक संग आँगुर पकड़ि ओकरो मोटरगाड़ीमे प्रसन्न भ' चढ़ा लेने रहैक।

मोटरगाड़ीमे पहिनहिसँ ओकरे उमेरक लड़का-लड़की सभ रहैक। ओ सभ सुन्दर युनीफार्ममे रहैक। अनुजाकेँ देखैत ओ सभ बड़ प्रसन्न भेल रहैक।

अनुजाकेँ बुझबामे आबि गेल रहैक जे सभ केओ स्कूल जा रहल अछि।

मोटरगाड़ी एकटा भव्य महलक पोर्टिकोमे ठाढ़ भेल रहैक जे स्कूल रहैक। ओतय सभक संग अनुजा उतरलि रहय।

अनुजा देखय जे स्कूलक सभक्यो ओकरा दिस चकित भ' तकैत छैक आ हँसि-हँसि किछु कहैत छैक।

अनुजा ओकरा सभक भाषा बुझैत नहि रहय। मुदा ओहो मुस्किया दैत रहय।

अनुजा ओहि लड़कीक संग क्लास गेलि जकरासँ पहिल भेंट भेल रहैक आ संगमे स्कूल आयलि रहय।

अनुजा देखने रहय, जे सभ अपन-अपन सीट पर जतय बैसि गेल रहय ओतयक एकटा बटन टिपलासँ सभक स्कूले बैग सन कोनो मशीन सोझाँमे खुलि गेल रहैक।

ब्लैकबोर्डक जगह पर देबाल पर बड़काटा टेलीविजन सन कोनो मशीन लागल रहैक। आ क्लास जखन आरम्भ भेल रहैक, तखन ओहिमे प्रकट भेलि मैडम जे किछु कहैक आ लड़का-लड़की सभ उत्तर दैत छलैक, से ओ नहि बुझैत छलि। मुदा ओ बुझने छलि जे जाहि लड़कीक संग ओ स्कूल आयलि अछि, ओ अपन मम्मी संग जेना घरमे बजैत छलि, ओहिना क्लासमे पढ़ाइ भ' रहल छैक।

अनुजा इहो जनने रहय जे एतय क्लास मे 'ए फोर एप्पल' क्यो जनितो नहि अछि। ओ बेर-बेर घुनघुनायलि रहय— 'ए फोर एप्पल'।

अनुजा बूझि गेल रहय जे एहिठाम स्कूलमे 'वन जा' आ 'टेन जा' सेहो नहि पढ़ाओल जाइत छैक जाहि लेल ओकर स्कूलमे मैडम ओकर कान तिड़ने रहथिन।

अनुजा ई जानि जे जेना लोक अपन घरमे गपशप करैत अछि तहिना एतय पढ़ाइ होइत छैक। ओ बेस पुलकित भेलि रहय।

अनुजा तखन अपन मुट्ठी तानि संकल्प लेने रहय जे आब ओ जहिना घरमे मम्मी-पापासँ गप करैत अछि, तहिना बाजि-भूकि स्कूलोमे पढ़त।

अनुजा एना पढ़बा लेल पहिने मम्मीकेँ कहत, तखन पापाकेँ कहत। स्कूलक मैडमकेँ त' अवश्य कहत।

अनुजा अपन संकल्पकेँ दोहरबैत अपन दुनू हाथक मूनल मुट्ठीक जोरसँ बसातमे भँजने रहय। आ कि तखनहि ओकर निम्न टूटि गेलैक।

खिड़की बाटेँ भोरुका सूर्यक किरिन अनुजाक देहपर पड़ैत छलैक।

अनुजा ओछाओन पर पड़ले विचारलक जे अपन ई सपनाक कथा सभकेँ सुनाओत। बाबाकेँ अवश्य सुनाओत।

अनुजासँ बाबा मुदा दूर छथिन। बाबा गाममे रहैत छथिन।बाबा बीमार छथिन। अनुजाका सपनाक ई कथा कान पाथि तखन के सूनत?

•

नारायण झा

माय गै माय

माय गै माय
हे गै माय
सुनही एकटा बात
रोपनी-तोपनी
कटनी-खोंटनी
करय नै एकर बात

बात-बातमे
संग-साथमे
सीखबै नबका पाठ
नीपा-पोती
लेबा-मुनी
अपने लगमे राख

इसकूल जेबै
ओतहि पढ़बै
चारि-दूनी आठ
झाड़ू-पोछा
बरतन-बासन
करबौ नै भानस-भात

लिखबै-पढ़बै
तखने बढ़बै
मिला हाथसँ हाथ
हमहूँ बनबै
आब नै मुरुख-चपाट!

•

सम्पर्क : रहुआ संग्राम,
9534530451

बाल गीत

अक्षय आनन्द सन्नी

ए फोर एप्पल, बी फोर बॉल
चुन्नी-मुन्नी इसकूल चल

सी फोर कैट, डी फोर डॉल
खायब-पीयब त' भेटत बल

ई फोर एग, एफ फोर फिश
जेठक आगू झुकाबू शीश

जी फोर गोट, एच फोर हेन
सदिखन बाँटू नेहक बएन

आइ फोर आइस, जे फोर जग
झलकए बौआ जहिना नग

के फोर काइट, एल फोर लाइन
बौआ आँखिमे राखी पानि

एम फोर मैन, एन फोर नेस्ट
खा-पीबि क' करू रेस्ट

ओ फोर ऑक्स, पी फोर पीजन
आबि गेलए पढ़ाइकेँ सीजन

क्यू फोर क्वीन, आर फोर रोज
खेलैत-कुदैत करू मौज

एस फोर सन, टी फोर टॉप
कीन देब हम लॉलीपॉप

यू फोर अम्ब्रेला, वी फोर वान
कौआ उड़ि गेल ल' क' कान

डब्ल्यू फोर वाच, एक्स फोर एक्स-रे
कनिया-पुतरा खेलए चल गे

वाइ फोर याक, जेड फोर जेबरा
बौआकेँ मामा ठीके लबड़ा।

•

सम्पर्क : शिवनगर, बेनीपट्टी
मो. : 9006460031

अमित मिश्र

मीठ कहू यौ बौआ सभ

अपन ठोरपर मुस्की सदिखन
दैत रहू यौ बौआ सभ
मोन मोहै लए सभक सदिखन
मीठ कहू यौ बौआ सभ

नदी बाट बनबै छै अपन
रोक-टोक केर ने छै डर
फूल सुगंधी पठा रहल छै
बिना फिकिरकेँ चारू भर
हवा बहैए जहिना सदिखन
अहूँ बहू यौ बौआ सभ
मोन मोहै लए...

ऊँच गाछ पर देखियौ चुट्टी
खसैत-पड़ैत चढ़लै एक दिन
बढ़िते रहल से आगू भेलै
पछुएलै जे पड़लै नीन
जीवन पथ पर कछुआ बनिक'
चलैत रहू यौ बौआ सभ
मोन मोहै लए...

कर्म थिकै भगवान जगतमे
कर्म करब से ध्यान धरू
मन टाँगल हो सदा लक्ष्य पर
एहने सन अभियान करू
मनुख महान बनै लए सुख संग
दुख सहू यौ बौआ सभ
मोन मोहै लए...

•

सम्पर्क : करियन, 9122105183

कहलनि समाजसेवी इन्द्र नारायण झा

—दीप नारायण विद्यार्थी

प्रत्येक मनुष्यक अपन अलग व्यक्तित्व आ विशेषता होइत अछि। प्रकृतिक ई नियम छैक जे एक गोट मनुखक गढ़नि दोसर मनुखसँ मेल नहि खाइत अछि। गढ़नि मात्र नहि हुनक स्वभाव, संस्कार आ हुनक प्रवृतिमे सेहो अन्तर होइत अछि आ इएह असमानता सृष्टिक सौन्दर्य अछि। प्रकृति सदिखन स्वयंकेँ नव रूपमे सजबैत अछि। प्रकृतिक एही सजेनाइकेँ परिवर्तन कहैत छैक आ हम एहि परिवर्तनकेँ ओहिना नहि देखि सकैत छी जेना दूटा गुलाबक फूलमे अन्तर नहि क' पबैत छी। बुझल-गमल चीजमे मात्र हम एहि अन्तरकेँ आसानीसँ देखि सकैत छी।

ई हमरा लोकनिक नजरिक दोख थिक जे हमर आँखि प्रकृतिक सूक्ष्म अन्तरकेँ नहि परेखि सकैत अछि। ओना मनुखक चरित्रकेँ परेखि सकब कनेक मोश्किल काज त' छैक मुदा, असम्भव नहि। कने मोश्किल मात्र एहि लेल अछि कि नित नव परिस्थिति सभक आघात-प्रतिघातसँ ओ बदलैत रहैत अछि। चेतन अछि ओ, परिवर्तन हिनक स्वभाव अछि।

जेना अनगढ़ पाथरमे एकटा सुन्दर मुरुत नुकाएल रहैत अछि जकरा शिल्पी मात्र देखि पबैत अछि। ओ शिल्पी ओहि पाथरकेँ छेबिक' एकटा सुन्दर मूर्तिमे बदलैत अछि। मूर्ति त' पहिनहिसँ ओहि पाथरमे रहैत छैक, शिल्पी त' मात्र ओहि फजिलाहा पाथरकेँ जाहिसँ मूर्ति झपाएल रहैत अछि छेबिक' एक कात क' दैत अछि।

आइ हमहुँ किछु एहने सन व्यक्तित्वक चर्च करब जे की हमरा सभक समाजक हितक लेल सदति समर्पित रहैत छथि। ओ व्यक्तित्त्व छथि श्री अजीत कुमार झा जे मूलतः बेलाहीक निबासी छथि। सम्प्रति मधुबनीमे रहैत छथि आ जीविकोपार्जन हेतु 'प्रोपर्टी डिलिंग'क काज करैत छथि। छथि मुदा ओ प्रोपर्टी डिलर कम आ समाजसेवी अधिक। सामाजिक सहृदयतासँ वर्ष 2018 क 31 दिसम्बर क' मधुबनीक एकटा मुहल्लाक नाम हिनकहि पिताजी श्री इन्द्र नारायण झाक नाम पर 'इन्द्र परिसर' राखल गेल। ई कॉलोनी लहेरियागंजक बुवना मन्दिरसँ दक्षिण, पश्चिम मुँहे जायवला पहिल गली, धारक पारमे अवस्थित अछि।

मुहल्लाक समग्र विकासक काज पर ओ नजरि रखैत छथि। ओ अपना दिससँ मुहल्लाक सौन्दर्यक लेल तीन कट्ठा भूमि देलनि अछि, जाहिमे सार्वजनिक पार्क, पुस्तकालय, विद्यालयक आदि व्यवस्थित करबाक विचार अछि।

एखन हम 'पंजाब नेशनल बैंक, मंगरौनी शाखाक प्रबन्धक श्री नितेश कुमार पासवान आ रौशन कुमार झाक संग इन्द्र नारायण बाबूक संग साक्षात्कारक लेल बेलाही हुनक आवास पर छी। श्री इन्द्र नारायण झा 'एरिगेशन विभाग'सँ अवकाश प्राप्त क' एखन अपन पैतृक गाम बेलाहीमे तीन सुपुत्र— श्री विमल चन्द्र झा, श्री पवन कुमार झा एवं श्री अजीत कुमार झाक संग झमटगर परिवारमे आनन्दमय जीवन व्यतीत क' रहल छथि। खैनी आ चाहक बहन्ने साँझ-भोर हिनका दलान पर भरि गामक बूढ़-पुरान लोकनिक बैसार होइत छनि। सभक विपत्तिमे सदिखन ठाढ़ रहनिहार इन्द्र नारायण बाबूकेँ गामक लोकसभ 'भगवानजी'क नामसँ सम्बोधित करैत छथि। आइ हमसभ हिनकासँ गप्प-सप्प करैत छी :

(सभसँ पहिने नितेश जी, रौशन जी आ हम प्रणाम निवेदित करैत छी।)

(प्रत्युत्तरमे इन्द्र नारायण बाबू बहुत आह्लादसँ आशीर्वाद दैत छथि।)

हम— ***अपनेक नाम पर हमरा सभक मुहल्लाक नाम 'इन्द्र परिसर' राखल गेल अछि से***

जनतब अछि अपनेकेँ? ...कहेन लागल?

इन्द्र नारायण बाबू— अपने सभक्यो मिलिक' ई काज कयलहुँ से जानकारी भेटल। बहुत नीक लागल। बुद्धिजीवीलोकनि सभ ओहि मोहल्लामे रहैत छथि। सभ एक पर एक नीक लोक छथि। हम दुःखहर महादेवसँ कामना करैत छी जे एहि मोहल्लाक नाम, यश संसार भरिमे पसरैक। मधुबनी कोनो काजे गेल रही त' जतय बोर्ड लागल अछि 'इन्द्र परिसर'क ओतय किछु काल ठाढ़ रहलहुँ। अपन नाम देखि आत्मीय खुशी भेल। सभ गोटेकेँ अनन्त आशीष।

हम— ***अपनेक जन्म, पढ़ाइ-लिखाइ कतय भेल? आ कोना स्वयंकेँ समाजसँ जोड़िक' रखने रहल छी?***

इन्द्र नारायण बाबू— हमर जन्म आ पढ़ाइ-लिखाइ बेलाहीयेमे भेल अछि। हमरा नेनपनेसँ समाज आ आध्यात्म दुनूसँ बेस जुड़ाव रहल अछि। नेनपनेमे अपन मात्रीक जे राजेग्राम भौड़मे अछि, मामा ओतयसँ शालीग्राम चोराक' ल' अयलियैक। माय संगे गाड़ी पर बैसि गाम आबि गेलहुँ। मामाकेँ कहने रहियनि जे अहाँ ओतय दूटा भगवान छथि, हम एकटा चोरा लेब।(शालीग्राम माँगिक' वा कीनिक' नहि लेल जाइत छैक) तहियासँ हम नित्तह 5100 माला जप-ध्यान कयलाक उपरान्ते अन्न-पानि ग्रहण करैत छी। गामक लोकसभ हमरा ताहि समयसँ नाम ल' क' नहि, भगवानजीक नामे सम्बोधित करैत छथि। हम 1960-61 मे सभसँ पहिने नेतरहाट विद्यालयसँ अपन चाकरीक शुरुआत कयलहुँ। तीन साल ओतय रहलहुँ। एक बेर छुट्टी ल' क' जे अयलियैक से दोबारा नहि जा सकलहुँ नेतरहाट। पूरा जंगल एरियामे छलैक नेतरहाट विद्यालय। फेर सिंचाइ विभागमे चाकरी प्रारम्भ कयलहुँ। पहिल पोस्टिंग बैजनाथधाममे भेल। ओतय चाकरीक संगे-संग बाबाक पूजा करबाक बेसी अवसर भेटल। ओतयके बाद हमर बदली मुंगेर भ' गेल। तीन साल मुंगेरमे रहलहुँ आ रोज गंगास्नान करबाक सौभाग्य भेटल। फेर ओतयसँ राँची आबि गेलहुँ। किछु दिनक बाद राँचीसँ पैरवी करा हम फेर बैजनाथधाम आबि गेलहुँ। पुनः बाबाक सानिध्यमे। बहुत दिनक बाद हमर बदली दरभंगा भेल आ दरभंगासँ किछु दिनक बाद हमरा फेर टाटा भेज देल गेल। राधानन्दन झा आ जगन्नाथ मिश्र हमर पैरवी कयलनि आ हमरा टाटा नहि द' क' झंझारपुर बदली क' देल गेल। झंझारपुरसँ पुनः दरभंगा आ दरभंगासँ जयनगर। जयनगरमे आठ साल चाकरी कयलाक बाद हम मधुबनी आबि गेलहुँ। मधुबनीमे हम बीस साल चाकरी

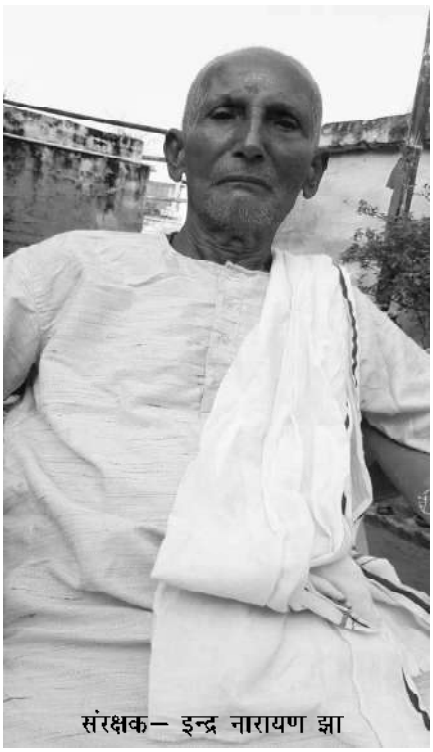

संरक्षक— इन्द्र नारायण झा

कयलाक बाद एतहिसँ 31 दिसम्बर 2001 क' अवकाश प्राप्त कयलहुँ। समाजसँ जुड़ाव जेना की कहलहुँ नेनपनहिसँ छल, मुदा मधुबनी अयलाक बाद ओ गाढ़ होइत गेल आ सामाजिक काज दिस बेसी झुकाव होबय लागल।

हम— ***अजीत बाबू अपनेक बालक छथि आ ओ सदिखन समाजसेवामे लागल रहैत छथि कखनो मन्दिर बनबेनाइ आकि किनको बेटीक बिआहमे मदति केनाइ आदि सभ करैत रहैत छथि त' एकटा समाजसेवी पर समाजसेवाक प्रभाव कोन तरहेँ देखल जाइत छैक समाजमे?***

इन्द्र नारायण बाबू— मनुख समाजमे रहैत अछि। ओ अपन समाजेसँ सभ किछु सिखैत अछि समाजेमे काज कयनाइ शुरू करैत अछि गलती वा सही सबसँ पहिने अपने समाजमे करैत अछि जखन ओहि समाजसँ सहयोग आ सीख प्राप्त होइत छैक तखन ओ अपना पएर पर आगू बढ़ैत अछि, अपन आजीविका उपार्जित करैत अछि। समाज ओकर जीवन आ संपत्तिकेँ संरक्षण दैत अछि। एहि दुआरे सभकेँ अपन क्षमताक अनुसार समाजक सेवा करबाक चाही।

हम ई सुनि बहुत आह्लादित होइत छी जे अजीत हमर छोट बालक, लोकक सेवा क' रहल छथि। हम एतय मदति नहि कहब, कारण मनुख-मनुखकेँ की मदति करतैक! मदति त' महादेव करैत छथि। तेँ कहब जे समाजमे कतहु मन्दिर बनबैत छथि आकि किनको बेटीक बिआहमे अपन योगदान दैत छथि, आर्थिक वा शारीरिक वा किनको घर बनाबयमे ठाढ़ रहैत छथि, से अजीतकेँ करबाको चाहियनि। ओ तीन भाइमे सभसँ छोट छथि आ अपन जीवन बहुत संघर्षसँ व्यतीत कयने छथि। अपन जीवनक संघर्ष नहि बिसरेबाक चाही, से ओ मोन रखने छथि। सभक संग, सभक सेवामे मनसँ ठाढ़ रहैत छथि से सुनि मोन गहरित होइत अछि। ईश्वर हमरा एहन पुत्र रत्न अगिलो जन्ममे देथि।

रहलैक बात समाजसेवाक प्रभाव समाजसेवीक परिवार पर कोन रूपेँ पड़ैत छैक? त' हम कहय चाहब जे निःस्वार्थ भावसँ कयल गेल समाजसेवा सदिखन आत्मसंतोष प्रदान करैत छैक। समाजमे सभ वर्गक लोक सभ हमरा आदर आ सम्मान

दैत छथि। समाजक संगहि संग अध्यात्मसँ सेहो हमर लगाव रहल अछि। नोकरीक दरम्यान छओ साल बैजनाथधाममे नित बाबाक शरणमे बितेलहुँ। एतेकटा जीवनमे किनकोसँ कहियो मुहा-ठुट्ठी नहि भेल। तेँ समाजसेवाक प्रभाव त' पड़ैत छैक।

हम— ***समाज सेवाक क्षेत्र कतय अछि ? कोन-कोन तरहेँ समाजसेवा कएल जा सकैत अछि? एहिसँ समाजमे कोन-कोन परिवर्तन, कोन तरहेँ आनल जा सकैत अछि?***

इन्द्र नारायण बाबू— समाजसेवाक क्षेत्र बड़ व्यापक अछि। लोक अपन मोनक शान्तिक लेल समाजसेवा करैत अछि। गरीब, जिनका जरूरति हो, अपंग आ विकलांग सभक मदति कयल जा सकैत अछि। ई समाजसेवा अछि। हमसभ जाहि बच्चाकेँ पढ़यमे किताप-कॉपीक दिक्कत होइत छैक ओहेन बच्चाकेँ किताब-कॉपी बाँटि सकैत छी। ओकरा पढ़बाक लेल सहयोग आ उत्साहित क' सकैत छी। हमरा सभ ई जानि रहल छी जे शिक्षा कोनो व्यक्तिक जीवनमे चमक लाबि सकैत अछि।

ई सभ समाजिक सेवा अछि। हमरा सभकेँ ओ काज कखनो नहि करबाक चाही जे हमरा पड़ोसीकेँ नोकसान आ दुख पहुँचाबै। इहो ध्यान रहक चाही जे हमर कोनो काजसँ समाजकेँ नोकसान नहि होइक। कोनो भी सार्वजनिक जगह, जेना— सड़क, पोखरि, धार, विद्यालय, मन्दिर आदिकेँ (गंदा) निंघेस नहि करबाक चाही। कोनो बिमारकेँ अस्पताल पहुँचेबाक चाही। मनुष्य मूल रूपसँ एक सामाजिक समुदायक सदस्य अछि। ओकरा खाली अपने सम्बन्धमे नहि पूरा समाज कल्याण आ विकासकेँ सम्बन्धक चिंता होयबाक चाही। वास्तवमे 'जन-सेवा' जनार्दन सेवा अछि।

कोनो भूखलकेँ भरि पेट खुआक' देखियौक, किनको उधार देहकेँ झाँपिक' देखियौक। एहि तरहे हमरा लोकनि समाजमे बहुत रास परिवर्तन आनि सकैत छी, कतेक आत्मसंतोषक अनुभूति होइत छैक।

हम— ***समाजमे एखन केहन तरहक बदलावक खगता छैक? बहुत कम शब्दमे कहय चाही तहन!***

इन्द्र नारायण बाबू— एखन हमरा लोकनिक समाजमे जाहि बदलावक सभसँ बेसी खगता अछि ओ अछि मनमे सुरक्षाक भाव अयनाइ, समाजक सभ वर्ग सभ उम्रक लोक स्वयंकेँ सुरक्षित अनुभव करैक। जकर शुरुआत घरेसँ होइत अछि। एना किएक ने होइत छैक कि अहाँ अपना घरमे अपन छोट बेटीकेँ एसगरे रह' दैत छियैक। वजह अछि असुरक्षा।

जाहि दिन हमसभ एना करय लागब ओहिदिन बुझल जायत जे साँचमे समाज बदलि रहल अछि। तेँ समाजकेँ बदलबाक लेल मानसिकता बदलब आवश्यक! मानसिकता बदलत तखने बेहतर समाजक कल्पना कयल जा सकैत अछि।

अजीत कुमार झा अपन बन्धु-बान्धवक संग

हम— ***समाजसेवाक क्षेत्रमे सरकारसँ अपनेक की अपेक्षा अछि?***

इन्द्र नारायण बाबू— ओना सभ क्षेत्रमे लगातार काज करबाक जरूरति अछि, मुदा समाजकेँ बदलबाक लेल शुरुआत किसानसँ करय पड़तैक। किसान, जिनका बदौलत हमरा अहाँकेँ भोजन उपलब्ध होइत अछि। जँ किसान अन्न उपजौनाइ बन्न क' दैक हमरा सभक हालति कि हएत से सोचि सकैत छी। मुदा सरकार कि कोनो अर्धसरकारी संगठन कतेक आगू अबैत अछि किसान सभक मदतिक लेल अथवा किसान पर पूँजी लगाबयकेँ लेल। साइत बहुत कम! एनामे खाली कहबाक लेल नहि, परिवर्तनक लेल काज करबाक चाही।

हम— अपने अध्यात्मक बेसी लगीच रहलहुँ अछि तेँ एगो प्रश्न मात्र, मनुखक चेतनाक सम्बन्धमे की कहय चाहैत छी!

इन्द्र नारायण बाबू— चेतनाक विषय मूलतः भारतीय वेद, दर्शन शास्त्र आदिमे बताओल गेल। आध्यात्मिकतासँ जुड़ल अछि तेँ चेतनाकेँ एहि वैदिक धार्मिक आ सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे बुझल जा सकैत अछि। चेतनाकेँ बुझबाक लेल हजारो सालसँ जीवन्त संस्कृतिकेँ सेहो बूझब आवश्यक अछि। केवल पाश्चात्य विचारधारासँ चेतनाकेँ समझेनाइ सम्भव नहि।

एकरा आध्यात्म दिस नहि ल' जाक' हम एहि तरहेँ कहय चाहब, चेतना मनुखक ओ विशेषता अछि जे ओकरा जीबैत राखैत अछि। सभ अपन वंशानुक्रमकेँ स्वयंमे प्रस्तुत करैत अछि। ओ विशेष प्रकारक संस्कार पैतृक सम्पत्तिक रूपमे प्राप्त करैत अछि। एकरा अलावे ओ दोसराकेँ सेहो स्वयं द्वारा निरुपित करैत अछि।

जखन एक बेर मनुखक चेतना विकसित भ' जाइत छैक, तखन ओकर प्रकृतिक स्वतंत्रता नहि रहि जाइत छैक। ओना एहु अवस्थामे ओ बहुत रास प्रेरणा सभ आ भीतरक प्रवृति सभसँ प्रेरित होइत छैक। मुदा ओ स्वतंत्रतासँ प्रकाशित नहि क' सकैत अछि आ ओ स्वयं दबा दैत अछि। जाहिसँ कि समाजक आन कोनो लोकक इच्छा आ आवश्यकतामे बाधक नहि बनैक, ओ ओकरा एहि प्रकारेँ कृत्रिम बनबैत अछि जाहिसँ ओकर प्रकाशन समाजविरोधी नहि हो।

•